रेमन सेंडर

सात इनक़लाबी इतवार : : भाग—२

हंस पुस्तक

'हंस-पुस्तक' के अंतर्गत नवीं किताब

रेमन सेंडर की अमर कृति

"Seven Red Sundays" का हिन्दी रूपान्तर

सात इनक़लाबी इतवार

भाग तीसरा

अनुवादक : नारायणस्वरूप माथुर

—संपादक—

श्रीपतराय

बनारस

सरस्वती प्रेस

स्पेन का प्राकृतिक नक़शा

इस देश के सबसे ऊँचे पहाड़ पिरेनीज़ पर्वत एक शृङ्खला में स्थित हैं जो कैटेलोनिया तक चली गई है। दो या तीन अन्य उन्नत भूमियाँ भी हैं। एक पठार कैस्टाइल में है, दूसरा वैस्कोनिया की ओर है, किंतु पिरेनीज़ के पश्चात् सबसे ऊँची भूमि अलमेरिया के समीप सिरानिवाडा की है। स्पेन का यह नक़शा भी कितना निर्जीव तथा शुष्क प्रतीत होता है। न इसमें वृक्ष दिखाई देते हैं न रेलवे लाइन और न मार्गप्रदर्शक खंभे ही, न इसमें कहीं आदमियों का पता है और न कहीं पत्थरों पर लिखे हुए शहरों के नाम ही हैं जिससे यह मालूम हो सके कि कौन-सा शहर कहाँ है! चूने की पर्वत श्रेणियों, रेतीले मैदानों और बंद पानी की हरी-हरी नदियों ने स्पेन को कैसा बेरौनक़ और बेहूदा बना दिया है।

गैलीशिया की छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हरियाली से वञ्चित हैं। वह बरसाती पानी से भरे हुए समुद्र के समीप स्थित है। उसकी झीलों में नरकुल नहीं है। इन्हीं कारणों से यहाँ प्रातःकाल बिलकुल मुर्दा और बे-रौनक़ मालूम होता है, इस समय सामर कामरेड मॉन्टेज़ियॉन की बात सोच रहा है जो इस पहाड़ी इलाक़े में मांडलिक संस्था के सिपाहियों का निर्देशक है। मिनो में ताज़े पानी का एक छोटा-सा स्रोत है। एक काग़ज़ पर समाचार लिखकर मॉन्टेलियाँन उस पत्र को एक सुन्दर कीड़े की टाँगों में बाँधकर केन्द्रीय परिषद् के पास भेजेगा। इस मण्डल की गिनती नरमदल वालों में की जाती है। किन्तु इनकी भूख बच्चों जैसी भूख है। कैस्टाइलवालों की तरह रोटियों का लोभ नहीं करते, एण्डेलूशियावालों की तरह तेल के लिए बेचैन नहीं होते और न अरेगान के लोगों के सदृश मई के अगाए फलों के लिए ही मुँह बाये रहते हैं। वे तो केवल ताज़ा, गरम और मीठा दूध चाहते हैं। जब औरतों की तरह बातों की झड़ बाँध देनेवाले कामरेड मान्टेलियाँन ने गैलीशिया के कृषकवृन्द को सारी स्थिति साफ़-साफ़ बतला दी तो ये बच्चे दूध की जगह लाल रक्त के लिए उतावले हो उठे। गैलीशिया के मण्डल ने चार प्रान्तों के कार्य को बिलकुल ठप कर दिया है। सारे कारखाने बन्द पड़े हैं। अब या तो घरों में खाना बनाने का धुआँ होता है या अस्तबलों में लीद जलाने का। कृषि-सम्बन्धी मज़दूर रविवार के कपड़े पहने घूमा करते हैं। सारा गैलेशिया हाथ पर हाथ रक्खे हुए प्रतीक्षा कर रहा है। सिविल गवर्नर आदेश प्रत्यादेश निकाल रहे हैं। टेलिग्राफ़ के तारों तथा सभ्यता के अन्य कृत्रिम राजमार्गों द्वारा देशव्यापिनी उथल-पुथल का परिचय मिल रहा है। सिविल गार्डों से भरी हुई लारियाँ तेज़ी के साथ इधर-उधर जा रही हैं। जिस प्रकार बच्चे सीसे के सिपाहियों का खेल खेला करते हैं, यह सब भी वैसा ही खिलवाड़-सा प्रतीत हो रहा है। हुकूमत का

कार्य सदैव हरी जाकटों में बन्द की हुई मिस्लों के आने-जाने के साथ आरम्भ हुआ करता है और उसका अन्त तोपों के गोलों के साथ ! पारस्परिक स्वत्वों का कैसा अद्भुत जाल फैला हुआ है ! जनता की गाढ़ी कमाई का पैसा किस प्रकार अनुत्पादकों के लिए खर्च किया जाता है और फिर ये लोग बूर्ज्वा राजनीतिज्ञों की रंगरेलियों का किस प्रकार समर्थन करते हैं ! शासन की कठिनाइयाँ, राजनीतिक गड़बड़ ! क्रियात्मक कार्य के सौंदर्य से अनभिज्ञ हरी जाकटों में बन्द मिसलों की हृदय विदारक उदासीनता और एक क्लांत तथा जाग्रत देश की छाती पर सवार व्यवस्थापकों का मिथ्या अभिमान ! गैलीशिया हाथ पर हाथ रक्खे हुए प्रतीक्षा कर रहा है । अपने शस्त्रों पर हाथ रक्खे हुए सिविल-गार्ड भी प्रतीक्षा कर रहे हैं । चारों प्रांतों के गवर्नर भी टेलीफ़ोन पर कान लगाये हुए और मार्स की सफ़ेद रिबन पर आँखें गड़ाये हुए प्रतीक्षा कर रहे हैं । और कामरेड मान्टेलियाँन भद्र बूर्ज्वों के मूक प्रश्न का उत्तर देता हुआ कहता है—

'हम राजनीति के इच्छुक अवश्य हैं, किन्तु हम ऐसी राजनीति नहीं चाहते जिसमें श्रेणियों तथा व्यवसायों के आधार पर जनता के साथ अन्याय किया जाय । हम मिथ्या अभिमान और स्त्रियोचित महत्वाकांक्षाओं का देहाती नाच नहीं देखना चाहते, हम चाहते हैं कि राजनीति में संख्याओं, आँकड़ों और शुभकामना का समावेश हो । परिश्रम ने अब हमें यह सिखा दिया है कि ऐसा होना संभव है ।'

सेब्रेरों की ऊँची पहाड़ी पर एक साधारण चींटी दिखाई देती है । वह काली चींटी है । वह उड़ नहीं सकती । वह प्रायः अन्धी है । फिर भी वह अपने मुँह में एक हरा पत्ता दबाये चली जा रही है । वह अपनी यात्रा के स्थान को भलीभाँति जानती है ।

'और उसकी आत्मा ?' एक स्थानीय कवि प्रश्न करता है ।

'यह भाव तो बस स्त्रियों ही को शोभा देता है ।'

एक मक्खी स्पेन पर उड़ती है। एक क्षण के लिए वह एक पहाड़ी पर विश्राम करने के पश्चात् एक चौड़े और चमकते हुए वायु-यान के सदृश एक झरने के किनारे उतरती है। प्यास बुझाकर वह फिर उड़ जाती है और अबकी दफ़ा लौब्रेगेट के पर्वतशिखर पर उतरती है। कैटेलोनिया दो रंगों में है। उसका एक रंग जितवृक्ष के समान हरा है, जो प्रायः काला प्रतीत होता है, दूसरा समुद्र की तरह नीला है, जो कटीली के रंग के सदृश है। अब मक्खी उतर चुकी है! वह अपने पेट में सुरभित रस भरे हुए है और चाहती है कि इस मीठे मधु के भार को लेकर वह अपने छत्ते में जा पहुँचे। वह फूलों का रस चूसती है, मधु बनाती है, फिर भी वह अपने ज़हरीले डंक को जहाँ चाहती है चुभा देती है। मधु बनाना, फूलों का रस चूसना और डंक मारना अच्छा है। किन्तु मक्खी का कोई निश्चित उद्देश्य नहीं है। अपने नेत्रों और परों की सहायता से वह अपनी धुन में जहाँ-तहाँ उड़ती फिरती है। उसकी प्रेरक या तो उसकी क्षणिक सनक होती है, या हवा का झोंका या उसके चित्त को लुभानेवाली किसी फूल की मँहक। सामर इस मक्खी को ध्यान से देखता है। वह कैटेलोनिया और टॉरटॉसा के मैदान पर उड़ती हुई एब्रो नदी के किनारे जा पहुँ-चती है। इस नदी के दूसरे किनारे पर एक छोटी-सी मकड़ी है उसको नदी पार करने का साहस नहीं होता और अब सामर एबरटेन, रिकार्ट तथा मगराणी की मुखाकृतियों का ध्यान करना आरंभ कर देता है। कैटेलोनिया भी बाँई बग़ल में रिवालवर दबाये हाथ पर हाथ रक्खे बैठी हुई है। क्या यह भी भूखी है? जब कोई आदर्श के नशे में चूर हो जाता है तो उसे भूख नहीं मालूम हुआ करती। मक्खी उड़कर वहीं मंडला रही है। उसकी भिनभिनाहट में सामर को यह संदेश सुनाई देता हुआ प्रतीत होता है—

'हमारे उदार विचार हमें विजयी बनाएँगे। हमें अपने डंक तेज़

कर लेने चाहिये और अपने पेटों को फूलों के रस से भर लेना चाहिये जिससे कि उस शुभ दिवस का आगमन हो। हमें इस बात की सूचना केन्द्र को देनी चाहिये। किंतु केन्द्रीयता का भाव संघ-भाव का विरोधी है। इसलिये हम केन्द्र को सूचित करना नहीं चाहते। अतएव इसके बजाय हम नगररक्षकों को मार डालें और यदि हमारा भाग्य अच्छा हुआ तो कोई छापा मारनेवाला गार्ड भी उनके साथ पिच मरेगा।'

मक्खी उड़ जाती है। रिकार्ट और मगराणी गुप्ताङ्क लिखते हैं और इन अंकों के सामने बमों और रिवालवरों के नाम लिखते हैं। वह भद्र बूर्ज्वा कटलन के प्रश्न का यह उत्तर देते हैं—

'हम स्वाधीन-नगर-परिषदों के पक्ष में हैं।'

मॉन्टीजूइक पर्वतशृंग पर मक्खी को एक डच जाति का गुलाब का फूल दिखाई देता है। यह वही डच जाति का गुलाब का फूल है जिसको उसके नम्र कैटेलोनियावाद के कारण देश के व्यवसाइयों ने अर्ध बूर्ज्वा कटलन की उपाधि दी है। कोई पुकार उठता है—

'युवती मक्खी, देखो, यह डच गुलाब का फूल एक महाबूर्ज्वा पुष्प है!'

फूल के हृदय पर चढ़कर मक्खी ने उत्तर दिया—

'तो इससे क्या? इसकी गंध तो मीठी है।'

हल्ला मचानेवाले बूर्ज्वों को रिकार्ट और मगराणी यह उत्तर देते हैं—

'स्वाधीन नगर-परिषदों का जो कुछ भी परिणाम हो हमें स्वीकार करना होगा!'

सामर की दृष्टि समुद्रतट-रेखा का निरीक्षण करती है और फिर पिरेनीज़ के किनारे-किनारे होती हुई कैन्टेब्रिया को लौट आती है। एक परदार चींटी आँखें खोले हुए एस्टूरियाज़, सेंटेन्डर और बसकोनिया को पार कर रही है। वह अरागॉन पहुँचकर अपने पंख बंद कर लेती

है और अपने दृढ़ अवयव बाहर निकाल लेती है जिसकी सहायता से वह हवा में न उड़ने पाये और पृथ्वी पर सुगमता से आगे बढ़ सके।

कैन्टेब्रिया में यह चींटी एक हरा तिनका लिये जा रही थी। वह उसे नीचे छोड़ कर आकाश का निरीक्षण करने और अपना मार्ग निश्चित करने के अभिप्राय से हवा में ऊपर उठती है। ऐसा कर चुकने के पश्चात् उसने वह तिनका फिर उठा लिया। वह थोड़ी दूर तक अबाध रूप से चलती रही। वाइडोसा के कोने में एक काला बिच्छू रहता है। वह बड़ा भारी धातु कर्मकार है। उसके अगले डंक बड़े पैने और दृढ़ हैं। उसकी पूँछ का डंक ज़हरीला है। वह बड़ा चुलबुला है। बिच्छू के नियत तथा सन्देह रहित भाव से काम करने पर चींटी को बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर दोनों की ख़ूब पटरी मिल गई। सामर देखता है कि साम्यवादी कामरेडों को इस बात का दुःख है कि संघर्ष का क्रान्तिकारी रूप एक क्षण के लिए भी दृष्टि से ओझल नहीं होता। हड़ताल बूर्ज़्वों के लिये है न कि हड़तालियों के लिए जो बेचारे रात-दिन पिसते रहते हैं। गुअरनिका के वृक्ष की छाया में बैठा हुआ बूर्ज़्वा मज़े में अपना 'चिस्टू' बजा रहा है जिस पर ईश्वर का नाम खुदा हुआ है। वह अपनी कुलीनता के अलंकृत चिह्नों के मध्य में बड़े ठाट के साथ कभी प्रार्थना करता है और मज़े में आकर एक पैर के बल नाचने लगता है और कभी अपना 'चिस्टू' बाजा नीचे रखकर खिड़की से सिर निकालकर बाहर झाँकता है।

'तो फिर तुम क्या चाहते हो?' वह प्रश्न करता है।

सैकड़ों कंठस्वर उत्तर देते हैं—

'हम प्रभुत्व चाहते हैं।'

बुर्जुआ अन्दर सिर करके, नाक खुजलाकर बड़बड़ाता है—

'यह बहुत ज़्यादा माँगते हैं, चूल्हे में झोंको इनको! प्रभुत्व! उसमें रखा ही क्या है। प्रभुत्व तो है ही। वह बना बनाया तैयार है।

वह खुली हुई हवा में है। कदाचित् वह सुरक्षित भी नहीं है। बस उठो और उसे गपक लो। बड़ी मुसीबत तो यह है कि इन लोगों को अपने ध्येय का ज्ञान हो गया है !'

किन्तु वह फिर अपनी कुलीनता की पत्थर की कामदार मूर्तियों के सामने प्रार्थना करने और नाचने लग जाता है। बिलबाओ के बिच्छू पर क्रान्तिकारिणी समिति को कोई अधिकार प्राप्त नहीं है, किन्तु जब संघर्ष आरम्भ होगा तो वे दोनो बिना किसी प्रकार के झगड़े के मिलकर काम करने लग जायँगे। एक श्रमजीवी दल के इस आज्ञाकारी कोने पर सामर सविवाद दृष्टिपात करता है और कुछ भिन्नता देखने की आशा में वह अरागॉन, रियोजा और नवर्रा की ओर उतर पड़ता है। मंडल का केन्द्र स्थान सारागोसा में है। यहाँ की मिट्टी नोनीदार और चिकनी है। वह बार्सिलोना और मैड्रिड की सहगामिनी है। और यहाँ वह गिंडार एक डाली से गिरकर अपने गंडेदार शरीर को चुकन्दर के इलाके में घुमाती हुई मॉन्ग्रिॉस में जा पहुँचती है। एब्रो नदी अब एक फ़ौलादी छड़-सी प्रतीत होती है। सामर को इस महान् सरिता की स्मृति भूली नहीं है और वह कह उठता है—

'कैसा अन्याय हैं !'

सारागोसा निवासी कामरेडगण दृढ़ तथा शांत भाव से हड़ताल किये जा रहे हैं। वह गिंडार एक भावी तितली है। वह बड़ी नम्रता और शिष्टता के साथ रेंगती है। वह अपने रंग-बिरंगे और चमकीले परों का विकास जारी रखने के निमित्त अपने खाद्य पदार्थों की खोज कर रही है। भद्र बूर्ज्वा भी अपनी प्रकाशयुक्त अट्टालिका की खिड़की में से मुँह निकाल कर पूछता है—

'क्या आप यह बता देने की कृपा करेंगे कि आप वास्तव में क्या चाहते हैं ?'

'हाँ, क्यों नहीं। हम आपको अवश्य बताएँगे।'

बूर्ज्वा कहता है—

'फिर आप बतलाइये कि आप क्या चाहते हैं और यदि वह कोई अच्छी चीज़ हुई तो हम सब भी आप के साथ हो लेंगे।'

मज़दूर खिलखिला पड़ते हैं। उन में से एक कहता है कि ज़रा अपनी थोथड़ी और बाहर निकाल दो। उसके हाथों में एक बहुत बड़ा दक़ियानूसी पिस्तौल डटाडट भरा हुआ है। बूर्ज्वा डर कर कहता है—

'इसके क्या मानी।'

'यही कि एक भी गोली व्यर्थ न जाय, और क्या?'

'परन्तु तुम चाहते क्या हो?'

'अपनी सिंडीकेटों के अतिरिक्त सब कुछ विध्वंस कर डालना!'

मांडलिक सिंडीकेटें सुसम्पन्न हैं। उनमें एकता भी है और उत्साह भी। गिंडार अपने पैरों पर अच्छी तरह खड़ी होने लगी है और एक दिन अपने पर अवश्य दिखलाएगी। इस बीच में सामर प्रश्न करता है—

'क्या तुम्हें यह भी ज्ञात है कि तुम्हें क्या करना है?'

'हमें तो यह आशा है कि बार्सिलोनावाले काम पर लौट जाएँगे और जनमत की जाँच करने के लिए आप सभा करेंगे।'

सामर इसका सशीघ्र निषेध करता हुआ कहता है—

'काम पर लौट जाने की कोई बात ही नहीं होनी चाहिये।'

गिंडार अपने पिछले पैरों पर खड़ी होकर अपने सिर और शरीर का ऊपर का भाग हवा में ऊपर उठा देती है।

'हम कर ही क्या सकते हैं? उन्होंने हमारे तीन कामरेड मार डाले और लगभग सभी नेता गिरफ़्तार कर लिये हैं!'

इसके बाद दोनो कैस्टाइलों का नम्बर आता है। उनके ऊपर एक

सफ़ेद जंतु बैठा हुआ है। सैगोविया पर उसकी पूँछ है और ज़मोरा पर उसका मुख आलस्य में भरा हुआ वह स्वप्न देख रहा है। उसके बीच में सने हुए पेट के नीचे, ग्वाडारमा के समीप, जर्मिनल, एस्पार्टको और प्रोग्रेसो पड़े हुए हैं। और फिर कैस्टाइल का क्या हाल है? सामर अपने हृदय में इस प्रश्न का उत्तर खोजता है। किन्तु उसे कोई उत्तर नहीं मिलता, क्योंकि वह स्वयं कैस्टाइल है। न तो उसे अंतरावलोकन का अभ्यास है, न अपने संबंध में कोई भविष्यवाणी करने का और न अपने इतिहास को समझने का ढोंग बनाने का। 'मैं यह हूँ' वह कहता है जैसे कि कोई वृक्ष या पत्थर या मेघ कहता हो। और उसके लिए यही कहना पर्याप्त है। किन्तु भावी मैड्रिड का जो स्वप्न वह देखता है उसमें सरकारी पदाधिकारी कहीं हैं ही नहीं। सभी लोग या तो खेती करते हैं या खानों में काम करते हैं या सुदूर प्रान्तों में चले गये हैं। वह मैड्रिड का प्रेमी है। वह चाहता है कि उसमें ग्रामों जैसी शून्यता हो। उसे ध्यान आता है कि कई बार प्रातःकाल के झुटपुटे में उसने अपनी कल्पना की बागें ढीली कर दी हैं और इसके परिणाम स्वरूप उसे ऐसा प्रतीत हुआ है कि शाम के सात बजे हैं। प्रभात का नहीं संध्या का झुटपुटा। संध्या का वह समय जब कि गलियाँ जन-शून्य हो गई हों, व्यापार का अंत हो गया हो और सारे नागरिक डर से भागकर अपने मकानों में बंद हो गये हों। लोगों के भाग जाने से या क्रांति की विजय से मैड्रिड जनशून्य हो गया हो। जनता ने डायरेक्टर जेनरल पुलिस, लाटपादरी और बैंक के व्यवस्थापक महोदय को बंधक रख छोड़ा हो। इन लोगों से छुटकारा पा जाने पर मैड्रिड कैसा प्रिय, शांत, सभ्य, स्वच्छ एवं संस्कृत प्रतीत होगा। किसी दिन—कभी, वह शुभ दिवस भी आएगा! सामर स्वप्न से जाग्रत हो उठता है। अब वह मैड्रिड में है। बादल उड़ गये हैं, इन्द्रधनुष दूर चला गया है। अब मैड्रिड में धूप खिली हुई है। उसमें भावी मैड्रिड की कुछ छटा

दिखाई देती है । कैस्टाइल में क्रांति की कुछ निराली ही शान है। उसमें गर्व है, संगमप्रियता है, सौजन्य है। उसमें अपनी चारुता के ज्ञान का भाव है। बिजली के एक कारखाने में कोई विश्वासघाती काम करने गया था। उसपर आक्रमण करनेमें एक कामरेड ने भाग लिया था। पुलिस कितने ही दिन उसका पीछा करती रही। अंत में गोलियों तक नौबत पहुँची। दोनों ओर से रिवालवर चले। उसने एक दो एजेन्ट ज़खमी किये और एक गोली स्वयं भी खाई। किन्तु वह बराबर भागता और गोली चलाता रहा। जब उसके कारतूस समाप्त हो गये और उसे भाग निकलने का कोई मार्ग भी न दीखा तो उसने अपना रिवलावर पृथ्वी पर फेंक दिया और हाथ उठाकर पुलिस को रोकते हुए कहा—

'अच्छा बस, अब बहुत हो लिया। मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ।'

अब स्पेन फिर उसके पैरों पर पड़ा हुआ है। एमिलिया उसको दूसरे दृष्टिकोण से देख रही है। वह इसी विचार में मग्न है कि उसके पेट में बच्चा है।

'देखो, यह मेरा देश है!'

मालगा की नील रेखा के समीपवर्ती पहाड़ों को इंगित करती हुई वह कहती है। इससे कुछ ऊपर की ओर, एक छोटी और चुस्त छिपकली ऊँघ रही है। वह पूर्वी भाग को ढके हुए है। सामर उसको देखता हुआ प्रश्न करता है—

'और तुम? और तुम?'

पुइग और वेन्टोल्डरा उत्तर देते हैं—

'हम काम पर लौट गये हैं। मैड्रिड के प्रदर्शन के साथ सहानुभूति दिखाने के लिए हम केवल चौबीस घंटे काम पर नहीं गये। किन्तु एक दिन सब कुछ कर डालने के लिए हम अपनी शक्ति बढ़ा रहे हैं।'

सामर सिर हिलाकर सोचता है—'बहुत-से सन्तरे, बहुत-से फूल'

अधिक पूर्व और समुद्र की समीपता—यह सभी जी का जंजाल होते हैं।' वह सोचता है कि जब प्राची समुद्र से दूर होती है तो उसमें अशान्ति उत्पन्न होती है और जिन ऊजड़खेड़ों में शलभ वास करते हैं उनमें न्याय और धर्म का सूत्रपात होता है। किन्तु समुद्र की निकटता के कारण मनुष्य का मन शान्त रहता है और वह उसी तरह आशा के भुलावे में पड़ा सोया करता है जैसे कि वह नीले क्षितिज को समीप देखकर यह समझता है कि वह केवल हाथ उठाने मात्र से उसे छू सकता है।

समुद्र से दूर प्राची—उग्र प्राची की ओर मुड़ो। एण्डालूशिया के भीतरी भाग में जहाँ विशाल और हरे-भरे मैदान और श्वेत पहाड़ हैं। सिर्रा नवादा का वर्ण श्वेत नहीं है वह मटमैला नीला है। स्पेन के समस्त ऊजड़ भाग का रंग जहाँ न सड़क और न रेल, ज्वालामुखी पहाड़ों से भरे हुए इस प्रदेश का रंग भी धूसर अथवा धूसरित नील है। यह उस आदिम युग से जब कि न कोई वृक्ष उगा न कोई कीड़ा, इसी प्रकार अरिशून्य बना हुआ है। सिर्रा नवादा की चोटी पर एक कीट लेटा हुआ है। अरागाँन के इस कीट के पंख एण्डालूशिया में हैं किन्तु उनमें काली काली धारियाँ हैं, वह मलिन तथा तमोवृत हैं। परन्तु उसके शरीर पर लाल-लाल गंडे हैं। काली नोकों को छोड़कर उसकी सारी टाँगें भी लाल हैं।

'तुमने अब तक क्या किया है ? तुम क्या कर रहे हो ?'

'चालीस फ़स्ल काटने की मशीनें और तीन हत्थे नष्ट हो गये हैं। सैविली में हड़ताल के कारण समस्त भद्रगण अपने शयनागारों या पूजागृहों में बन्द पड़े हैं।'

'तुम किधर जा रहे हो ?'

'तुम कहाँ जा रहे हो ?'

'किधर—कहाँ ?'

'स्वाधीनतावाद की ओर।'

एन्डालूशिया ग्राम्य है और देहात अराजकवादी हुआ करता है। सैविली मण्डल के सदस्य प्रश्न करते हैं—

'और तुम? तुम किधर जाते हो?'

'मैं क्रान्ति की ओर जा रहा हूँ?'

'हम भी उधर ही जा रहे हैं।'

सामर ने सिगरेट का टुकड़ा वस्कोनिया पर फेंक दिया। वह दहकता हुआ टुकड़ा ठीक लाँयाला पर जाकर गिरा, उस मनोरम झरोखे के समीप जहाँ आचार्य इग्नेशियस बैठा करते थे। सामर यह सोचकर हँस पड़ा कि यदि इग्नेशियस इस समय वहाँ बैठा होता तो उसको वहाँ से पत्ता तोड़कर भाग जाना पड़ता या वह चूहे की तरह धुएँ से दमघुट कर मर जाता। तदनन्तर वह इस काले कीट की ओर मुड़ा।

'मैं तुम्हारे समान नहीं हूँ। मैं साम्यवादी विजय के निमित्त शासन सत्ता को हथियाना चाहता हूँ। परन्तु उसको प्राप्त करने के दूसरे ही दिन मैं उसे नष्ट कर डालूँगा। यह बात बिलकुल स्वाभाविक होगी। किन्तु इस ज़माने में वह दूसरा दिन, सम्भव है एक वर्ष में आये या इसमें दो वर्ष भी लग सकते हैं।'

'और फिर?'

'फिर हम सब यह निश्चित करेंगे कि अब क्या होना चाहिये। समाजवाद प्रत्येक परिस्थिति में पूरा उतर सकता है। शक्ति तथा निग्रह का प्रयोग तो अनिवार्य होगा ही।'

समस्त एण्डालूशिया घोषणाओं और गोलियों के तुमुलनाद से भभक-सा उठा है। जर्मिनल, प्रोग्रेसो और एस्पार्टको अपनी क़ब्रों में पड़े हुए सुख से मुसकरा रहे हैं क्योंकि उनके होठों से जो कीट आज निकल रहे हैं वह कल तितलियाँ होंगे। वह पृथ्वी के पुष्प होंगे।

एक्सट्रीमाडूरा में एक चुलबुला शलभ है जो कभी अपना रंग-बिरंगा शरीर चमकाकर उड़ता है, कभी अपनी कोहनियाँ ऊपर उठाकर पृथ्वी पर शान्त-सा लेट जाता और कुचले जाने की प्रतीक्षा करता है।

पुर्तगाल के समीप एक असाधारण कीट है। कितनी ही देर के बाद सामर यह निश्चय कर पाता है कि वह जुगनू है।

'यह छोटा सा जानवर,' वह एमिलिया से कहता हैं, 'अंधकार में हरा प्रकाश देता है।'

तत्पश्चात् वह उसका ठीक स्थान बताते हुए पूछता है—

'तुम्हें मालूम है कि यह कौन-सा स्थान है।'

'यह कैस्टीब्लैंको है।'

'बिलकुल ठीक!'

कैस्टीब्लैंको में एक प्रकाश है। उसके दाहिनी ओर स्पेन है जिस पर अंधकार छाया हुआ है या जहाँ पानी से भरी हुई नीची भूमि पर चमकते हुए चंद्रमा का क्षीण प्रकाश है। मॉनक्लोआ अरण्य के अंत पर, स्पेन के प्राकृतिक नकशे के चारों ओर जो रेलिंग लगी हुई है उस-पर कोहनियाँ टेके हुए सामर और एमिलिया खड़े हैं।

बैलियरिक टापुओं को इंगित करती हुई एमिलिया कहती है—

'देखो, वह भूमध्य सागर है।'

'हाँ,' सामर ने उत्तर दिया, यही खीष्टीय सभ्यता का सागर है। ईसा और अफ़लातून की सभ्यता का समुद्र। यह वास्तव में दुर्बुद्धि का सागर है!'

यह समुद्र प्रायः शुष्क था। सामर ने एमिलिया को रोज़ालीज़ की ओर टहलने को भेज दिया। फिर उसने फ़ारमेन्टरा और वैलनशिया के मध्य में लघुशंका की। भूमध्य सागर अब काफ़ी गहरा प्रतीत होने लगा।

कामरेडगण कारागार में

स्कूलों के मैदान के समान, जेल की प्रथम गैलरी के सामने जो सहन है वह मनोरञ्जन का स्थल है। स्कूल के लड़कों में जैसा मित्रता का व्यवहार होता है वैसा ही यहाँ भी कैदियों में परस्पर देख पड़ता है। यहाँ इन लोगों में ऐसी मित्रता हो जाया करती है जिसमें वह सब कुछ भूलकर शांति निमग्न हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त, सिविल क़ैदी अनिद्रा-अवस्था में जेल में आते हैं और यदि उन पर क़ानूनी पाबन्दियों की भरमार नहीं होती तो वे जेल में ख़ूब सोया करते हैं और सुख की नींद सोया करते हैं। उन्हें जेल आने का दुःख नहीं होता। उनकी यह मन-स्थिति कुछ ही दिन रहती है। जब उन्हें यह मालूम होने लगता है कि वे संसार से सुपरिचित जीवन से इतने दूर हो गये हैं कि उनका उससे नाता ही टूट-सा गया है तो उन्हें स्वाधीनता का अभाव खलने लगता है।

लिबर्टो गारशिया, जो छः फीट से ज़्यादा लम्बा है, जेल की खाटों का दुखड़ा रो रहा है ; क्योंकि उस पर उसके पैर पूरी तरह नहीं फैल पाते। जोज़ी क्राउज़ेल, जो बहुत कम बात करनेवाला और रुखे स्वभाव का मनुष्य है, इधर-उधर टहल कर लैवेन्टाइन मंडल की, जिसका कि वह बरसों सदस्य रह चुका है, बात सोच रहा है। यह बात उसकी समझ ही में नहीं आती कि विप्लव में इस मंडल ने इतना कम भाग क्यों लिया। अन्य दोनों कामरेड, हेलियाँस पीरेज़ और मारग्राफ़ दीवार का तकिया लगाये फ़र्श पर बैठे हुए हैं। लिबर्टो भी उनके पास आ बैठा। क्राउज़ेल उनके पास से होकर जाता है तो वह उसे भी बुलाते हैं किन्तु वह उनकी ओर ध्यान न देकर आगे चला जाता है। वह जानता है कि ये लोग इस समय दिल्लगी करना चाहते हैं और किसी को मूर्ख बनाने की फ़िक्र में हैं। किन्तु वह अन्त में विवश-सा होकर उनके पास जा कर बैठ जाता है। वे सब मौन रहकर सहन में इधर-उधर दृष्टि दौड़ाते हैं। फिर उनमें से एक प्रश्न करता है—

'वहाँ, वह कौन है ?'

उनका लक्ष्य एक लम्बा आदमी है, जो बढ़िया कपड़े पहने है, ऐनक लगाये है और जिसकी आवाज़ तेज़ है। वह श्रमजीवियों की ओर से लड़ा था। वह एक स्पेन निवासी है जिसने पैरिस में जाकर अमरीकन ठाट-बाट से रहना सीखा है। बस इतना ही कहने से यह स्पष्ट हो जाता है कि दूसरों की नक़ल करने में उसने अपना व्यक्तित्व कहाँ तक मिटा डाला है। उसकी सारी बातें, यहाँ तक कि उसका स्वर और उसके शब्द—सभी झूँठे और बनाबटी मालूम होते हैं। उसके विचार तथा भाव समाचार पत्रों के साँचे में ढले हुए हैं। प्रशंसा के भाव से नहीं बल्कि इस वजह से कि वह उसकी आदतों से परिचित नहीं था, हेलियाँस ने उससे दो एक बातें की थीं।

'वह गवैया है।' उसने कहा।

वह हमेशा बात-बात में मार्क्स का नाम लिया करता था। कभी कभी हेलियाँस उसकी बात काटकर व्यंग-भाव से पूछ बैठा करता था—

'आप मार्क्स कहते हैं या मार्च ?'

इस पर वह सौगन्ध खाकर कहता था कि मार्च नाम के मेजारका निवासी कोठीवाले से उसका कभी कोई भी सम्बन्ध नहीं रहा है और यह कि हेलियाँस के प्रश्न में एक बुरा जौर अप्रिय भाव छिपा हुआ है। किन्तु उसके उत्तर में वह खुश हो जाता था क्योंकि वह उसको सुस्पष्ट समझता था।

अब लिबर्टो की इस टुकड़ी में तीन-चार साम्यवादी और एक अराजकवादी भी आ मिले। इन अराजकवादी महोदय ने यह दृढ़ संकल्पकर लिया था कि वे उस अन्याय से जो कि उनको जेल भेजने में उनके साथ किया गया था, संस्था के सारे पत्रों को परिचित कर देंगे। वे चार तख़्ते इस सम्बन्ध में लिख भी चुके थे और इस काम को जारी रखने के लिए अपने सब मित्रों से काग़ज़ माँगते थे। वे इस लेख को २० आलोचना पत्रों के पास भेजनेवाले थे।

क्या वे सब उसको प्रकाशित कर देंगे ?'

अराजवादी महोदय को पूरा विश्वास था कि वह सब उसे छाप देंगे। उन्होंने कहा कि जब इसके पूर्व मैं एलजिसिराज़ में गिरफ़्तार हुआ था तो मेरे निषेधार्थक लेख को कम से कम १७ पत्रों ने छापा था और अबकी बार तो मैं पीछे से यह नोट भी लिख दूँगा—'समस्त अराजवादी तथा समाजवादी पत्रों से इसको प्रकाशित करने की प्रार्थना की जाती है।' समाजवादियों ने उससे पूछा—

'किन्तु इससे आपको लाभ क्या होगा ?'

'मुझे क्या लाभ होगा ? यही कि जो अन्याय मेरे साथ हुआ है

उससे सारा संसार परिचित हो जायगा।'

'किन्तु,' लिवर्टो ने कहा, क्या आप यह समझते हैं कि वह पहले से इस बात को नहीं जानते हैं ?'

'आप ने भी एक ही कही !' अराजकवादी महोदय ने उत्तर दिया 'अगर उन्हें इस बात का विश्वास होता तो वे मुझे जेल में डालते ही क्यों ?'

साम्यवादी ठहाका मारकर हँस पड़े ; किन्तु इस अराजकवादी की बात को कोई गम्भीर भाव से नहीं सोचा करता था।

'यद्यपि आप उन्हें पूर्ण विश्वास भी दिला दें तो भी वे आपको गिरफ़ार करने से बाज़ नहीं आएँगे।'

'तब तो', अराजकवादी ने कहा, 'आप मनुष्य के विशुद्ध अन्तः-करण ही में विश्वास नहीं रखते।'

'नहीं।'

'क्यों नहीं ?'

'क्योंकि अंतःकरण बड़ी-बड़ी पलटनों का, आवश्यकताओं का और उस नीति-शास्त्र का जो शासक-वर्ग ने अपने हित के लिए निर्माण किये हैं क्रीतदास है।'

इस बात पर वह इस अराजकवादी को सहमत न कर सके और वह गार्डों और सार्वजनिक शांति के एजेन्टों के अत्याचारों और असंगत निर्मम कार्यों का कथन करने लग गया। इस पर एक साम्यवादी ने झल्लाकर कहा—

'किन्तु यह तो बच्चों जैसी बात हुई ! आप की संस्था में लाखों मज़दूर होते हुए भी आप को गार्डों के विरुद्ध लेख लिखने से अधिक कुछ सूझ ही नहीं पड़ता !' अपने अन्तस्तल की गहराई में क्राउज़ेल भी इस बात से सहमत था, किन्तु उसने अराजकवादी का पक्ष लेते हुए कहा—

'निषेध में भी कुछ शक्ति होती अवश्य है। जब यह प्रसंग २० पत्रों में छपेगा तो इसको हज़ारों मनुष्य पढ़ेंगे। कितने ही सीधे सादे किसान और अशिक्षित मज़दूर आप के इस निषेध से उत्तेजित हो उठेंगे।'

लिवर्टो ने किंचित् व्यंग-भाव से कहा--

'न्याय और स्वतंत्रता के नारे लगाकर हम जनसमुदाय को क्रांति करने के लिए उत्तेजित करते हैं। आप यह समझ लीजिये कि यह कार्य पूर्ण हो चुका है। अब आप को इसका पूरा लाभ उठाकर क्रांति कर डालना शेष है! यदि आप को यह काम करना आता है तो यह न समझिये कि हम लोग आप के मार्ग में रोड़े अटकाएँगे।'

यद्यपि यह बात उसने बड़ी सरलता के साथ कही थी तो भी हेलियॉस को यह ज्ञात हुआ कि स्पेन में क्रांति की सब तैयारियाँ पूरी हो जाने पर भी उसका परिणाम कुछ भी नहीं निकल रहा था। दुराग्रही साम्यवादी ने निषेध करते हुए कहा—

'स्वाधीनता के विचार से आप जनता को उन्मत्त कर देते हैं। आप का यह कार्य उसे बिलकुल निकम्मा बना देता है!'

अराजकवादी ने आश्चर्य चकित होकर पूछा—

'क्या आप को स्वाधीनता में विश्वास नहीं है?'

साम्यवादी ने निषेध-सूचक सिर हिला दिया जिससे अराजवादी का हृदय निराशा से भर गया। वह बोला—

'और आप यह बात जेल के सदन में कह रहे हैं?'

हेलियॉस और लिवर्टो ने साम्यवादी का विरोध किया; किंतु उन्होंने अराजकवादी की बात की सच्चाई को भी स्वीकार नहीं किया।

'स्वतंत्रता के नाम पर ही स्पेन में क्रांति होनी चाहिये। यदि जनता इस कार्य में असफल रही तो वह दूसरे ही दिन उसका विरोध करने लग जायगी।'

अब साम्यवादी निराश-सा हो गया। उसने कहा :

'कृपया यह तो बतला दीजिये कि स्वाधीनता है क्या ? क्या वह विशेष स्वत्वों के शासन का अन्त नहीं है ? हम भी रूस की तरह यह कार्य पूरा करके छोड़ेंगे !'

अराजकवादी ने इसका प्रतिवाद करते हुए कहा—

'यह बात ठीक नहीं है। रूस में भी ऐसे बहुत से मनुष्य हैं जो अपने आप को त्रस्त समझते हैं।'

'ऐसे लोग तो सदैव ही प्रत्येक स्थान में मिलेंगे। राजनीतिक वस्तु-स्थिति को छोड़ कर स्वतंत्रता की एक भावना के रूप में व्याख्या करना हमारा काम नहीं है। यह काम दर्शन-शास्त्र या वैद्यक का है। स्वतन्त्रता का जो भाव आप का है उसके अनुसार पुनः बूर्ज्वा हो जाने और लखपति बन जाने से कोई बात अच्छी हो ही नहीं सकती। लखपति भी तो स्वाधीन होता है।'

अब अराजकवादी चक्कर में आ गया। वह अपनी पहली बातें इस प्रकार दोहराने लग गया जिससे साम्यवादी खिन्न हो उठे। वे सब एक साथ उठ खड़े हुए और इस प्रकार इस विवाद का अन्त हो गया। साम्यवादियों और अराजकवादियों के विवादों का बहुधा ऐसा ही अप्रिय अन्त हुआ करता है। अपने मत को पक्का समझता हुआ लिवर्टो आकाश में अपना लाल सिर उठाये हुए वहाँ से चल पड़ा। वह राजगीर था। उसको रेखागणित तथा भौतिक विज्ञान का थोड़ा-सा बोध भी था। इसलिए उसकी बुद्धि परिमार्जित थी।

जैसा कि उसके नाम ही से ज्ञात होता है लिवर्टो एक अराजकवादी का पुत्र था। उसके विचारों का मूलाधार दृढ़ था। यद्यपि वह अभी नवयुवक था फिर भी उसने उन बातों के संबंध में जिन पर लोग साधारणतः माथा-पच्ची किया करते हैं कभी भी गंभीरतापूर्वक विचार नहीं किया था। प्रेम तथा आर्थिक सुरक्षितता, जो औरों को जी का

जंजाल बन जाते हैं—इन पर वह कभी ध्यान ही न देता था। वह आत्मविश्वास के साथ जीवन-प्रवाह में बहा चला जा रहा था। आवश्यक चीज़ों की उसके लिए कभी कमी न होती थी। वह समय के साथ तरंगो पर उछलता हुआ चला जाता था। जितने भी हत्याकाण्ड घटित हुए थे या जिनको घटित करने का प्रयत्न किया गया था उन सभी में उसका हाथ मालुम होता था और पुलिस उसको भली भाँति जानती भी थी, फिर भी सच्ची बात यह थी कि उसने किसी भी उपर्युक्त षड्यन्त्र में वस्तुतः कोई भाग नहीं लिया था। वह इन कामों के करनेवालों की सफ़ाई दिया करता था, उनके प्रति प्रशंसा का भाव भी दिखलाता था; किंतु स्वयं निर्ममता के साथ कोई 'कार्य' करने में अपनी अक्षमता को स्पष्ट स्वीकार किया करता था।

'यह बात', वह कहा करता था, 'मेरे बस से बाहर है।'

वह अपने आप को 'बिना रिवालवरवाला सिंडीकेटवादी' कहा करता था। इसके विपरीत, वह सदैव सिंडीकेट की मेम्बरी के सार्टिफ़िकेट अपने साथ लिये घूमा करता था, कमेटियों को समाचार देने जाता था, मुहरबंद पत्र एक से दूसरी सिंडीकेट को दे आता था, दूसरे प्रान्तों से आये हुए गुप्त निर्देशोंवाले पर्चे और टेलिफोन द्वारा आये हुए गुप्त समाचार कामरेडों और सिंडीकेटों तक पहुँचा दिया करता था। किंतु वह मेज़ पर बैठ कर कुछ लिख नहीं सकता था। उसका कार्य बस इतना ही था कि किसी कामरेड को पैर मारकर सचेत कर दिया, किसी से ट्राम में दो शब्द कह दिये या कभी कहीं किसी भी समय पहले या पीछे जाकर स्वयं उपस्थित हो गया। उसको देखकर ऐसा प्रतीत होता था मानो वह कोई रोमन अधिवासी है, उसके चेहरे-मुहरे, शरीर की बनावट, उसके शांत, दृढ़ तथा गंभीर भाव से ऐसा ही जान पड़ता था। वह बोलता कम था किंतु उसके लाल सिर में विचार धधका करते थे। उससे उसके स्वभावानुकूल कार्य कराने के लिए न

किसी सिद्धांत की विवेचना की आवश्यकता होती थी न नामवरी के लोभ की। इसी कारण अपने हृदय के द्वेषपूर्ण उद्गारों को प्रकट करने में भी उसको रिवालवर की आवश्यकता प्रतीत न होती थी। वह साम्य-वादी नहीं था किंतु वह साम्यवाद को भली भाँति समझता था। वह अराजकवादी भी नहीं था परन्तु वह यथार्थ अराजकवाद की शुभकामना तथा मानसिक एकाग्रता से पूरी सहानुभूति रखता था। उसे सिंडीकेटों पर श्रद्धा थी, उसमें क्रांति के प्रति उत्साह था। रक्तवाहिनी हिंसा की अपेक्षा उसको इस बात का अधिक ध्यान रहता था कि सिंडीकेटों के द्वारा एक नवीन व्यावसायिक युग का सूत्रपात होगा जिसमें श्रम और उत्पादन में एक नवीन तथा सुखद साम्य स्थापित हो जायगा और स्वार्थपरता का कहीं लेश भी न रहने पाएगा। अतएव क्रांतिकारी आन्दोलन में उसका कार्य दूसरों के कामों में सहयोग देना मात्र ही था—इधर-उधर आना जाना, समाचार और काग़ज़ात यहाँ से वहाँ पहुँचा देना। शांति के समय में भी उसकी उपयोगिता कम न थी। वह कारखानों के मालिकों के पास मज़दूरों की शिकायतें लेकर जाया करता था। चूंकि ये लोग उसमें न तो वर्गद्वेष पाते थे न पक्षपात, इसलिए वे बड़ी खुशी के साथ उसके प्रस्तावों को सुना करते थे। वह कभी उतावला नहीं होता था। बातचीत करने में वह काफ़ी समय लेता था फिर भी व्यर्थ समय नष्ट करने या टालमटोल करने का दोष उस पर ज़रा भी नहीं लगाया जा सकता था। इसलिए वह अत्यन्त विस्मय-जनक समाचार को भी शांत भाव से सुन लेता था और क्रांति संबंधी समस्त कार्यों का औचित्य सिद्ध कर देता था और यदि मैशीनगनें बेकार रक्खी हुई थीं तो भी उसमें उद्विग्नता का कोई लक्षण नहीं दिखाई देता था। ऐसे मनुष्य के लिए ऐसा करना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। अतः जब उसने यह सुना कि कारपोरल के घर में एक मैशीनगन है तो उसका भाव ऐसा था मानो वह संस्था की किसी सामान्य सभा

की कार्यवाही देखने जा रहा हो । उसे हर प्रकार के सार्टिफ़िकेट दिखाने की आवश्यकता पड़ा करती थी । इसलिए उसने एक साथी से यह इशारा किया था कि उसे 'हॉचकिस मैशीनगन कारपोरल' की उपाधि दे दी जाय । यह उपाधि उसे उस पलटन की ओर से मिली हुई थी जिसमें कि वह पहले काम किया करता था । उसके इस प्रमाण-पत्र पर कर्नलों और अन्य पदाधिकारियों के हस्ताक्षर और मुहरें थीं । लिवर्टो का इस डिप्लोमे से बहुत काम निकलता था ।

यदि वह इतना अधिक लम्बा न होता और उसके बाल लाल न होते तो जेल में किसी का ध्यान उसकी ओर न गया होता । हमारा पूर्वपरिचित अर्जेन्टाइन बहुधा उसके पास पहुँच जाया करता था। जेल में पहुँचकर इन महाशय का वही हाल था जो उस विद्यार्थी का होता है जिसे आचार्य की उपाधि मिलनेवाली हो । उसके पास मिश्र की सिगरेटों का काफ़ी स्टाक था । वह नित्य-निरन्तर यह कहता रहता था कि जेल आने से वह बड़ी विषम-स्थिति में पड़ गया है । उसकी बातें सुनने से यह मालूम होता था कि उसके साथ औरों को जेल भेजकर सरकार ने उन लोगों का बड़ा उपकार किया है । पहले पहल, दो या तीन दिन तक तो ये महाशय बिना किसी से बोले जेल के सहन में इधर-उधर घूमा किये । इनके हाव-भाव एक्टरों जैसे थे । कई कामरेडों ने इन से बात करने की चेष्टा की ; किन्तु ये उन्हें दूर ही रहने का इशारा करते थे । फिर अपने ओठों पर उंगली रख कर कहते—

'मुझसे बात न करने में ही भलाई है । मुझ पर सरकार की कड़ी दृष्टि है ।'

जब इन महाशय ने यह निश्चय कर लिया कि अब अन्य लोगों से बातचीत करने में कोई खतरा नहीं है तो आपने लिवर्टो को खोज निकाला और उससे इस प्रकार के प्रश्न किये—उदाहरणार्थ—

'इस आन्दोलन का महत्त्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय प्रतिघात होना संभव है, आपकी क्या राय है?'

यह सुनकर लिबर्टो विस्मित होकर उसकी ओर ताकने लगा। इन महाशय ने अवसर पाते ही एक विशेषोक्ति सुना डाली—

'अंतर्राष्ट्रीय हस्तक्षेप के भय से समस्त देश प्रभावित हो उठेगा।'

किन्तु जब लिबर्टो फिर भी कुछ न बोला तो उसने इस मौन का स्वयं निरूपण करते हुए कहा—

'मैं समझता हूँ कि रहस्य को पूर्णतः गुप्त रखना आप जैसे नेताओं का कर्तव्य है।'

जब इन महोदय ने देखा कि उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा है तो काल-कोठरी के कष्ट की बात कहने लग गये और यह समझाने लगे कि स्वतंत्रता का छिन जाना किस प्रकार सबसे बड़ा दण्ड है।

'किन्तु जब किसी महान् उद्देश्य के लिए ऐसा हो तो—' लिबर्टो ने कहा।

अब तो अर्जेन्टाइन का चेहरा खिल उठा और वह कहने लगा कि अपना कर्तव्य पालन करने का विचार कारावास के कष्ट को भी हलका कर देता है।

'आप पर कौन-सा अपराध लगाया गया है?' लिबर्टो ने पूछा।

'केवल संदेह।' अर्जेन्टाइन महोदय ने अपना स्वर मंद करते हुए उत्तर दिया।

लिबर्टो ने विचार किया: 'निस्सन्देह शंकास्पद मालूम होना यह अपना कर्तव्य समझता है।' उसने साम्यवादियों की ओर प्रार्थनापूर्ण दृष्टि डाली। उसके उत्तर में उन्होंने आर्जेन्टाइन की ओर देखा और उसे अपने पास बुला लिया। उन्होंने उससे अपने क्रांति-सम्बन्धी अनुभव सुनाने को कहा और स्वयं उसके सिगरेट पीने लगे। लिबर्टो अन्य तीन कामरेडों के पास बैठा हुआ सोचने लगा—

'यह अपने आपको अराजकवादी बतलाता है। अतएव हम उसे एक दम दुत्कार कर अपने पास से भगा नहीं सकते।'

एलिनियो मारग्राफ़ लिबर्टो से पूछता है कि गिरफ़्तारी के वक्त उसके पास कौन-कौन से काग़ज़ात थे और एक नोटबुक निकालकर उसमें याददाश्त लिखने लगता है। काग़ज़ात की फ़ेहरिश्त लम्बी थी। कौन कौन काग़ज़ पुलिस की दृष्टि में कितना महत्त्व रखता था, इस विषय पर एलिनियो ने कुछ टीका-टिप्पणी की। किन्तु उसने अन्त में यही निश्चय किया कि इन काग़ज़ात से पुलिस को कोई विशेष रहस्य नहीं ज्ञात हो सकता था। फिर उसने कहा कि प्रातःकाल में मिलने के समय एक सुन्दर युवती उससे भेंट करने आई थी। वार्तालाप के कमरे में उसे देखकर उसकी पत्नी बहुत बिगड़ी।

'और वह थी कौन?' क्राउज़ेल ने जानते हुए पूछा।

'अरे भाई,' एलिनियो ने सन्दिग्ध भाव से कहा, 'वह एक लड़की है जो सदैव से मेरे प्रति एक प्रकार का स्नेह प्रदर्शित किया करती है। किन्तु यह मैं नहीं जानता कि वह कौन है या उसका नाम क्या है।'

यह एलिनियो की दुर्बलता है, यद्यपि वह अन्य प्रत्येक विषय में सतर्क तथा गंभीर रहा करता है। कामरेड इस बात को जानते हैं और उससे ज़ोर देकर पूछते हैं—

'तो बस तुम्हारी जान पहचान दर्शनों तक ही परिमित है?'

'मेरे कहने का यह अभिप्राय है कि मुझे यह नहीं मालूम कि वह कौन है। एक दो बार हमने बातचीत भी की है। वह लड़की मुझे पसंद ज़रूर करती है।'

क्राउज़ेल प्रश्न करता है—

'वह तुम से कहा क्या करती है?'

'बिलकुल सच्ची बात! यह भी एक विचित्र बात है। मुझे बताया

गया है कि उसने पहले यह मालूम किया कि जेल में कौन-कौन है और फिर मुझसे मिलने के लिए अपना नाम लिख दिया।'

इस पर क्राउज़ेल और हेलियाँस हँसते रहते हैं। वे इस युवती से परिचित हैं। उन्हें यह भी मालूम है कि वह एक आवारा और भावुक स्त्री है जो प्रतिदिन कारावासियों से मिलने आया करती है। वह पहरे-वाले से पूछती है कि किस-किस क़ैदी से कोई मिलने नहीं आया है। जब वह चार पाँच क़ैदी आते हैं जिनसे कि किसी ने मिलनी नहीं की है तो वह उन्हें अच्छी तरह देख लेती है। वह इनमें से तीन या चार में अपना समय बाँट देती है और बातचीत के एक कमरे से दूसरे कमरे में जाकर 'अपने' क़ैदियों से मिलती फिरती है। किसी न किसी कारण वह सबसे ख़ुश होती है और अपना बनावटी प्रेम दिखाकर उन सबको ख़ुश किया करती है। वास्तव में उसका यह व्यवहार बिलकुल झूठा ही नहीं हुआ करता; क्योंकि क़ैदियों की दशा से वह सचमुच बहुत कुछ प्रभावित हो उठती है। यथार्थ में उसके लिए सब से बड़ा आकर्षण यह है कि क़ैदियों को स्त्री के सम्पर्क के बिना ही सारा समय व्यतीत करना पड़ता है। वह मानो यह सोचा करती है कि वह इन सबसे थोड़ा-थोड़ा अपना सतीत्व भंग करायेगी। एलोनियो फिर भी आग्रह करता है—

'जहाँ तक स्त्रियों का संबंध है मुझे अपने भाग्य से कोई शिकायत नहीं है!' क्राउज़ेल और हेलियाॅस उसके इस भ्रम को दूर नहीं करना चाहते। अतः उसको इस मिथ्या कल्पना में निमग्न छोड़ देते हैं। तम्बाकू की जगह एलिनियो किर्मिच का सिगरेट पीता है। वह इस बात को यह सोचकर संवरण कर लेता है कि न जाने कब तक उसको जेल में रहना पड़े और उसकी पत्नी को मेहनत मज़दूरी करके पेट भरना पड़ेगा। एलिनियो एक ठिंगना आदमी है। उसके चौड़े माथे पर तीन गहरी बड़ी रेखाएँ हैं। उसकी कलाइयों पर रस्सी बँधने के निशान

हैं। वह बहुधा कहा करता है कि जब सिविलगार्ड उसे गली में ले जा रहे थे तो उन्होंने उसकी हथकड़ियाँ खोल दीं और कारपोरल ने एक मोमी रस्सी निकालकर उसकी कलाइयों को इतनी ज़ोर से कसकर बाँध दिया कि एक दो घंटे में उसके नाखुनों और मांस के बीच से ख़ून बह निकला। कारपोरल ने इस रीति को अपना आविष्कार बतलाया। जहाँ रस्सी बँधी थी वहाँ ज़ख्म हो गये और उस जेलखाने की सीली हुई कोठरी में रहने के कारण वह दाग़ पक्के पड़ गये।

'जब मैंने उनसे कहा कि भाई ज़रा देर के लिए तो रस्सी खोल दो, मेरे हाथ बिलकुल कटे जा रहे हैं, तो कारपोरल ने स्वयं मेरे हाथ खोलने के बजाय मेरी पतलून खोल दी।'

इन तीनों ने केवल एक शब्द में इस पर टीका की। एलिनियो ने आस्तीन हटाकर दाग़ों को देखा और द्वेषभाव को हरा कर लिया। वह नानबाई था। गोर्की के नानबाइयों जैसी शिशुवत् विषण्णता उसमें भी थी। उसमें क्रांति का वह भाव भी था जो सारी रात जागकर काम करनेवालों में हुआ करता है। अध्यात्मविद्या की ओर भी उसके मन का झुकाव था जिसका परिचय उस समय मिलता था जब वह किसी विचारशृंखला में निमग्न हो जाता था। वार्डर की उपस्थिति की बात सोचता-सोचता वह डिक्टेटरी की समस्या पर जा पहुँचता था, इसके बाद वह सरकार के उस अपराध की मीमांसा करने लग जाता था जो उसने उसकी स्वाधीनता अपहरण करने में किया था और फिर उस दिन की पूर्णाशा से तल्लीन हो जाता था जब न कोई शासक होगा और न कारागार। वह इन विषयों पर बड़ी सूक्ष्मता के साथ सोचा करता था किन्तु जब वह इन विचारों को शब्दों में व्यक्त करने में अपने आपको असमर्थ पाता था तो उसे बड़ा दुःख होता था। उसके लिए यह असमर्थता स्वाभाविक ही थी, क्योंकि वह इन बातों को सोचा नहीं करता था वरन् केवल अनुभव किया करता

था। अपने प्रति गार्डों का व्यवहार बतलाने के पश्चात् वह मौन और आत्मनिमग्न हो गया।

छपाई का काम करनेवाला क्राउज़ेल इससे कहीं अधिक कम बोलने वाला था। बातचीत में अपने मन की ज़रा-सी झलक दिखाकर वह उसे प्रायः तत्क्षण मुहरबन्द कर देता था। वह स्वयं बहुत कम बोलता था। उसकी धारणा थी कि संसार की सारी बातें पहले ही कही जा चुकी थीं, सारी समस्याएँ पहले ही तर्क-वितर्क होने के पश्चात् तय हो चुकी थीं।

उसके साथ तर्क करना असम्भव था, क्योंकि उसके भाव से यह स्पष्ट ज्ञात होता था कि वह विचार के परे पहुँच चुका था, वह सारी मानवी शंकाओं को लांघ चुका था, वह ध्रुव नियमों के भी बहुत आगे पहुँच चुका था। उसको देखकर कभी तो ऐसा प्रतीत होता था कि वह बिलकुल शून्य हो गया है और कभी ऐसा मानो स्वयं ईश्वर बोल रहा है। उससे पूर्णतः परिचित हुए बिना उसकी क़द्र करना अत्यन्त कठिन था।

अधिकतर छपाई का काम करनेवालों के समान हेलियॉस पीरेज़ भी कम बोला करता था। पूर्वी होने के कारण उसकी भाषा अलंकार-युक्त हुआ करती थी। जब वह बोलना आरम्भ करता था तो ऐसा प्रतीत होता था मानो वह अपनी जेब में से चित्र निकालकर दिखा रहा है। उसके पास इन चित्रों की कमी नहीं थी। वह बहुत-सी बातें सुना सकता था; किन्तु चूँकि उसका ध्यान सदैव वर्तमान घटनाओं पर लगा रहता था इसलिए अधिकतर यही प्रतीत होता था कि वह भूल से नहीं बोल रहा था। वह सूक्ष्मबुद्धि था, वह घटनाओं का उतार चढ़ाव इसी तरह निरूपण करता था जिस तरह कि बैरोमीटर झंझावात को बता देता है। मेरा विश्वास है कि जब काम ज़ोरों पर होता था तो उसका आकार कुछ बढ़ जाया करता था किन्तु जब स्थिति सामान्य होने

लग जाती थी तो वह सिकुड़कर पूर्ववत् हो जाता था।

इस समय ये चारों, एक पंक्ति में, दीवार का तकिया लगाये चुपचाप बैठे हुए थे। लिबर्टो कुछ भी नहीं सोच रहा था। सहन की तेज़ रोशनी की वजह से उसकी आँखों की नीली पुतलियाँ सिकुड़कर सुई की नोक जैसी दिखाई दे रही थीं। मध्याह्न कालीन सूर्य की अन्तिम किरणें उसके लाल सिर को रंजित करके परावर्तित हो रही थीं। एलिनियो पूर्णतः शान्त था। वह कहने लगा—

वह मुझ पर अभियोग नहीं चलायेंगे। मैं एक नेता हूँ। चाहे मुझे एक सप्ताह का दण्ड मिले या एक साल का। किन्तु ब्रह्माण्ड के जीवन काल में एक वर्ष का महत्त्व ही क्या है? सौ वर्ष भी किस गिनती में हैं? उन प्राकृतिक नियमों के शासन-काल के सामने जो सारे ब्रह्मांड को चलाते हैं हमारा 'अनन्तकाल' भी एक क्षण मात्र है।

इसके बाद उसने कन्धे उचका दिये। जोज़ी फ़ाउज़ेल यह सोच रहा था कि उसने कई पौंड टाइप बचा लिया था। चूँकि वह एक और छापनेवाले के पास रखा था पुलिस को उसका पता न लग सकेगा। यदि झगड़ा उठ खड़ा हो तो वह उत्तरीय इलाके के घोषणा-पत्रों को कम्पोज़ कर सकेगा।

श्रीमान् हेलियाँस क्रोध में भरे हुए बड़बड़ा रहे थे—

'वैलेंशिया निवासी कामरेडगण उग्र-समाजवादियों के साथ बैठे हुए मज़े से क़हवे की प्यालियाँ पी रहे होंगे और मेरे भाग्य में यहाँ जेल के सहन में टहलना और गिनी हुई सूखी रोटियाँ खाना है।'

वहाँ एक गंजी खोपड़ीवाला वृद्ध भी था। उसकी खोपड़ी की बनावट बड़ी बेहूदा थी। वह इतना दुबला-पतला और सफ़ेद था कि यह मालूम होता था मानो उसको सफ़ेद मोमी तेल में खूब तर करके कुछ दिन दीवार पर लटकाकर सुखाया गया हो। वह जड़ी-बूटियों का

काम करता था। उसने बाल उगाने की एक दवा भी ईजाद की थी। वह प्रत्येक मनुष्य को एक लम्बा खर्रा दिखाता फिरता था जो उसने प्रजातंत्र के सभापति, स्पैनिश एकेडमी और अटेनियों के नाम भेजा था। उससे अधिक हास्यास्पद मनुष्य होना असंभव था और जितनी बार वह लोगों को अपना दुखड़ा सुनाता था लोग उसकी हँसी उड़ाते थे और उस पर फ़िक़रे कसते थे। उसकी पत्नी युवती और विलासप्रिय थी। एक दुष्टात्मा पुलिसमैन उसका प्रेमी था। संभवतः अपने घर के भीतर निज स्वत्व रक्षा के हेतु जब इस वृद्ध ने इन दोनों से कुछ कहा सुना तो उस पुलिसवाले ने उसके मुँह पर चपत लगाई और 'सरकारी कर्मचारी को धमकाने तथा बिना लैसंस हथियार रखने के अपराध में' उसे थाने ले गया। अब वह यहाँ जेल में सड़ रहा था और वहाँ उसकी पत्नी और पुलिसमैन मज़े से गुलछर्रे उड़ा रहे थे। जज साहब के अशिष्ट व्यवहार की भी उसे बड़ी शिकायत थी। कैदियों का उससे बड़ा मनोरंजन होता था। वह इतना दब्बू और नीच मालूम होता था कि उसके मुकाबले में प्रत्येक कामरेड को अपने ऊपर गर्व-सा होने लगता था। वह मानो एक उगालदान था! केवल एलिनियो ही उसको अपना हमजोली समझकर दुःखित हुआ करता था।

वार्डर ने उसे पुकारा तो वह फ़ौरन उसके पास दौड़ गया। जब वह लौटकर आया तो हेलियॉस ने पूछा—

'क्यों, क्या था? क्या कोई मिलने आया था?'

'नहीं तो, श्रीमान्। एक पत्र था।'

उसने एक लिफ़ाफ़े में से कई खर्रें निकालकर कहा—

'यह मेरी भतीजी का पत्र है। मैंने उससे जेल में अपने पास पत्र भेजने को कहा था। वह बेचारी अपनी सारी बातें लिखकर भेज दिया करती है। मैं उसे अपने साथ बिलवाओ ले गया था। अब वह अपने घरवालों के साथ यहीं है।'

उसने जेब से कुछ मलगोजे हुए पर्चे निकाले और उन्हें हमारे हाथ में देते हुए कहा—

'जब एक मास पहले मैं जेल में आया था तो उसने यह पहला पत्र लिखा था। उसे हम मियाँ-बीबी के झगड़े का कुछ हाल मालूम नहीं है। बीस बर्ष की होने पर भी वह बच्चों की तरह सीधी-सादी है।'

सब लोग ऊबे हुए थे। समय काटने के लिए कुछ न कुछ करना तो था ही। लोगों के कहने पर लिबर्टो उस पत्र को पढ़कर सुनाने लगे—

'शनिवार, ६ अप्रैल। जब मैं सोकर उठी तो यह सोचने लगी कि क्या कल की तरह आज का दिन भी अशुभ सिद्ध होगा। मैं सौदा खरीदने के लिए बाज़ार गई। मैंने वहाँ 'लिबरल' की एक प्रति मोल ली। उसमें 'बच्चों की दाइयों' संबंधी दो इश्तिहार थे। उनमें से एक जगह सैरानोस्ट्रीट के नुक्कड़ पर थी। मैं वहाँ गई। एक बुढ़िया ने द्वार खोला और मुझे एक विलक्षणभाव से देखकर पूछा—'जल्दी में तो नहीं हो :' मैंने उत्तर दिया—'नहीं तो।' इस पर उसने मुझसे कुछ देर प्रतीक्षा करने को कहा। जब वह चली गई तो मैंने देखा कि मकान बहुत अच्छा था, स्पेनी ढंग पर बना हुआ था और बिलकुल नया था। मैं विवश-सी होकर वहाँ नौकरी लगने की बात सोचने लगी। कुछ देर पश्चात् उस बुढ़िया ने आकर मुझसे सार्टिफ़िकट माँगे। जब मैंने यह उत्तर दिया कि मेरे लिए नौकरी करने का यह पहला मौक़ा है तो उसने कहा कि हम अनुभवी दाई चाहते हैं। तत्पश्चात् मैं दूसरी जगह पहुँची। वह वनस्पति-विभाग के बाग़ के निकट है। जब मैं वहाँ पहुँची तो साढ़े बारह बज चुके थे। मिलने का समय निकल चुका था। इसमें मेरा क्या अपराध था? फिर मैं रिटायरो पार्क में जाकर एक सीट पर बैठ गई। मैं अपने नौकरी ढूँढ़ने का कारण सोचने लगा। सहसा मुझे वह दिन याद हो आया जब मैं बिलबाओं में

कला तथा शिल्प विद्यालय के फाटक के सामने बैठकर इस सोच में पड़ी हुई थी कि इसमें प्रविष्ट होऊँ या न होऊँ। यदि मैं वहाँ पढ़ने लगती तो आज यहाँ मैड्रिड में नौकरी की खोज में क्यों मारी-मारी फिरती। वे लोग।मेरे संबन्धी नहीं थे, इसीलिए खाने-पीने पर ताने नहीं मारते थे। इसके अतिरिक्त वे मुझे पढ़ने की सुविधा देने को तैयार थे। किन्तु यहाँ इसका निषेध किया जाता है। मेरे भाई भी कहने को तो बराबर यही कहते रहते हैं कि वे मेरा खर्च उठा सकते हैं किन्तु उनकी हार्दिक इच्छा यही है कि मैं पढ़ने के चक्कर में न पड़ूँ और उनकी तरह कोई नौकरी कर लूँ। उनकी यह बात पक्की है। दुनिया में पैसे का राज है। जिसके पास पैसा है वह सबका प्रिय होता है, उसका हर एक सम्मान करता है। सभी का यही हाल है। किसी बिरले ही के हृदय में दया का यथार्थ भाव होता है। जब मैं बिलबाओ में थी तो वे लोग मेरी हँसी कभी नहीं उड़ाते थे। मैं निशंक भाव से उनके सामने अपने मन की सारी बातें कह दिय करती थी।

'सोमवार, ११ अप्रैल। आज कोई विशेष बात नहीं हुई। आज कई अपरिचित मेहमान आनेवाले हैं। वे बिलबाओ निवासी हैं। इस-लिए मैं सारे दिन यही कल्पना करती रही हूँ कि वे मुझे पसंद आएँगे। चूँकि हमें सोने के सारे कमरे ठीक-ठाक करने पड़े हैं मैं आज बहुत थकी हुई भी हूँ।

'मंगलवार, १२ अप्रैल। मैं रात देर से सोई थी। काम करने की थकान और मेहमानों के संबंध में सोचते रहने के कारण मुझे नींद नहीं पड़ी। इसका एक कारण यह भी था कि ऊँघ में मुझे सफ़ाई करने की आवाज़ आ रही थी और मेरे कान में यह भी भनक पड़ी कि इतना परिश्रम करने के पश्चात् भी वह आते दिखाई नहीं देते। और फिर अंत में मुझे घंटी का शब्द सुनाई दिया और कई आदमियों की बोल-

चाल की आवाज़ आई। मैं उठकर उनका स्वागत करने पहुँची तो वे लोग खाना खा रहे थे। माता-पिता दोनों भले मानस मालूम होते थे। पुत्र कुछ कर्कश स्वभाव का मालूम होता है। परन्तु इसकी कोई परवा नहीं। इसके बाद वे सोने चले गये। दो बजे तक मैं अकेली बैठी रही। जब वे सोकर उठे तो मैंने उन्हें खाना परोसा। जब मैं खाना परोस रही थी तो उन्होंने मुझसे बिलबाओ का जिक्र किया। यद्यपि वह एक छोटा-सा नीरस स्थान है फिर भी मुझे वह बहुत प्रिय मालूम होता है।

'मंगलवार, १२ अप्रैल। मेहमानों ने मुझ से बिलबाओ चलने के सम्बन्ध में प्रश्न किया। मेरे विचार में ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। यदि अब वे मुझे साथ नहीं ले जायँगे तो मुझे बड़ा दुःख होगा।

'बुधवार, १३ अप्रैल। आज छुट्टी का दिन था। सभी ने ख़ूब मौज उड़ाई। किन्तु मैं सबसे ज्यादा मज़े में रही। प्रातःकाल हमने जुलूस की बहार देखी और रात को सिनेमा देखा। सिनेमा जाने के पूर्व हम लोग एक होटल में आतिशबाज़ी देखने गये थे। उन लोगों ने फिर बिलबाओ की बातें कीं। मुझे उसका कोना-कोना याद है। वे उसके संबंध में जितनी अधिक बातें करते थे उतनी ही मेरी याद भी ताज़ी होती जाती थी। पति महोदय ने पत्नी से कहा कि यह तो बिलबाओ से पूर्णतः परिचित हैं। फिर ख़ूब मज़े में बातें होने लगीं। उन्होंने कहा—हमारे साथ चली क्यों नहीं चलतीं। तुम्हारा हमारी पुत्री के साथ बहनापा हो जायगा। हम तुम्हारे लिए कोई अच्छा प्रेमी युवक खोजकर उसके साथ तुम्हारा विवाह कर देंगे। फिर तो मैं सारी रात इन्हीं विचारों में उलझी हुई जागती रही। उन्होंने यह भी कहा था कि वे मुझे कला और शिल्प के स्कूल में प्रविष्ट करा देंगे।

'शुक्रवार, १५ अप्रैल। वे लोग कल चले जायँगे। क्या पता मुझे

अपने साथ ले जायँगे या नहीं। यदि न ले गये तो जाने की बात सोचना ही व्यर्थ है। चाहे मुझे कितना ही दुःख क्यों न हो मुझे इस बात से अपना मन हटा लेना चाहिये। मनुष्य अभ्यास से हर एक बात सहन कर लेता है। मैं कल फिर नौकरी की खोज में जाऊँगी।

लिबर्टो इसके आगे पढ़ना नहीं चाहता था। उसने वह पत्र वृद्ध को वापस कर दिया। बुड्ढे ने कहा—

'मैं उसके लिए आराध्यदेव हूँ।' फिर विषादमय स्वर में वह कहने लगा—

'वह बेचारी बड़ी फूहड़ है।'

हमें यही आश्चर्य हो रहा था कि उसकी लड़की ने इस वृद्ध की बातों का किस प्रकार विश्वास कर लिया। यह खूसट उसके आंतरिक भावों को अवश्य पूर्णतः समझता होगा। पत्र जेब में रखकर वह वहाँ से चला गया। वह अपने पैर इतने ज़्यादा ऊँचे उठाकर चल रहा था कि वह स्वयं उसकी टाँगों में लग रहे थे। तदनन्तर दो अफ़सरों ने आकर लिबर्टो, एलिनियो, फ्राउज़ेल और हेलियास को पूछा। वे चारों उठकर खड़े हो गये। तीसरे पहर का समय था। चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी। जेलखाने की दीवार के उस तरफ़ एक युवक फुटबाल खेलता हुआ कह उठा—

'फ़ाऊ! फ़ाऊ! गोल नहीं हुआ।'

यद्यपि इस शब्द का फ़ाऊ से कोई संबंध नहीं था फिर भी उस मेले के मूर्खराज का चित्र हमारे नेत्रों में फिर गया।

इन चारों अपराधियों को पृथक्-पृथक् कोठरियों में बंद कर दिया गया। दूसरे दिन वे अलग-अलग खानोंवाली लारी में बिठाकर सेंट्रल जेल पहुँचा दिये गये। वहाँ उन्हें तहखाने की काल कोठरियों में ठूँस दिया गया।

अर्जेन्टाइन महोदय कारागार के सहन में इधर-उधर टहल रहे

थे। धीरे-धीरे इशारे करते हुए आप कह रहे थे—

'इन सब लोगों को ये छोड़े दे रहे हैं। बस मुझी को जेल में रखेंगे।' फिर हर्ष से फूले न समाकर आप कहने लगे—

'उन्हें इस बात का पूर्ण ज्ञान है कि वह क्या कर रहे हैं।'

वह अपने आपको खतरनाक आदमी समझे जाने ही में खुश था।

———

जनोन्माद

उन्मत्तता की भी पराकाष्ठा होती है, रोगावस्था में भी विश्राम के कुछ क्षण होते हैं और युद्ध में भी शांति की कुछ घड़ियाँ हुआ करती हैं। चतुर्थ रविवार के तीसरे पहर का समय था। सूर्य का प्रकाश अनुग्र तथा शांतिप्रद था। वायुमण्डल समद था। मैड्रिड मधुसिक्त-सा प्रतीत होता था। विशाल राजमार्ग विजन थे, किंतु उनके सहसा जनाकीर्ण हो जाने की संभावना थी। सरकार ने युक्ति के साथ मुख्य-मुख्य स्थानों में गार्ड और एजेन्ट नियुक्त कर रखे थे। अफ़सर लोग मोटर-साइकिलों पर तेज़ी के साथ गश्त करते फिरते थे। बड़े-बड़े अफ़सर मोटरकारों पर घूम रहे थे। चारों ओर देहात का-सा सन्नाटा छाया हुआ था। मार्गों की दो तरफ़ा वृक्ष-श्रेणियों के नीचे उसी तरह की शांति थी, जिसका कि रोमन महाकवि वर्जिल ने अपने महाकाव्यों में गायन किया है।

मज़दूरों की समस्त संस्थाएँ—ज़िला, मंडल, स्थानीय तथा ग्रूप कमेटियाँ और छोटे-छोटे 'कच्च' भी—सभी बड़ी सावधानी से अपना-अपना काम कर रही थीं। बराबर इधर से उधर समाचार आ-जा रहे थे। सब काम मिलकर हो रहा था। मैड्रिड का जन-समुदाय उन्मत्त हो रहा था। वह केवल इतना सतर्क रहना चाहता था कि जिसमें कोई विश्वासघाती मज़दूर काम पर न जाने पाये और विघ्नात्मक कार्य अधिक से अधिक हानिकारक सिद्ध हो। यदि इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किसी को आहत करना या वध कर डालना भी आवश्यक जान पड़ा तो वह अवश्य ऐसा भी करेंगे। किंतु ऐसा करने में वह भावुकता को पास तक न फटकने देंगे और बिना आवश्यकता के किसी को पीड़ित भी न करेंगे। रोटियों की समस्या अभी तक सामने नहीं आई थी। सदा की भाँति कोई इक्का दुक्का भूखों मर रहा था ; किन्तु इन अभागों में क्रान्तिकारी मज़दूर कोई विरला ही था। इनमें अधिकतर वे लोग थे जो जीवन-संग्राम में परास्त हो चुके थे, जिनमें नैतिक शक्ति का अभाव-सा हो गया था, जिनके लिए संसार में कहीं भी कोई आशा नहीं देख पड़ती थी। गोदामों पर छापा मारने से जो सामग्री मिली थी, उसको पाँच भिन्न-भिन्न स्थानों में छिपा कर रख दिया गया। बड़ी सावधानी के साथ उस सामान की सूची तैयार की गई थी। हड़ताली लोग अभी उसी से गुज़र कर रहे थे। यह बात असन्दिग्ध थी कि अभी दो या तीन दिन के लिए भर पेट सामान मौजूद है। इस बीच में कहीं और छापा मारकर सामान ले आएँगे। विलाकम्पा की दृष्टि में एक बहुत बड़ा गोदाम पहले ही से खटक रहा था। सूखी हुई मछली, मसाला लगा हुआ सुअर का गोश्त और बढ़िया आटा—ये सब चीज़ें वहाँ अत्यन्त प्रचुर मात्रा में मौजूद थीं। यह प्रश्न बाद को पेश होगा। उन्हें कहीं से हथियार और गोली-बारूद भी तो लाना है। पेट भर खाना और धूप तापना—यह तो बूर्ज्वा लोगों का स्वभाव है। मानव-जीवन में अन्य महत्तर कर्तव्य

भी तो हैं। यह बात तो शीघ्र ही सुस्पष्ट हो चुकी थी कि जो सफलता उन्हें मिली थी उस पर उन्हें अधिक गर्व नहीं करना चाहिये। यदि समस्त स्पेन ही क्यों न उनकी ओर होता तो भी सरकार शान्तिपूर्वक अपनी समस्त पुलिस तथा सैन्य शक्ति से स्थिति को अधिकृत करने का पूर्ण प्रयत्न करती। इस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था था कि सरकार पीछे हट गई है। उसने वसन्तकालीन सूर्य से प्रकाशित गलियों, सड़कों और स्कायरों पर से अपना अधिकार हटा लिया है। किन्तु हम मन्त्रियों पर आक्रमण करने में अब भी असमर्थ थे, सेन्ट्रल पोस्टल सिस्टम या टेलिफ़ोनों के पास तक हमारी पहुँच न थी। ऐसा प्रतीत होता था मानो वे हम से कह रहे हों—'यदि तुम चाहो तो गिरजाघरों में आग लगा सकते हो, हम कुछ भी नहीं कहेंगे।' हमें गिरजाघरों से कोई दिलचस्पी ही नहीं है। अतएव बिना टाई लगाये, खुश-खुश, स्वतंत्र वायुमन्डल में श्वास लेते हुए गलियों में इधर-उधर घूमते फिरते हैं। हम अपनी भ्रांतिजनक विजय पर फूले नहीं समा रहे हैं। सब कुछ हमारा ही है। हरएक मनुष्य प्रत्येक वस्तु का अधिकारी है। जनता उन्मत्त हो रही है। किन्तु समुदाय का उन्माद व्यक्तिगत उन्माद के सदृश दूषित नहीं हुआ करता। जिस अवस्था को 'सार्वजनिक मनःस्थिति' के नाम से पुकारा जाता है वह अधिक गम्भीरता का विषय होती है। सूबेदार और बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ भी उसके साथ समझौता करने के लिए व्यग्र हो उठते हैं। परन्तु हमारे समुदाय का उन्माद निषेधार्थक है। उसके साथ समझौता किया ही नहीं जा सकता। किन्तु जिस प्रकार गणित में थोड़ा-थोड़ा मिलकर बहुत हो जाता है इसी प्रकार बहुत से 'ना' मिल कर 'हाँ' का अर्थ रखते हैं। परन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि जनता के मन में जब राजनीतिक शासन-सत्ता के प्रति निषेधार्थक भाव जाग्रत होता है तो उसका मूल्य नहीं के बराबर होता है। यदि

जन समुदाय शासन-सत्ता का विरोध करना चाहता है. तो उसे ऐसा करने से रोकता ही कौन है !

किन्तु जनसमुदाय के उन्माद में तीन बिलकुल भिन्न प्रेरणाएँ हैं, जिनका सम्बन्ध नगर के तीन विभिन्न भागों के साथ है । उदाहरणार्थ वैलेकास निवासी सेना में विद्रोह फैलाने को तत्पर हैं । इसका परिणाम चाहे कुछ भी हो किन्तु वह उसे लाभप्रद ही समझते हैं । उनका मत यह है कि क्रांति के मार्ग में कोई भी प्रयत्न सर्वथा व्यर्थ नहीं होता। यदि एक बार असफलता हो तो फिर प्रयत्न करना चाहिये और यदि अन्य साधन या मार्ग न हो तो पूर्ववत् ही चेष्टा करते रहना चाहिये, चाहे वह कितना ही निराशापूर्ण मार्ग क्यों न हो। क्वाटरों कैमिनॉस वालों की यह राय है कि सब सामान एकत्र करके फ़ौरन गृह-युद्ध आरम्भ कर दिया जाय। यदि यह प्रस्ताव अस्वीकृत हो जाय तो वे काम पर लौट जाने के पक्ष में हैं। और फिर नगर के निम्न भागों में रहनेवाले नम्र दल के लोग हैं जिन पर समाजवादी सिद्धांतों का प्रभाव है। उनका कहना यह है चूँकि अब जर्मिनल, प्रॉग्रेसो तथा एस्पार्टको का मृत्यु संबंधी प्रदर्शन ख़ूब ज़ोरों के साथ किया जा चुका है, अतः अब काम पर लौट चलना चाहिये।

इन तीन विभिन्न प्रेरणाओं के स्पष्ट दृष्टिगोचर होने का कारण यह है कि जितनी गुप्त सभाएँ हुई हैं उनमें सबल संस्थाओं के प्रतिनिधियों की अनुपस्थिति में नियम के विरुद्ध इधर-उधर से चुने हुए डेलिगेटों ने भाग लिया है। फिर भी वसंत ऋतु में तीसरे पहर गलियों में भ्रमण करना और आशा की तेज़ शराब पीकर उन्मत्त हो जाना बड़ा सुहावना मालूम होता है। बड़ी-बड़ी बातें बिलकुल समीप और निश्चित प्रतीत होती हैं। गलियों में अब भी बहुत-से ऐसे सहृदय कामरेड उपस्थित हैं जिनमें आन्दोलन को गहनतर तथा अधिक बलशाली बनाने की क्षमता है। उसको ज़्यादा दूर तक फैलाना इस समय सम्भव नहीं है। आज-

कल तो परस्पर अपरिचित मज़दूर भी गलियों में खड़े होकर इस प्रकार की बातचीत किया करते हैं—

'तुम काम पर तो नहीं जा रहे हो ?'

'हम काम पर चले तो गये हैं किन्तु, ज्यों ही गली से दो एक गोलियों की आवाज़ आती है हम वैसे ही औज़ार फेंककर कहते हैं कि हमें धमकी दी जा रही है। यदि हम काम करने को तैयार हों तो हमारी रक्षा के लिए गार्ड आ पहुँचते हैं ; किन्तु गार्डों को हमारे सिर पर खड़े रखने से हमें काम करने को उत्साहित नहीं किया जा सकता।'

'क्या आप समाजवादी हैं ?'

'हाँ, हूँ तो सही। परन्तु सर्वप्रथम मज़दूर हूँ।'

'हाँ, हाँ। मज़दूर तो मैं भी हूँ। किन्तु हमारे पेशेवाले तो काम पर नहीं जा रहे हैं।'

'आपका क्या पेशा है ?'

'मैं बढ़ई हूँ।'

हाथ मिलाकर वे अपनी-अपनी राह लेते हैं। परस्पर अपरिचित मनुष्य आजकल दूसरे से सिगार माँग लेते हैं, स्वर में स्वर मिलाकर आहिस्ता-आहिस्ता गाया करते हैं, सारांश यह कि वे सब ऐसे असाधारण कार्य करते हैं जो सुखी मनुष्य किया करते हैं। जब कोई लारी या प्राइवेट मोटरकार निकलती है तो उसके ड्राइवर के मुख से लज्जा टपकती है। क्रांतिकारी लोग स्वयं भी उन पर गोली चलाने से पहले मज़दूरों के पारस्परिक भेदभावों के दुष्परिणाम को सोचकर दुःखित हो उठते हैं। वे ड्राइवरों पर गोली न चलाकर टायरों में पंचर कर देना या उन्हें बिलकुल नष्ट कर देना अच्छा समझते हैं। वे यह सोचते हैं कि इन लोगों की आत्मा तो पहले ही से आहत है ; क्योंकि अपनी श्रेणी के विरुद्ध कार्य करने और विश्वासघाती बनने की चोट क्या कोई कम घातक है ! परन्तु इस सूक्ष्म विचार से घोड़े पर रखी हुई उँगली थोड़े

ही रुक सकती है। उँगली दबी और गोली छूटी।

एटोचा स्टेशन के इर्द-गिर्द और पास्यो डि ला डैलिशियस में फिर दंगा हो गया था। मालूम होता है कि रेलगाड़ियों को जारी करने की चेष्टा की गई थी। किन्तु जब कामरेडगण को इस बात का पता लगा तो वे वैलाकास से फौरन चल खड़े हुए। दोपहर होते न होते वे स्टेशन जा पहुँचे। उनकी उपस्थिति तथा उन भयावह अफ़वाहों के कारण जो उन्होंने फैलाईं मुसाफिर डरकर भाग निकले। तदनन्तर सब कामरेड अपने घरों को लौट गये। चौकसी के लिए छोटी-छोटी टुकड़ियाँ वहाँ गश्त करने लग गईं। उस समय इतनी हल्की ड्यूटी पर साथ-साथ टहलना और धूप में सिकना कैसा सुखप्रद प्रतीत होता था। यह टुकड़ियाँ इधर से उधर, उधर से इधर जा-आ रही थीं।

चार बजे के बाद ही, कासानॉवा वहाँ आ पहुँचा। वह नींद में चलता हुआ मालूम होता था। वह पाँच रातें बिना सोए काट चुका था। वह पार्श्वचर सिंडीकेट की एक टुकड़ी के पास पहुँचा। वह उनसे कुछ कहना चाहता था किंतु उनमें से किसी ने उसकी बात तक न पूछी। जब उसने अपना टिकट निकालकर दिखाया, तब उन लोगों में से एक ने पूछा—

'अच्छा। कहो क्या कहना है। क्या तुम हमारे संघ के सदस्य होना चाहते हो?'

'नहीं। मैं तो एक रिवालवर चाहता हूँ।'

वे तीनों चकित होकर उसका मुँह ताकने लगे। उनमें से एक बोला—

'तुम सचमुच बड़े अभागे हो जो ऐसे समय में भी अब तक तुम्हें कोई रिवालवर न मिल सका।'

दूसरे ने कहा—

'अरे, यह तो बड़ी सहज बात है।'

कासानॉवा के नेत्र आशा से चमक उठे।

'क्या यह सत्य है?' उसने कहा, 'क्या सचमुच मुझे रिवालवर दे देंगे?'

उनमें से एक कामरेड के पास दो रिवालवर थे भी, किंतु इस संबंध में वे सब चुप्पी लगा गये। उन्होंने कासानॉवा को टाल दिया। फिर जब उसे यह पूर्ण विश्वास हो गया कि इन लोगों से कहना-सुनना व्यर्थ है तो वह व्यर्थ समय नष्ट करने के भय से वहाँ से चल पड़ा। उसकी टाँगें लड़खड़ा रही थीं। उसकी डगमगाती हुई चाल साफ़ बता रही थी कि वह सोया नहीं है। फिर वह न जाने कहाँ जल्दी से चला गया। उसे यह भय था कि कहीं गत दो रात्रियों की तरह आज की रात बिना रिवालवर मिले यूँही व्यतीत न हो जाय। कोई उसे रिवालवर देने को राज़ी न होता था। उसके देखने और बोलने के भाव से हर एक संदिग्ध हो उठता था।

इसके अतिरिक्त, अब जब कि रिवालवरों और कारतूसों की इतनी घोर आवश्यकता थी, तो एक आत्मघाती को रिवालवर और कारतूस देकर उन्हें व्यर्थ खोने को कोई वजह भी नहीं मालूम होती थी। वह श्रमजीवियों की गोली-बारुद बिना बर्बाद किये हुए भी आत्मघात कर सकता था। कासानॉवा निरवशेष असफलता का एक निकृष्ट उदाहरण था, उसके सँभलने की लेशमात्र भी संभावना नहीं थी, वह असफलों में असफल था। वह उस दिन तीसरे पहर बराबर इधर-उधर मारा-मारा फिरता रहा। आकाश स्वच्छ और निर्मल था। चारों ओर हर्ष का साम्राज्य था। जगह-जगह ग्रामीण खेल तमाशों और मेलों के इश्तिहार बाँटे जा रहे थे। एक जगह एक उपन्यास पढ़ा जा रहा था जिसमें दुष्टात्मा लाट पादरियों तथा भग्न हृदया डचों की भरमार थी। उसमें एक छिपे हुए शिशु की भी कथा थी जो उपन्यास के अन्तिम परिच्छेद में महाराजा हो गया। किन्तु इस कासानॉवा ने सारा मज़ा किरकिरा कर दिया।

जब लोगों ने देखा कि वह निरुद्देश्य रूप से इधर-उधर घूम रहा है तो कुछ देर वह उसके पीछे-पीछे चले। एक नुक्कड़ पर मुड़कर वह एक गार्ड पर झपट पड़ा। किसी प्रकार उसे गिराकर उसने उसका रिवालवर छीन लिया। वह उसे लिये हुए बीथि में आया और दो फ़ैर हवा में कर दिये। सान्ध्य वायुमण्डल में उनकी आवाज़ बड़ी दूर तक पहुँची और फिर उदासीन नभमण्डल में विलीन हो गई। उसके गोली छोड़ने का वही परिणाम हुआ जो दौड़ के मैदान में हवाई गोली छोड़ने का हुआ करता है। वह भागा, उसके पीछे वह गार्ड दौड़ा जिसका वह रिवालवर था। उसके पीछे दो और गार्ड दौड़े जो गश्त करते हुए इधर निकल आये थे। चूँकि कासानाँवा ने इन लोगों पर फ़ैर किये थे, अतएव इन लोगों ने उसे घेरकर पकड़ लिया और एक कठपुतले के समान उसे खरंजे पर दे मारा! इस सारी घटना को मज़दूर लोग ऐसे उदासीन भाव से देखते रहे मानो किसी अन्य देश के नट अपना सामान लगाकर कोई नकल कर रहे हों और ये लोग उनकी भाषा तक न समझते हों। कासानाँवा मज़दूरों जैसे कपड़े पहने था। उसके पास टिकट भी था। किन्तु यह पर्याप्त नहीं था। वह अपने आपको बहुत ज़्यादा ज़लील कर चुका था। उसने प्रतिकार, खाने-पीने अथवा सशस्त्र सहायता के लिए एक फूटी कौड़ी भी नहीं दी थी। लोग पूछते थे—यह किस खेत की मूली है? वह उसको अपना साथी नहीं समझते थे। मज़दूरों के भेष में रिवालवर माँगनेवाला एक अपरिचित मनुष्य, कौन जाने वास्तव में क्या था? वह अत्यन्त घृणास्पद प्राणी भी हो सकता था।

किन्तु इस दुर्घटना से तीसरे पहर की शान्ति भङ्ग हो गई। अँधेरा होने से पूर्व ही गुप्त शयनागारों तथा तहख़ानों में लोगों की भीड़ें लग गईं। झुटपुटा होते ही सभाएँ होने लगीं। सभी का यही एक मुख्य उद्देश्य था—पारस्परिक सूचना, आदान-प्रदान तथा सम्पर्क स्थिर

रखना। लोगों के पतों तथा फ़ोन् नम्बरों को स्मृति द्वारा निश्चित करने में बड़े-बड़े ज़ोर लगाये गये। बीजाक्षरों में लिखे हुए काग़ज़ात को भी इधर-उधर ले जाना बड़ा भयावह था। अभी रात नहीं हुई थी। अभी केवल छः बजे थे। सूर्यास्त होते ही गलियों में एक विलक्षणता प्रतीत होने लगी। नगर के उन भागों से जहाँ कारखाने चल रहे थे मज़दूरों के झुंडों के निकलने का शोर सुनाई पड़ रहा था, विश्वासघाती मज़दूर छुट्टी का भौंपू बजते ही जब बाहर निकलने लगे तो गोलियाँ भी छूटीं। इनमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी—ऐसा होना नितांत स्वाभाविक ही था। सूर्य के अस्त होते ही सारा आकाश लोहितवर्ण हो उठा और नीचे, नगर पर अन्धकार छा गया। भौंपुओं के बजते ही जनोन्माद पराकाष्ठा पर जा पहुँचा और रात्रि का भीषण काण्ड आरंभ हो गया।

इस हर्षातिरेक के समय जनसमुदाय ने अपना 'शांति का गीत' गाया। जब कि मिठाई के कारखानों से लौटती हुई अल्पसंख्यक मज़-दूरिनों को स्त्रियाँ लान-तान कर रही थीं और कुछ लोग मोड़ों से छिप कर विश्वासघातियों पर गोलियाँ छोड़ रहे थे, भीड़ गाना गाने में मग्न थी। ये सब एक गुप्त स्थान में खड़े हुए थे, किसी को इस बात का ज्ञान नहीं था कि आवाज़ कहाँ से आ रही है। किंतु सामर इस गुप्त सङ्गीत पर कान लगाये हुए कुछ देर चुपचाप खड़ा रहा। विलाकम्पा का भी यही हाल था। किंतु स्टार वीरता के साथ गा रही थी—उसके कंठ स्वर में क्रांति का भाव ओतप्रोत था। वह गीत युद्ध का महान् गीत था—उस युद्ध का जो अब प्रत्येक क्षण दृढ़तापूर्वक समीपतर आता जा रहा था। यह एक नूतन संगीत था जिसके नियम अज्ञात थे, जिसके नियमों का प्राचीन बूर्ज्वा नियमों से कोई संबंध नहीं था, प्राचीन नीति से जिसे कोई लगाव नहीं था—यह तो हिंसाजनित एक नूतन आनन्द था! किंतु यह आनन्द सरल एवं विशुद्ध था, जिसमें

कासानॉवा के लिए कोई स्थान होना ही असंभव था ।

रात्रि का आगमन होते ही ग्रूपों और 'कक्षों' ने चारों ओर सूक्ष्म दृष्टि से देखा और निशाकार्य की प्रतीक्षा करने लगे । भिन्न-भिन्न कमेटियों ने अपने-अपने कागज़ात सिलसिलेवार लगाये और सभास्थलों पर पहुँचने का सर्वश्रेष्ठ मार्ग निश्चित करने के लिए मंत्रणा की। निश्चित पथ पर अग्रसर होने के पूर्व प्रत्येक कामरेड ने अपनी जेब में हाथ डालकर रिवालवर टटोला । फिर वे भीड़ में जा मिले । वे सब वही शब्द रहित गीत गा रहे थे, जो उन सबके हृदयों में तरंगित हो रहा था, जो भावुकता से अलिप्त होते हुए भी उन्हें इतना उत्तेजित किये दे रहा था कि उनकी नाड़ी का स्पंदन भी अति तीव्र हो उठा था ।

अब यह बिछुड़ने की बेला थी जब कि प्रस्थान के पूर्व प्रत्येक मज़दूर उसी संगीत को हृदय में भरे हुए अपनी प्रियतमा से विदा माँगता हुआ कहता है—

'यदि कुछ हो जाय तो...'

वह कुछ घड़ियों के लिए विदा माँगकर जाता है। किन्तु इन घड़ियों का शताब्दियों में परिणत हो जाना भी संभव है । अलंकार रूपिणी शताब्दियाँ नहीं वरन् वास्तविक शताब्दियाँ । और उसकी प्रेमिका सब बातें ध्यान देकर सुनती है और उससे पूर्णतः सहमत हो जाती है।

पुलिस का जाल। सामर और अम्पारो

एक भालूरूपी मेघ ने चंद्रमा को ढक लिया था। इस मेघ के चारों ओर पीले रंग का एक मंडल था। क्या इस बादल के किनारे पारदर्शक थे या इस भालू के रोओं में से प्रकाश छन रहा था? किन्तु अब सचमुच इस भालू ने अपनी छोटी-सी गरदन और बालोंदार सीने को उत्तरीय उपांत के ऊपर उठा दिया। मेघ ने अपनी आकृति वैसी ही रखते हुए अपना शरीर बढ़ाना आरम्भ कर दिया। ग्रेको ने, जो उस 'तमाशे के मूर्खराज' पर गोली चलानेवालों में से एक व्यक्ति था, सिर उठाकर इस आकाशगामी भालू को देखा। उसने अरबैनो से कहा—

'ज़रा देखो तो क्या हो रहा है। सिर उठाकर फ्राऊ के दर्शन कर लो।'

अरबैनो भी ग्रेको के साथ विनोद में सम्मिलित हो गया। फिर उसने अपने स्थान से उत्तर दिया—

'क्या तुम्हें मालूम है कि वह फ़ाऊवाला प्रसंग केन्द्रीय पुलिस के सिर पर बम सदृश फटा है ? क्या तुमने आज रात के समाचारपत्र पढ़े हैं ?'

उस रात को तीन पत्र प्रकाशित हुए थे और उन तीनों में उस प्रसंग का विस्तृत वर्णन था। उसकी हत्या क्यों की गई, इस विषय पर अनेक विवरण दिये गये थे जिनसे यह प्रसंग बहुत लंबा हो गया था। उस नीच गुप्तचर को उन्होंने अगणित गुणों से अलंकृत किया था। वह एक उद्योगशील श्रमजीवी था, उसका स्वभाव शांत तथा दृढ़ था, उसका चरित्र पूर्णतः निष्कलंक था। ग्रेको ने हँसकर कहा—

'उन्हें दक्षिण बैंक या वैलेडालिडवाले फ़ार्म का हाल मालूम नहीं है।'

'यदि उन्हें मालूम भी होता तो भी उससे कोई अन्तर न पड़ता।'

फ़ाऊ ने कई जुर्म किये थे। ग्रेको ने विदग्धभाव से कहा—

'तुम्हें मालूम है कि मैं क्या कहनेवाला हूँ ?'

'कहो न ?'

'जो कुछ टीका टिप्पणी 'वीजिया' के संपादक ने की है और जो कुछ संवाद-दाताओं ने लिखा है उस सबका मैं यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि फ़ाऊ की सच्चरित्रता का श्रेय हम अपने ऊपर ले सकते हैं। संसार का नियम है कि जब कोई मरजाता है तो हर कोई उसके गुण गाने लगता है, उसकी बुराई कोई भी नहीं करता। इस बात पर तुम विचार करोगे तो तुम्हें भी मेरी बात जँच जाएगी।'

किंतु अरबैनो ने कंधे उचकाकर कहा—

'निस्संदेह तुम इस प्रसंग से उद्विग्न हो उठे हो।'

ग्रेको खिलखिलाकर हँस पड़ा। अब फ़ाऊ ने मजदूरों की बस्ती को भी ढक लिया। ग्रेको ने इस प्रकार अपनी टीका समाप्त की—

'बूर्ज्वा होते हुए भी वह मनुष्य तो हैं ही। अतः ये लोग भी इस

नाते से विश्वासघातियों और मुखबिरों को सबसे नीच और गिरा हुआ समझते हैं।'

यह स्पष्ट था कि ग्रेको अपनी बात से स्वयं प्रसन्न था। ये दोनों साथ-साथ चले जा रहे थे। बस्ती में अंधेरा था। विश्वासघाती मज़दूर जहाँ कहीं मरम्मत करने जाते थे वहीं उनकी जान के लाले पड़ जाते थे। उनकी अवस्था उत्तरोत्तर विषमतर होती जाती थी। अतः उन्होंने काम करना बंद कर दिया था। इस इलाक़े में कहीं प्रकाश न था। आकाशस्थ फ़्राऊ की आकृति बड़ी भारी तथा हास्यास्पद थी। केवल उसके किनारों पर चमक दिखाई देती थी। चुंगी के करमुक्त नलों के इर्द-गिर्द लोग सोये हुए थे। ग्रेको तथा अरबैनो बड़ी सावधानी के साथ देहात की ओर बढ़े चले जा रहे थे।

इस इलाक़े के बाहर, जौ के खेतों के समीपवर्ती एक मकान में इन लोगों को एकत्र होना था। उसके पार्श्व भाग में एक बहुत बड़ा पत्थरों का टीला था जो 'तीन मछली' नाम की मछुओं की गली में जाकर समाप्त होता था। यह टीला इर्द-गिर्द के खेतों से ऊँचा था। इस टीले के सभी ओर लगभग दस फ़ीट का बिलकुल सीधा ढाल था। केवल इस मकान के सामने का भाग ऐसा था जिसपर सुगमता के साथ उतरा चढ़ा जा सकता था। मकान का समतल शहर के समतल के समान था। अतएव टीले के ऊपर से उसके धुँधारे के अतिरिक्त कोई भी भाग दृष्टिगोचर नहीं होता था।

जब ये दोनों 'तीन मछली' गली से बाहर निकले तो वह मेघ पश्चिम की ओर जाने लगा था। उसकी आकृति जैसी की तैसी थी। चन्द्रमा फ़्राऊ की टाँगों के मध्य में चमक रहा था। उसका रंग पीला था। वह निष्प्रभ तथा भयावह था। उसके समीप और भी मेघ थे। ग्रेको ने क्रान्तिकारी स्वभावानुसार चारों ओर बड़ी सतर्कता के साथ दृष्टि डाली। तदनन्तर वे पग बढ़ाकर आगे चल पड़े। रात्रि उनके

कार्य के अनुकूल प्रतीत होती थी। यदि सभा के समय कोई दुर्घटना नहीं हुई तो वे प्रातःकाल होते ही फिर आक्रमण आरम्भ कर सकेंगे और उन सारजेन्टों से मिलकर जो उनके पक्ष में हैं रैजिमेंट में विद्रोह फैलाने का प्रयत्न करेंगे। इन सारजेंटो में से दो सब कुछ करने-धरने को तत्पर थे। वे अन्धे स्वप्नवादी थे। वे दोनों ऐसे स्वभाव के मनुष्य थे जो या तो पहले ही हल्ले में मर खप जाते हैं या कृत्कृत्य हो जाते हैं। तीसरा सारजेंट कुछ स्थूलबुद्धि और स्थिर प्रकृति का था। उस पर उन्हें इतना विश्वास नहीं था। ऐसे काम के लिए पगलों की तरह अन्धे होकर काम करनेवाले आदमी ही ठीक होते हैं। विचारशील मनुष्यों से कोई लाभ नहीं होता। विचारशीलता का स्थान गोली चलानेवाले सिपाहियों की श्रेणी से दूर रणनिर्देशकों के डेरे में होता है। ग्रेको ने निश्चयात्मक स्वर में कहा—

'हमारा सोचना-विचारना भी काम करना है।'

जब वे उस निर्जन भूमि का तीन चौथाई भाग तय कर चुके तो उन्हें सहसा रिवालवर छूटने का शब्द सुन पड़ा। उन्होंने भी तत्क्षण अपने रिवालवर निकाल लिए। अरबैनो ने कहा—

'यह निस्सन्देह हमारे ही आदमी होंगे,' और फिर चिल्लाकर कहा—

'कामरेडगण, हम ग्रेको और अरबैनो हैं।'

दो गोलियाँ छूटीं। एक गोली ग्रेको के कान के पास से सनसनाती हुई निकल गई। अरबैनो को अपने समीप की मिट्टी उछटती हुई दीख पड़ी। अब वह दोहरे होकर आगे की ओर भागे। गोलियाँ पचास गज़ के अन्तर से, सीधे ढाल की ओर से आती हुई प्रतीत हुई थीं। इसके पूर्व कि वे ढाल के नीचे पहुँचकर सुरक्षित हो सकें, तीन चार गोलियाँ और आईं। जब वे मकान के बिलकुल निकट पहुँच गये तो अरबैनो ने ग्रेको से पूछा—

'कहीं चोट तो नहीं लगी।'

'नहीं तो।' ग्रेकोने उत्तर दिया।

उन्होंने बड़ी सावधानी से मकान में प्रवेश किया। वहाँ ऐसा घोर सन्नाटा था कि उन्हें पग पग रखना भारी हो रहा था। मकान बिलकुल खाली पड़ा था। उन्होंने दियासलाई जलाकर चारों ओर आँखें फाड़ कर देखा। वहाँ कुछ सुझाई ही न देता था। बड़ी मुश्किल से उन्हें एक बड़ी मेज़ पर रक्खा हुआ एक पर्चा मिला। उसमें लिखा हुआ था—

'मकान चारों ओर से घिरा हुआ है। दक्षिण मार्ग से छोटी नहर की ओर भाग जाओ।'

इसके नीचे एक निरर्थक-सा चिह्न था। ग्रेको ने उसको भली भाँति देखने के पश्चात् कहा—

'उनका यह तात्पर्य था कि हम उस मार्ग से न जाएँ। हमें बाईं ओर फव्वारेवाले रास्ते से चलना चाहिये।'

रात चारों ओर से काटने दौड़ रही थी। ग्रेको ने कहा—

'यह सब किस प्रकार घटित हो सका?'

'ऐसा होना तो नितान्त स्वाभाविक ही था। हम लोगों के विश्वास की कोई सीमा ही नहीं रह गई थी।' अरबैनो ने उत्तर दिया।

एक खिड़की खुली थी। उन्हें पहचल-सी मालूम हुई। ग्रेको गोली छोड़ने को तैयार हो गया किन्तु अरबैनो ने उसे हटककर कहा—

'इसे अभी रहने दो। हमारा निकल चलना सौभाग्य पर ही निर्भर है।'

ग्रेको ने गोली नहीं छोड़ी। वह केवल बड़बड़ाकर रह गया। तदनन्तर वे दोनों पर्चे में लिखे हुए मार्ग से विपरीत दिशा में बाहर आये।

'पुलिस वाले सोच रहे होंगे कि मकान में सशस्त्र कामरेड मौजूद हैं,' अरबैनो ने कहा, 'और वे हम लोगों को बिना जोखिम के पकड़ लेने की उधेड़बुन में लगे होंगे।'

जैसे ही यह दोनों बाहर पहुँचे उन्होंने अपने आपको चारों ओर से गार्डों द्वारा घिरा हुआ पाया। गार्ड इन पर शस्त्र ताने खड़े थे। इन्होंने अपने दोनो हाथ ऊपर उठा दिये। मुँह से कोई बोला तक नहीं। एक एजेण्ट ने आकर इनकी तलाशी ली, रिवालवर लेकर हथकड़ियाँ पहना दीं। फिर संकेत से आगे बढ़ने की आज्ञा दी। ग्रेको 'भागने के क़ानून' की बात सोचता रहा। जब उन्होंने सिपाहियों को संगीनें चढ़ाये हुए देखा तो दोनों की जान में जान आई। उन्हें यह तसल्ली हुई कि इस प्रकार भागने के प्रयत्न के अपराध में उन्हें खुले मैदान में नहीं मारा जायगा। फिर उन्हें अपने एक दर्जन साथी मैशीनगनों के घेरे में खड़े दिखाई पड़े। ये लोग—सब के सब—पकड़ लिये गये थे। फ़ाऊ अभी नभमण्डल में विद्यमान था।

इनके पहुँचते ही सब लोग 'तीन मछली' गली की ओर चल पड़े, मानो उन्हीं की प्रतीक्षा में ये सब अभी तक वहाँ खड़े हुए थे। वहाँ पहुँचकर वे बारकों की ओर मुड़ गये। सामर भी उनके साथ था। वह क़ैदियों की पंक्ति में तीसरे स्थान पर था। उसकी कलाइयों को कैंची की तरह रख कर सीने से बाँध दिया गया था। ग्रेको को सामर के नौ नालवाले प्लेटदार रिवालवर के हाथ से जाते रहने का दुःख था।

'कदाचित् उसको आज ही रात में दूसरा रिवालवर मिल जायगा।' यही सोचकर वह अपना मन समझा रहा था।

बारकों में पहुँचते ही कर्नल ने सामर को पहचान लिया। पुलिस के बयान देने से पहले ही कर्नल ने उसे अपने दफ़्तर में ले जाए जाने की आज्ञा दी और अपनी ज़िम्मेदारी पर उसकी हथकड़ियाँ खुलवा दीं। पुलिसवाले अब क्या कह सकते थे। कर्नल ने सामर को देखते ही पहचान लिया था।

'मैं यह नहीं जानता था कि आप सक्रिय क्रांतिकारी भी हैं।' उसने सामर से कहा।

सामर चुप खड़ा रहा। इस बात ने कर्नल को और भी सहृदय बना दिया। सामर ने उसमें अपनी वाग्दत्ता पत्नी के पिता का भाव देखा। वह एक नियमनिष्ठ दुर्बल चरित्र का मनुष्य था। उसमें सिपाहीपन नहीं के बराबर था। उसके स्वभाव में अपनी पुत्री की निष्कपटता तथा सज्जनता का भी कुछ अंश दिखाई देता था। सामर ने यह भी अनुभव किया कि इस सारी घटना में जिस बात ने कर्नल को सबसे अधिक प्रभावित किया था वह उसे इन बुरे कपड़े पहने हुए और ठोड़ी बढ़ाए हुए मनुष्यों के साथ में देखना था। वह और सब बातों को—क्रांतिकारी विचारों और कार्य को—सम्मान की दृष्टि से देख सकता था। उसकी मेज़ पर उन विनाशकारी घोषणापत्रों की कुछ प्रतियाँ भी रखी हुई थीं जो उस दिन प्रातःकाल को बाँटे गये थे। उसने इस प्रकार कहना आरंभ किया—

'मैं तुम से कोई प्रश्न नहीं करूँगा। मैं तुम से कोई अप्रिय बात भी न कहूँगा। और मैं तुम्हें औरों के साथ हवालात में भी नहीं भेजूँगा।'

'आपको जो कुछ सबसे उचित जान पड़े वही कीजिये। किंतु मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि इस कृपा के लिए मैं आपका आभारी न हो सकूँगा। आप का कर्तव्य तो यही है कि आप मेरे साथ भी औरों जैसा ही व्यवहार करें।'

इस पर कर्नल को कुछ आश्चर्य हुआ। तत्पश्चात् पैंसिल से खेलते हुए और सामर की ओर से दृष्टि हटाकर, उसने कहा—

'मुझे तुम्हारी कृतज्ञता की आवश्यकता नहीं है। मुझे इसकी भी कोई परवा नहीं कि इस समय तुम्हारा विचार क्या है। इस समय तुम मेरे वश में हो। मैं अपने अन्तःकरण की आज्ञा का पालन करूँगा।'

सामर ने उसकी ओर कठोरता से देखकर कहा—

'आपका अन्तःकरण और नियम इस समय एक दूसरे के विरोधी हैं।'

यह सब तो होता ही रहता है, कर्नल ने उत्तर दिया। 'मेरे जीवन में पहले भी जब कोई ऐसा अवसर आया है तब भी मैंने नियमों के विरुद्ध निश्चय किया है। प्रिय मित्र सामर, एक बात और है। अपने कामों की ज़िम्मेदारी भी तो मुझ ही पर है न?'

फिर कर्नल ने एक निःश्वास छोड़ा। वह सहसा कुछ कठोर हो गया। इसका एक कारण तो यह था कि इस प्रसंग में उसका कार्य कठिन और न्यायविरुद्ध था, दूसरे पुलिस का कार्य करने में उसे अपनी शान कम होती हुई मालूम होती थी।

'मेरी समझ में नहीं आता कि सेनावालों से इन कामों का क्या संबंध है।' उसने असंतोष के भाव से कहा।

सामर मौन रहा। फिर वे दोनों दफ़्तर से बारकों में होते हुए इमारत् के उस हिस्से में पहुँचे जिसमें कर्नल रहा करता था। बारकों के वायुमंडल से दूर वे नीचे के एक कमरे में आ बैठे।

'मुझे इस बात की खुशी है कि यह सारा बखेड़ा यूँही ठण्डा हो गया। यह मेरे तुम्हारे दोनों ही के लिए बहुत अच्छा हुआ।'

सामर अब भी कुछ न बोला। कर्नल ने घंटी बजाई। फ़ौरन एक नौकर ने आकर सलाम किया।

'क़हवा और बरांडी ले आओ और सब लोगों से सो रहने को कह दो।' कर्नल ने आज्ञा दी।

तत्पश्चात् उसने रिपब्लिक की बुराई करना आरंभ किया। वह एक रईस और एकाधिपत्यवादी था। सामर ने उसकी बात में कोई बाधा नहीं दी। कर्नल को अपने सिद्धांत पर इतना विश्वास था, उसका भाव इतना निश्चल तथा श्रद्धापूर्ण था कि सामर को स्वयं अपना विश्वास विचलित होता हुआ-सा प्रतीत होने लगा। किन्तु इसका कारण कर्नल के शब्द मात्र ही न थे, उसके शब्दों पार्श्वभूमि भी भावुकता से ओतप्रोत थी। यह उसकी प्रियतमा का घर की

था। परदों के लगाने के ढंग में, एक-एक फूल के रखने की रीति में, यहाँ तक कि मेज़ पर रखी हुई सिगरेट की रकाबियों में भी उसे अम्पारो का प्रभाव स्पष्ट मालूम हो रहा था। कर्नल ने इस प्रेम-संबंध की ओर ज़रा भी इशारा नहीं किया। इस मामले में हस्तक्षेप करने की उसने कभी कोई इच्छा प्रकट नहीं की थी। सामर उसका मित्र था और वह अपनी पुत्री को सुखी देखना चाहता था। और किसी बात की उसे कोई चिंता नहीं थी। सामर को कर्नल के व्यवहार में कोई और भी ऐसी बात नज़र न आई जिसको वह उसके बड़प्पन की शान कह सकता। जब टेलिफ़ोन द्वारा बुलाये जाने पर उसे बारकों में जाना आवश्यक हो गया तो उसने कहा—

'इस समय बुलाने का कारण यह है कि मंत्रिगृह में आज विभागाध्यक्षों की एक कान्फ्रेंस होनेवाली है। मेरा वहाँ पहुँचना ज़रूरी है। मैंने तुम्हारी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है। आगे की बात कल सोचेंगे। अब कल तक तुम यहाँ ठहरो। तुम उस समय तक एक क़ैदी हो। वहाँ क़हवा, बरांडी और पुस्तकें रखी हुई हैं। यदि कोई और वस्तु चाहिये तो घंटी बजा देना।'

कर्नल के चले जाने के उपरांत सामर ने अपनी स्थिति पर पुनः विचार किया और उसकी इस प्रकार व्याख्या की :

'वह और मैं दोनों ही वर्तमान सरकार से द्वेष रखते हैं और उसकी पुत्री से प्रेम करते हैं। इसी सूत्र में हम दोनों बँधे हुए हैं।'

किंतु जैसे ही उसने बाहर का द्वार बंद होते हुए सुना उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो बारकों से उसका कोई संबंध ही न हो, उसे भय का कोई कारण ही न रह गया हो। पराभव की वह अनुभूति और पकड़े जाने के समय से जिन आशंकाओं ने उसके हृदय को कई घंटों से द्रवित कर रक्खा था, वह सब अब दूर हो गई थीं। उसके विचारों पर अब अम्पारो का एकाधिपत्य था।

'यह सब बातें,' उसने मन ही मन कहा, 'इतनी सरलता से कैसे हो गईं। किसी न किसी ने अवश्य कर्नल को पहले से सूचित कर दिया था।'

और भी कितनी बातों पर ध्यान देने से इसी विचार का समर्थन होता था। सामर को बंदी देखकर कर्नल तनिक भी आश्चर्यान्वित नहीं हुआ था। यद्यपि कर्नल एकाधिपत्यवादी था और वर्तमान सरकार के मार्ग में रोड़े अटकते देखकर उसे हर्ष होता था, तो भी क्रांतिकारीदल के आक्रमणों के सर्वप्रथम लक्ष्य रेजिमेन्ट के अफ़सर ही थे। किसी कैदी के भाग जाने या कूट प्रबन्ध से भी अधिक भय एक कर्नल को रेजिमन्ट में विद्रोह फैलाने की चेष्टा से होना चाहिये था। किन्तु कर्नल को चिन्ता छू भी न गई थी। निस्संदेह कर्नल को सारी बात पहले ही से ज्ञात हो गई थी। इतना हो जाने पर सामर पिछली बातों पर व्यर्थ माथा-पच्ची नहीं करना चाहता था। जब कभी भी उसे असफलता का सामना करना पड़ता था, वह सदा-सर्वदा उसके विचार मात्र को अपने मन से निकाल देने का भरसक प्रयत्न किया करता था, अपनी सारी शक्ति लगाकर वह उसे भुला देना चाहता था और आगे के काम में लग जाने का ध्रुव प्रयत्न किया करता था। किन्तु इस समय वह इस मकान के सुखद वातावरण से किंचित् प्रभावित हो उठा। वह सोचने लगा, अम्पारो का क्या हाल है। क्या वह इस समय सो रही है? क्या यह सम्भव है कि इस गड़बड़ के भय से उसके पिता ने उसको कहीं दूसरी जगह भेज दिया हो? मकान में चारों ओर सन्नाटा मालूम हो रहा था। उसने घंटी बजा दी। हाल और कर्नल के कमरे के बीच में जो पर्दा पड़ा हुआ था उसमें से भूरेबालों वाला एक सुन्दर सिर दिखाई दिया।

'कहिये किस वस्तु की आवश्यकता है? सेविकाएँ इस समय यहाँ नहीं हैं।'

वह मुसकरा रही थी। वह इस समय अत्यन्त सुखी प्रतीत हो रही थी। सामर के तेवर पर बल पड़ गये। फिर पर्दे के दोनों भागों को इधर-उधर हटाकर वह सामने आ खड़ी हुई। वह सिर से पैर तक श्वेतवस्त्र धारण किये हुए थी। यह उसका सुहाग का जोड़ा था। उसने आँखों ही आँखों में पूछा--

'क्या यह तुम्हें पसन्द है?'

सामर भी उससे एक प्रश्न करना चाहता था कि इस श्वेत प्रभा को देखकर वह उसे मुख तक न ला सका। फिर भी वह उसका अभिप्राय समझ गई और उसने उस प्रश्न के पूछने को नेत्रों द्वारा मना कर दिया। वह उसका उत्तर तो दे देती किन्तु वह इस द्विविधा में थी कि कहीं उसके उत्तर से उन दोनों के मध्य में एक दीवार तो खड़ी नहीं हो जाएगी। सामर ने उसकी ओर दृष्टि उठाकर देखा। वह पूर्ववत् आज्ञाकारिणी थी। किन्तु उसका हृदय एक नूतन आनन्द से उमड़ रहा था। उसकी श्वेत भुजाएँ आस्तीनों द्वारा आभावृष्टि कर रही थीं। उसके नेत्र, सदैव की तरह, नम्र तथा शान्त थे। उसकी दृष्टि में शान्ति तथा एक अव्यक्त आशा थी। उस आशा में इन्द्रिय सुख की लालसा के साथ ही साथ रहस्यपूर्णता तथा दिव्यता का भी समावेश था। उसमें पाशविकता और दिव्यता का एक अद्भुत सम्मिश्रण था--मानो कोई पूजनीय दिव्य-सत्ता मानव रूप में प्रकट हुई हो। वह विश्वस्त भाव से मुसकराती हुई सामर की बग़ल में आ बैठी। सामर ने उससे प्रश्न किया--क्या तुम्हें इस घटना का हाल मालूम है? 'हाँ' कहते हुए भी वह बराबर मुसकराती रही। उसके इस शान्त भाव से सामर कुछ सटपटा-सा गया।

'हम सब को क़ैद कर लिया गया है। मुझे यहाँ लाने के कारण मैं तुम्हारे पिता से क्रुद्ध हूँ। मेरा तुम लोगों के साथ भला क्या सम्बन्ध हो सकता है?'

वह फिर मुसकरा उठी। सामर कहने लगा।

'तुम्हारे पिता से किसी ने मुखबिरी कर दी और उन्होंने पुलिस को खबर दे दी। इसी वजह से हमारा सब मामला चौपट हो गया। अब मैं भी और लोगों की तरह अपनी ज़िम्मेदारी को स्वीकार कर लेना चाहता हूँ।'

अम्पारो ने उसके समीपतर आकर अपनी एक भुजा उसकी कमर में डाल दी और अपना सिर उसके सीने पर रख दिया।

'सामर, ऐसा विचार मत करो।'

'कौन-सा विचार न करूँ।'

'यही कि मैंने यह बात पिताजी से कह दी है।'

सामर कुछ न बोला। वह उसकी बाँईं जाँघ पर ज़ोर देकर उसके हृदय से चिपट गई। उसने अम्पारो के नेत्रों में एक प्रश्नात्मक दृष्टि डाली। अम्पारो ने अपने नेत्र उसके सामने पुस्तक सदृश खोल कर रख दिये। सामर को ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह खो गया हो—क्षण मात्र के लिये भी इस प्रकार खोजाना कैसा अद्भुत है! यही क्षण जो हमारे करोड़ों भावी जीवनों का जीवन है—हमारे समग्र अस्तित्व का सार है! अम्पारो अपने अधखुले होंठो में से श्वास ले रही थी—उसकी श्वास में अमृत बह रहा था, उसमें जादू भरा हुआ था। किसी भाव में पूर्णतः निमग्न हो जाना, आत्मा में समाधिस्थ हो जाना, भावना की अग्नि में जलना और जलकर राख हो जाना—इसमें कैसा अनिर्वचनीय आनन्द प्राप्त होता है! यह कौन कह सकता था कि उसकी संसक्ति से क्रांति को हानि पहुँच रही थी या लाभ? अनन्तकाल में हमारा जीवन एक क्षण मात्र है। और वे लोग भी जो यह विचार करते हैं कि हम जीवन-निग्रह कर रहे हैं, यथार्थ में उसका अनुवर्तन कर रहे हैं। वह भी जीवन के नितांत शिशुवत् पक्ष में अपने आपको पकड़ जाने देते हैं। वे मिथ्या अभिमान का शिकार हो जाते हैं। यह

जानते हुए भी कि उनके कन्धों पर जो चट्टान रखी हुई है वह एक दिन उन्हीं को चकनाचूर कर देगी, वे दानवों जैसी लीला करते रहते हैं। सामर ने यह सब सोच डाला। वह अपनी दुर्बलता के कारण इस कल्पना से डरकर भाग निकला। उसने सहसा इस प्रश्न की शरण ली :

'तुमने यह वस्त्र क्यों धारण किये हैं ?'

अम्पारो ने इस प्रश्न के उत्तर में वही पुरानी उक्ति दोहरा दी। उसने इन वस्त्रों को पहनकर देखा था। उसे यह आशा थी कि सामर भी उन्हें पसन्द करेगा। उसने यही शब्द उससे कितनी ही बार पहले भी कहे थे। अतएव उपयुक्त प्रश्न की शरण लेना सर्वथा व्यर्थ सिद्ध हुआ। सामर का भाव परिवर्तित हो गया, उनके मन में फिर वही आग्नेय विचार उठने लग गये :

'यदि तुमने अपने पिता से वह बात नहीं कही तो फिर उन्हें उसका ज्ञान किस प्रकार हो गया ?'

उसने फिर कहा—

'क्योंकि उन्होंने ही पुलिस को पूर्वसूचना दी थी।'

अम्पारो ने सिर हिलाकर कहा—

'इस विषय को मत छेड़ो, सामर, मेरे सूर्य !'

उसने सामर के गले में भुजाएँ डाल दीं। वह शीतल, गोल-गोल और सुदृढ़ थीं। उनमें वसंतऋतु की समस्त माधुरी भरी हुई थी। वह चिकने सेवों के समान उसके हाथों में रपटी जा रही थीं। वह बोली—'ल्यूकस, मेरे सूर्य !' सामर ने विचारों की कराल धारा में ग़ोते खाते हुए ही उसका चुम्बन किया और पूछा—

'तुम्हें मालूम है कि कल मेरे यहाँ से चले जाने के पश्चात् क्या हुआ ?'

यातना से व्याकुल होकर वह सहसा उससे अलग हो गई। सामर

ने अम्पारो को ऐसी दृष्टि से देखा जैसे कोई कीटविद्या का आचार्य किसी कीट को देखता है। अम्पारो ने सुबकी भरकर कहा—

'जब मैंने गोली का शब्द सुना तो पहले मुझे यह भ्रम हुआ कि तुम्हारे गोली लगी है। तदनन्तर मैंने तुम्हें भागते हुए देखा। मेरी खिड़की के नीचे एक मनुष्य की हत्या हुई है। क्या उसको तुमने मारा था?'

सामर ने कंधे उचकाकर कहा—

'अहँ। वह तो एक मुखबिर था। उसने पुलिस को सूचना दी थी।'

वह काँपती हुई बोली :

'किस प्रकार की सूचना?'

'हम लोग जो काम करनेवाले थे उसकी उसने पुलिस को पहले से सूचना दे दी थी। वह विश्वासघाती था। विश्वासघातियों का दण्ड मृत्यु है।'

तत्पश्चात् सामर को यह मालूम हुआ कि अम्पारो कुछ कहना चाहती है; किन्तु उसकी समझ में यह बात नहीं आती कि वह उसको कहे किस तरह। यह वही अम्पारो थी जो पहले कभी कुछ कहने में तनिक भी सोच विचार नहीं किया करती थी! किंतु वह किसी प्रकार सँभल गई। जब कभी सामर को उसके नेत्रों का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हो जाता था वह उनकी गहराइयों में उसके मन का भाव पढ़ लिया करता था। और इस समय के समान जब वह अपना भेद छिपाना चाहती थी तो सामर उसके रहस्य को और भी अधिक अच्छी तरह जान लिया करता था।

वह मौन था। वह यह जानना चाहता था कि यदि उसे बोलने का साहस हुआ तो वह कहेगी क्या। अन्ततः वह बोली—

'ल्यूकस, पिताजी के प्राण संकट में थे। मुझे इस बात का हर्ष है कि मैं उनकी रक्षा कर सकी।'

उसकी ओर देखे बिना सामर ने सिगरेट जलाया और कहा—

'तुम्हारे पिता ! तुम्हारे पिता ! वह हैं किस खेत की मूली !'

अम्पारो यातना से तड़प उठी। वह सफ़ेद वस्त्र धारण किये हुए थी। इस समय ऐसा प्रतीत होता था मानो सिनेमा की कोई एक्ट्रेस दुःखाभिनय कर रही हो। परन्तु यह दृश्य कैसा संगत, कैसा स्वाभाविक था !

'हाँ, ल्यूकस,' उसने कहा। 'मेरे पिता के प्राण—मैं जानती हूँ कि तुम मेरे भाव को भली प्रकार समझते हो।'

किन्तु उसने सक्रोध उत्तर दिया—

'परन्तु यह बात तुम किस प्रकार सोच सकीं कि ऐसे संकट के समय में तुम्हारे पिता जैसे तुच्छ विषयों का हमारे लिए कुछ भी महत्त्व है ?'

अम्पारो का भाव अब भी शान्त तथा अविचल था।

'जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है,' उसने कहा, 'मेरे लिए सबसे पहले घरवाले हैं, इसके बाद और लोग हैं।'

सामर ने घृणा के साथ अंगविक्षेप किया। वह कुछ कहना चाहता था; परन्तु अम्पारो ने उसका अभिप्राय समझकर सशीघ्र कहा—

'मैं जानती हूँ तुम क्या कहने जा रहे हो। तुम्हारा विचार भी बिलकुल ठीक ही है।'

इस प्रशान्त घर के बाहर, गली में, सामर के दल में, कोई बात भी असम्भव नहीं समझी जाती है। प्रत्येक काम सम्भव है, सब कुछ कर डाला जा सकता है, हर एक बात को लांघा जा सकता है। किन्तु उसके यहाँ ? वह क्या कर सकती है ? उसके मण्डल में यदि कोई 'असम्भव' पुकार उठे तो भविष्य की आशा से मतवाले सहस्रों प्राणी क्षुब्ध तरङ्गों की नाईं उठकर, 'और !' सदैव 'और !' के तुमुल नाद से दिशाओं को मुखरित कर देते। अब अम्पारो की प्राप्ति उसके लिए असंभव थी। अम्पारो हर्षोन्मत्त थी। और एक क्रांतिकारी के लिए

हर्षोन्माद और स्थिरता दोनों ही विषतुल्य हैं—मृत्यु हैं। क्रांति के समय एक ही जगह खड़ा हो जाना भी पीछे हटने के समान है। सुखी जीवन की इस सरसता को, इस प्रेम के जीवन को सामर इसलिए स्वीकार नहीं कर सकता था क्योंकि इसमें पराभाव का विष मिला हुआ था।

अम्पारो ने स्वयं भी कहा था—'असंभव !'

सामर की अन्तरात्मा सशस्त्र जनता, कामरेडगण का आर्त्तनाद सुन रही थी। इन्हें बूर्ज्वा लोगों की नीति ने आहत कर रखा था, वह उन पर घोर अत्याचार कर रही थी, उन्हें भूखों मारे दे रही थी। जनता चिल्ला रही थी—'सब कुछ संभव है। हमें आगे बढ़े जाना है।' उसके हृदय की प्रिय पुकार भी यही थी 'सदैव और आगे !' जो गुप्त प्रेरणा उसे प्रत्येक बाधा को लाँघने को उद्यत करती रहती थी उसको अम्पारो ने अंगीकार नहीं किया था। वह स्वयं एक उद्देश्य—एक सिद्धि थी। नौकाशय सदृश उसके नेत्र शांत थे, उसकी भुजाएँ फैली हुई थीं। उसे प्राकृतिक नियमों, सामाजिक नीति, स्त्री-पुरुषोचित प्रेरणाओं, चित्तवृत्तियों के दुर्ज्ञेय संगीत का, तथा नीच और लम्पट स्वभाववाले मनुष्यों की करतूतों का कुछ भी ज्ञान नहीं था। वह इन सब बातों से एकदम अनभिज्ञ थी। वह तो केवल अपने हृदय की अत्यन्त दारुण, प्राणांतक तृष्णा की अनुभूति कर रही थी। यह दुस्सह तृष्णा उसे कहाँ से कहाँ ले जायगी, इसका भी उसे न तो कुछ ज्ञान ही था और न लेशमात्र चिन्ता ही थी। किन्तु ल्यूकस के कानों में बराबर यही आवाज़ आ रही थी—'असंभव।' अम्पारो बराबर 'असंभव' कह रही थी। वह इस शब्द की मधुर तथा फेनिल मादकता में खो-सी गई थी। सामर इस शब्द को एक विविक्त विचार के रूप में जानता था, वह यह जानता था कि वास्तव में उसका कोई अस्तित्व नहीं था। अम्पारो इसी मदोन्मत्त अवस्था में उसके गले से लिपटी हुई थी। सामर ने चुम्बन द्वारा इस निरर्थक शब्द को उसके ओंध सेर

छुटा देना चाहा। 'असंभव।' किन्तु वसन्तऋतु की इस श्वेत तथा सुनील उन्मत्तता में उसके अन्तस्तल की गहराइयों में यही शब्द बराबर प्रतिध्वनित हो रहा था। 'असंभव! असंभव!' किन्तु सामर के मन को 'सदैव और' रूपी लाल ध्वजा आकृष्ट कर रही थी। ये दोनों शब्द एक दूसरे से दूर हट गये। इनमें से प्रथमकाल का अतिक्रम करनेवाला और उस पर विजय प्राप्त करनेवाला था। दूसरे का यही सम्बन्ध अन्तरिक्ष के साथ था। 'सदैव और। सदैव अग्रसर।' और इसके पश्चात्? इसके पश्चात् कुछ था ही नहीं!

अम्पारो को देखने के लिए सामर ने अपना सिर पीछे हटा लिया। अम्पारो की भुजाएँ जंगली फूलों के हार जैसी थीं। एक नूतन आनन्द से, एक अभूतपूर्व हर्षातिरेक में, उसका सिर झूम रहा था। उग्र और पुलकित कंठ स्वर में वह 'असंभव' कहे जा रही थी और पगली-सी होकर उसके हृदय और शरीर से चिपटी जा रही थी। उसके अधरों को बारम्बार चूम रही थी। इस समय वह स्त्री प्रतीत नहीं हो रही थी—एक मात्र स्त्री भी नहीं। जिस प्रकार 'सदैव' काल पर और 'और' आकाश पर विजयी होते हैं उसी प्रकार सामर के अंक में वह अनन्त प्रतीत होती थी। किंतु वह एक निषेधात्मक अनन्त थी, जो क्रांति तथा उसके समस्त उद्देश का निषेध कर रही थी। वह एक ऐसा अनंत थी जो स्वयं अपना विरोधी हो गया हो—इसी से उसकी अनंतता में त्रुटि आ गई थी। उसका शरीर स्वप्नों से बदला ले रहा था, वह एक ही क्षण में सारे स्वप्नों को कार्यरूप में परिणत किये दे रहा था। सामर को भी ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो उसके अंतस्तल में कोई चीज़ बम की तरह फट पड़ी हो, जिसकी आकस्मिक ज्वाला से सब कुछ भस्मीभूत हो गया था।

उसके बाहुपाश से सहसा निकलकर वह कहने लगी:

'पिताजी आ रहे हैं।'

जिस द्वार से वह यहाँ आई थी उसी से भीतर चली गई। सामर ने कान लगाकर सुना तो उसे पदध्वनि सुनाई दी। वह एक आराम कुर्सी पर जा बैठा। उसने सिगरेट जलाया और दोनों कोहनियाँ मेज़ पर रख लीं। अपने बालों की अस्तव्यस्तता का यथार्थ कारण छिपाने के लिए वह अपने दोनों हाथों से सिर खुजलाने लगा। पर्दा हटा। सामर का हृदय धक् धक् कर रहा था, वह हाँप रहा था। अतएव उसने जान बूझ कर धुँए का एक घूँट पी लिया। जब कर्नल महोदय ने कमरे में प्रवेश किया तो वह खाँस रहा था।

'क्यों, क्या हुआ ?' कर्नल ने पूछा।

सामर ने बिना कुछ बोले सिगरेट फेंक दिया। फिर उसको उठा कर रकाबी में रख दिया। कर्नल ने कहा—

'स्थिति इतनी बुरी नहीं है जितनी कि आशंका की जाती थी।'

सामर ने प्रकृतिस्थ होते हुए कहा—

'मैं किसी बात से डरता थोड़े ही हूँ।'

कर्नल ने उत्तर दिया—

'ऐसे लल्ला मत बनो।'

सामर ने अपना अभिप्राय इस प्रकार प्रकट किया :

'यह मिथ्या वचन कहना कि मैं इस कृपा के लिए आपका कृतज्ञ नहीं हूँ, सरासर मूर्खता होगी। हम दोनों ही यह समझते हैं कि इस विषय पर कहने-सुनने की कोई आवश्यकता नहीं है। किन्तु जिस तरह आपका अन्तःकरण है उसी प्रकार मेरा भी है। इसीलिए मैं आपको अपनी मनःस्थिति समझा देना चाहता हूँ।'

सामर के भाव को कर्नल इतनी अच्छी तरह समझ रहा था अतः सामर को कुछ अधिक कहे जाने की कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई। वह कन्धे उचकाकर फिर अपनी जगह बैठ गया। कर्नल के भाव से यह बात स्पष्ट थी कि न तो उसको सामर के मित्रभाव पर कोई

सन्देह था, न उसकी कृतज्ञता पर। वह किसी प्रकार भी उसकी परीक्षा लेना नहीं चाहता था। कर्नल बराबर यही शब्द दोहराता रहा था—'यह तो सज्जनता और सम्मान का प्रश्न था।' सामर इस समय उसके शब्द तक नहीं सुन रहा था—उसके कानों में केवल आवाज़ आ रही थी। वह निश्चिततापूर्वक कल्पना के घोड़े दौड़ा रहा था। दस्ताने पहनते हुए कर्नल ने फिर कहा—

'जैसा कि मैं पहले बता चुका हूँ स्थिति अच्छी है और बहुत शीघ्र और सुधर जायगी।'

इतने में शोफ़र आ पहुँचा और सलाम करके अदब के साथ दरवाज़े में खड़ा हो गया। कर्नल ने सर झुकाया और शोफ़र के साथ बाहर चला गया। शीघ्र ही मोटरकार स्टार्ट होने की आवाज़ सुन पड़ी। सामर पर्दे पर दृष्टि गड़ाये हुए अकेला बैठा था। कुछ मिनट वह इसी प्रकार बैठा रहा। फिर उसने पर्दा उठाया और कुछ देर तक चमकती हुई आफ़िस टेबिल पर प्रतिबिम्ब देखता रहा। तदनन्तर उस दरी पर जो ज़ीने के ऊपर तक चली गई थी अम्पारो के पदचिह्न देखकर वह सीधा ऊपर जा पहुँचा। इसके पश्चात् वह अपनी प्रियतमा के शरीर की श्वेतता में, उसके वस्त्रों की और वसन्तकालीन चाँदनी रात की श्वेतता में मिलकर अदृश्य हो गया। किन्तु इस बार उसे अपनी महत्वाकांक्षाओं का ध्यान व्यग्र नहीं कर रहा था, उसे संसार की आनी-जानी क्षणभंगुर वस्तुओं के लिए इन्हें बलिदान करने का कोई खेद नहीं था। इस समय वह स्वयं अपना और प्रत्येक वस्तु का निषेध करके प्रेम-निमग्न था।

अम्पारो के कमरे में जाता हुआ सामर सोच रहा था :

'इन सब बातों के होते हुए भी अभी मैं अपनी रक्षा कर सकता हूँ।'

नहीं विष अब अमृत था। इस प्रकार उन दोनों ने वसन्तोत्सव

मनाया। अम्पारो को इस प्रेमक्रीड़ा से न तो कोई आश्चर्य हुआ, न वह रोई ही, वह उन्मत्त-सी निश्चेष्ट पड़ी रही। सामर अपने हृदय में कभी न तृप्त होनेवाली तृष्णा का अनुभव कर रहा था। सामर के ध्यान में कोई ऐसी बात ही नहीं आती थी जिससे वह इस रात की उपमा दे सकता। वह रात उसे यथार्थ में रात ही नहीं मालूम होती थी। रात के सम्बन्ध में उसने जितनी भी कल्पनाएँ की थीं वह कोई भी उस पर चरितार्थ न होती थीं। यह भी संगत नहीं मालूम होता था कि किसी सुदूर पूर्वज की उद्दाम विषयासक्ति उसमें सहसा जाग्रत हो उठी हो। वह उस रात की उपमा स्वयं अपने जन्म-दिवस से भी नहीं दे सकता था और न इस अपूर्ण क्रान्ति के विजय दिवस ही से वह उसकी तुलना कर सकता था। वह यह जानता था कि उस रात के अनुचिन्तन के अन्तिम क्षणों में उसे दीवार के नीचे एक वध किया हुआ मनुष्य दृष्टि गोचर होता था और एक भयभीत स्त्री यह कहती हुई दिखाई देती थी—

'चूँकि वह शव रातभर मेरी खिड़की के नीचे पड़ा रहा था, मुझे रातभर डर लगता रहा।'

उन्हीं आँखों और उसी भय ने उनके प्रेम की असम्भव बात को कार्यरूप में परिणत कर दिया था। आकाश से गिरते हुए वे दोनों नीचे की खाई देखकर एक दूसरे से चिपट गये थे। खाई की तली में पड़ा हुआ फ़ाऊ कराह रहा था। किन्तु सामर को अम्पारो के उन शब्दों के अतिरिक्त कुछ भी याद न था—वह शब्द जो उसने सामर के मकान से, स्वयं अपने आप से, भागते समय, उठकर उसके अधरों को चुम्बन करते हुए कहे थे—

'यह मेरा ही काम था। मैंने ही तुम्हारे साथ विश्वासघात किया था। वह बात मैंने ही पिताजी से कही थी।'

सामर कुछ न बोला। वह उसको अपने साथ ले जाना चाहता

था—सौरभ की नाईं अपने फेफड़ो में बन्द करके, मृदुरस की भाँति अपने अधरों पर लगाकर। उसके मुँह और कंठ से किसी प्रकार मुँह उठाकर साँस लेते हुए अम्पारो ने कहा—

'हम आज अन्तिम बार मिल रहे हैं। यह बात बतलाये बिना मैं तुम्हें जाने नहीं दे सकती थी। क्या तुम मेरा यह अपराध क्षमा कर दोगे?'

सामर फिर भी व्यग्रता के साथ उसका अधरपान करता रहा। तदन्तर उसको छोड़कर वह भाग निकला। अम्पारो छज्जे पर खड़ी हुई हाथ हिलाकर उसे विदा कर रही थी। रात के श्वेत वस्त्र धारण किये हुए वह पुष्प सदृश वसन्तऋतु की प्रतीक मालूम होती थी। उसने सामर को शत्रुओं की टोह में इधर-उधर दृष्टिपात करते हुए देखा। उसने सामर से फिर पूछा—

'मेरा अपराध क्षमा कर रहे हो या नहीं?'

पुलिस की मोटर साइकिलों की ध्वनि सुनाई दे रही थी। सुबकी भरकर उसे अन्तिम विदा देते हुए उसने फिर वही प्रश्न किया। सामर ने दीवार के समीप आकर कहा—'जल्दी से एक रिवालवर ढूँढ़ लाओ और मेरे पास फेंक दो।'

अम्पारो दौड़ती हुई अपने पिता के दफ्तर में गई और रिवालबर ले आई। उसने वह छज्जे से नीचे फेंक दिया। फूल की क्यारी में उसके गिरने का मन्द शब्द उसने सुना।

'ल्यूकस, हमारे जीवन में मिलन का यह अन्तिम समय है। क्या तुम मेरा अपराध क्षमा कर रहे हो?'

'अन्धकार में अन्तर्धान होने के पूर्व सामर ने सुस्पष्ट तथा दृढ़ स्वर में कहा—

'नहीं।'

५

पाँचवाँ रविवार

संहार

कारागार पर आक्रमण

हमारी कमेटियाँ भंग कर दी गई हैं, कामरेडगण कारागार में पड़े सड़ रहे हैं, हमारे सभा-गृह और समाचार-पत्र बन्द कर दिये गये हैं और अब हमें स्वच्छन्द रूप से काम करने को छोड़ दिया गया है। हम स्वच्छन्दता-पूर्वक कर्म करने के अधिकार को प्राप्त करना चाहते हैं; क्योंकि हम उसी की उपलब्धि को मनुष्य के लिए परमाधिकार प्राप्ति समझते हैं। हम अनियन्त्रित कर्माधिकार को प्रणाम करते हैं।

'किन्तु वह कौन-सा स्वच्छन्द कर्माधिकार होगा ? क्या वह दासता की बेड़ियों में जकड़े रहने की निर्विघ्न अभिलाषा होगी ? या कदाचित् लाट पादरी बन जाने की आकांक्षा ?'

कामरेड सामर ने मेरी बात में बाधा दी। मैंने पूछा—'यह तो कहिये कि आप चाहते क्या हैं।'

'मैं निश्चयात्मक योजनाएँ चाहता हूँ।'

'किंतु मैं अब वही बात करने जा रहा हूँ। 'स्वच्छन्द कर्माधिकार' मनुष्य को बूर्ज्वा रूढ़ियों की दासता से अपने आपको मुक्त करने देता है। मैं नहीं जानता कि आप मेरे इस कथन का ठीक अभिप्राय समझेंगे या नहीं, जब मैं यह कहता हूँ कि यद्यपि मुझे अपने कामरेडगण के जेल जाने का हार्दिक दुःख है, केन्द्रों के बन्द हो जाने का भी अत्यंत शोक है और मैं अपनी सारी शक्ति के साथ इस कार्य का निषेध करता हूँ, फिर भी मैं यह कहता हूँ कि क्रान्ति को सफल बनाने के लिए हमारी संस्थाएँ अनिवार्य नहीं हैं, क्योंकि क्रान्ति उस समय तक सम्पूर्ण और वास्तविक नहीं होगी जब तक कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति अपने अबाधित कर्माधिकार द्वारा संयुक्त रूप से क्रान्तिसम्बन्धी कार्य में सम्मिलित होने को कटिबद्ध न हो जायगा। सिंडीकेटवाद का युग समाप्त हो गया। बूर्ज्वावाद की गुरुतर शक्ति ने उसका संहार कर डाला। अब हमारे स्वच्छंद कर्माधिकार की बारी है और हम पूछते हैं—'इस क्रांति के समय हमारी प्रेरणा-शक्ति क्या है?' वह एक मात्र, अद्वितीय एवं पवित्र 'स्वतंत्रता' ही तो है। हम स्वयं अपने लिए और अपने भाइयों के लिए स्वतंत्रता चाहते हैं। यदि उसकी प्राप्ति का केवल यही एक उपाय है कि हम इन सशस्त्र किराये के टट्टुओं का अंत कर दें तो हमें अपनी क्षति की ज़रा भी परवा न करते हुए आगे बढ़ जाना होगा। हम मानवता के कलंकरूपी कारागार-द्वारों के टुकड़े कर डालेंगे...'

मुझे कामरेड सामर अधीर-सा प्रतीत होता है। अतएव मैं उससे शांत रहने की प्रार्थना करता हूँ। मेरा निश्चात्मक प्रस्ताव यह है :—

'आओ हम अपने कारागारवासी भाइयों के पास स्वतन्त्रता का प्रकाश, या कम से कम स्वतन्त्रता प्राप्त करने की आशा, पहुँचा आएँ।'

कामरेड सामर इससे सहमत होकर आदेश करता है :—

'वह प्रत्येक मनुष्य जिसके पास कोई हथियार है, अलग-अलग, मिलकर टुकड़ियों में नहीं, पृथक्-पृथक् मार्ग से मानक्रोआ स्कायर में पहुँच जाए।'

कामरेडगण को प्रोत्साहित करने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। जो बात सामर ने कही है वही मैं भी कह रहा था। प्रत्येक हृदय में स्वाधीनता का प्रेम विद्यमान है। मैं कहता हूँ—'कामरेडगण, हम जेल में स्वाधीनता का प्रकाश...' किन्तु सामर मेरी बात काटकर कहता है कि अब कोई भी बात कहना केवल वाक्यालंकार मात्र है। तदनन्तर हम लोग अपनी-अपनी राह लेते हैं। अन्य भाइयों को इस बात की सूचना देने के अभिप्राय से कामरेडगण विभिन्न दिशाओं में चले जाते हैं। अतः अन्धकार में, विभिन्न मार्गों से एक-एक करके अगणित व्यक्ति मानक्रोआ स्कायर, जहाँ कि भीषण कारागार स्थित है, जा पहुँचते हैं। ये लोग शनैः-शनैः बाग़ों के चारों ओर छोटी-छोटी टुकड़ियों में फैल जाते हैं। मेरे मन में एक शंका उठती है और मैं सामर से कहता हूँ :—

'यदि हम कुछ भी न कर सके तो क्या होगा?'

'कुछ न कुछ तो सदैव हो ही जाता है,' उसने उत्तर दिया। "कम से कम हमारे भाई अपनी कोठरियों में पड़े-पड़े स्वप्न तो देखेंगे ही।'

यद्यपि सामर से बहुधा मेरा मतभेद रहता है, क्योंकि उसके मस्तिष्क में मार्क्सवाद का विष भरा हुआ है और वह हमेशा मेरा विरोध किया करता है, फिर भी कभी-कभी मुझे यह मालूम हुआ करता है कि वह ठीक बात कह रहा है। जो शब्द उसने अभी-अभी कहे हैं वह उसकी मानसिक उत्कृष्टता के परिचायक हैं—'कम से कम हमारे कामरेडगण स्वप्न तो देखेंगे।' यह शब्द स्वतंत्रता का मर्म जानने वाले व्यक्ति ही के मस्तिष्क से निकल सकते हैं।

'मेरा हृदय तो यही चाहता है कि हम लोग स्वतंत्रता का प्रकाश, या, यदि संभव हो सके, तो साक्षात् स्वतंत्रता को इन त्रस्त भाइयों के पास पहुँचा दें।' मैंने उससे कहा।

'यह पादरियों जैसी बात है।'

उसकी यह बात अशिष्ट थी, किन्तु क्या किया जाय उसका स्वभाव ही ऐसा है। औरों को अपने साथ मिला लेने का सर्वोत्कृष्ट साधन सहनशीलता है। मैंने कहा—

'मैं कभी बुरा नहीं मानता और यदि अन्य लोग भी...'

'ऐसी मक्कारी की बातें जैसुइट लोग किया करते हैं।'

सामर और उसकी टोली के लोग मेरे साथ हमेशा बुरा बर्ताव किया करते हैं। किया करें, मुझे इसकी कोई परवा नहीं है। किन्तु सामर जब यह देखता है कि मैं उसकी बात का मुँहतोड़ उत्तर नहीं देता वरन् चुप हो जाता हूँ तो उसके हृदय में मेरे प्रति सम्मान का भाव अवश्य बढ़ जाता होगा। मुझे इस बात का पूरा विश्वास है। जब हम दोनों स्क्वायर के समीप जा पहुँचे तो एक कामरेड दौड़कर आया और हमें सतर्क कर गया। हमें बड़ी सावधानी से काम करना चाहिये क्योंकि गार्डों की संख्या बहुत बढ़ा दी गई है। सामर इस बात का उपहास करता हुआ कहता है।

'कदाचित् वे हमें भीतर नहीं जाने देंगे!'

ईंटों की सुदृढ़ दीवार देखकर मैं यह निषेधार्थक शब्द कहे बिना नहीं रह सकता।

'कारागार भी कैसे हास्यास्पद अपवाद हैं।'

सामर हँस पड़ता है और मेरी पसलियों में कोहनी मारकर कहता है।

'बड़े मियाँ, इस समय कल्पनाओं को रहने दीजिये।'

अब यदि मैं उसकी इन अशिष्ट बातों का उत्तर देता तो या तो

हम दोनों में वादविवाद छिड़ जाता या झगड़ा हो गया होता। परन्तु आप भी अब इस बात को जान गये होंगे कि मैं ऐसी बातों का मज़ा ले सकता हूँ। मेरा नियम ही सबसे अच्छा है। अंतः हम दोनों पूर्ण-शांति के साथ बढ़े चले जाते हैं। स्क्वायर के मध्य में अँधेरा अधिक गहरा है। दाहिनी ओर तमाशे का मंडप लगा हुआ है जिसके भंगुर द्वार और उनके पट बन्द हैं। यह क्या है?

'वसन्त का मेला।

कुछ कामरेड तमाशे के इधर-उधर खड़े हैं। तमाशे में वायु द्वारा चलनेवाली कई चक्रियाँ हैं। उनमें से एक के पोत एक तारे के रूप में सजे हुए हैं। जिनके सिरों पर छोटी-छोटी पर्देदार नौकाएँ बँधी हुई हैं। एक चक्की वृक्षों तथा जेल की दीवार से भी ज़्यादा ऊँची है।

चूँकि मेले के सामान इत्यादि से जेल तक की सारी जगह घिरी हुई है, अतः आवश्यकता पड़ने पर हमें छिपने में बड़ी सुविधा मिलेगी। इस कोने पर सामर और मैं कुछ देर रुके रहे। कई कामरेड हमारे पास से होकर आगे बढ़ गये। अस्पताल के अरदली रावर्टो ने हम से कहा—

'कम से कम हमारे तीस आदमी बागों में हैं। ज़रा उनके फ़ायरिंग से सावधान रहना!'

इस समय आधी रात बीत चुकी है। यह कहावत सच्ची नहीं है कि 'काम' में समय बहुत जल्दी व्यतीत हो जाता है। सामर की इच्छा है कि इस इलाक़े में और बारकों के चारों ओर के हिस्से में जाकर यह देखा जाय कि कामरेडगण कहाँ कहाँ हैं और क्या करनेवाले हैं। यद्यपि यह काम ख़तरनाक है और मेरी समझ में इससे कोई लाभ होना भी सम्भव नहीं मालूम होता, तो भी हम वहाँ जाते हैं। दूकानों से कई प्रकार की तुमुल ध्वनियाँ सुनाई देती हैं।

'कामरेडगण!' मैं धीमे स्वर में पुकारता हूँ।

अन्धकार में से उत्तर आता है—'हाँ भाई ! हाँ भाई !' खाटों में जिस प्रकार खटमल छिपे रहते हैं इसी प्रकार यहाँ भी लगभग दो सौ कामरेड अवश्य छिपे हुए होंगे। बाहर से कुछ भी दिखाई नहीं देता। एक दुकान के भीतर से जिसके ऊपर लिखा है—'सामुद्रिक जन्तु यहाँ है। इस मार्ग से जाइये।' निगलने की ऐसी आवाज़ आ रही है जैसी कि छोटी लाइन की रेलगाड़ी के छूटते समय हुआ करती है। इसके बराबर की झोपड़ी में पर्दे से सटी हुई एक मनुष्य शैया देख पड़ती है।

'कामरेड !'

'जाओ भाड़ में !'

सामर आश्चर्य चकित होकर रुक जाता है।

'तुम कौन हो ?'

एक चिड़चिड़ा वृद्ध बाहर आता है।

'यदि तुम उचक्के लोग यहाँ से दूर ही रहो और मुझे तङ्ग न करो तो तुम्हारा क्या हर्ज है। तुम मेरे बन्दर डराये दे रहे हो।'

'कैसा बन्दर ?'

'वही बन्दर जो मेरी रोटियों का सहारा है। यदि वह खो गया तो सिपाही लोग मेरे यहाँ नहीं आएँगे।'

'हमें तुम्हारे बन्दर से कोई दुश्मनी थोड़े ही है, बड़े मियाँ !'

वृद्ध ने फिर निषेध करते हुए कहा :—

'तुम लोग सब रिवालवर लेकर आ रहे हो। मेले का सत्यानाश हुआ जा रहा है। बिजली बन्द होने के कारण हमें अपनी गाँठ से पेट्रोल की कुप्पियाँ जलानी पड़ रही हैं और इस पर फिर तुम आकर मेरे बन्दर को डराए दे रहो हो !'

'क्या तुम्हारा बंदर बहुत नाज़ुक मिज़ाज है ?'

'और क्या, नाज़ुक मिज़ाज तो है ही। नवयौवना रमणी के

समान सुकुमार है ।' जिस प्रकार सामर इस वृद्ध की ओर देख रहा है उससे मैं अच्छी तरह यह समझता हूँ कि वह यह सोच रहा है इस बुड्ढे को जीवित रहने का अधिकार नहीं है । जब वह यह जान लेता है कि मैं उसके मन की बात समझ गया हूँ तो वह उसकी इस प्रकार व्याख्या करता है:—

'जीवन उन्हीं के लिए है जो उसके लिए काम कर सकते हैं— जो उसके वास्तविक पात्र हैं । वह उन लोगों के लिए नहीं है जो एक बन्दर की आड़ में भीख माँगते हैं—एड़ियाँ रगड़-रगड़कर जीवित रहते हैं । यह बुड्ढा अपने बन्दर से भी निकृष्ट है ।'

मैं कुछ भी नहीं कहता । मनुष्यत्व के प्रति जो महान् धारणा सामर रखता है उससे मुझे प्रसन्नता होती है । वह कहे जाता है—

'इस आदमी के लिए इस प्रकार जीवित रहना इसीलिए संभव है कि वह निस्सन्देह ईश्वर में विश्वास रखता है । हमें इस मनुष्य को नहीं, ईश्वर को मारना है । ईश्वर में श्रद्धा रखने के कारण ये लोग एक आत्मनिन्दक बानर की कमाई पर जीवनयापन करते हुए भी यह सोचे जा सकते हैं कि वह ईश्वर से उत्पन्न हैं और उनके जीवन का उद्देश्य दिव्य है !

तदनन्तर इस भाव के साथ मानो वह इस समस्या को पूर्णतः हल कर चुका हो उसने अपना रिवालवर उठाकर हवाई फ़ैर किये । ऐसा प्रतीत होता मानो वह ईश्वर पर गोली चला रहा है; किन्तु वास्तव में यह आक्रमण प्रारम्भ करने का संकेत मात्र ही था । वृद्ध ने अपने दोनों हाथ क्रास के रूप में अपनी छाती पर रख लिये और तत्काल उसके अंक में से एक छोटा-सा झबरा बन्दर कूद पड़ा जो एक ज़ञ्जीर द्वारा वृद्ध की कलाई से बँधा हुआ था । वृद्ध ने हमें गाली दी— 'तुम बड़े हरामी सुअर हो ।'

तत्पश्चात् वह वृद्ध मुड़कर पीछे की ओर चल पड़ा । बन्दर उसके

पीछे-पीछे कूद-कूदकर चल रहा था। ऐसा प्रतीत होता था मानो वह अपनी इच्छा के प्रतिकूल खिंचा चला जा रहा है। बुड्ढा कभी इधर और कभी उधर मुड़ता था मानो वह बन्दर के आदेश पर नाच रहा हो! हम दोनों बाग़ों की ओर भागे। सामर ने मुझसे प्रश्न किया:—

'आक्रमण की कोई योजना भी तैयार की है?'

मैंने उत्तर दिया कि स्वच्छंद कर्माधिकार के बिना क्रांति क्रांति ही नहीं कही जा सकती।

'परन्तु क्या तुम्हारे विचार में वह कारागार पर आक्रमण करेंगे?'

'हाँ', मैंने उत्तर दिया, 'अपने बंदी भाइयों की आत्माओं को हम प्रकाश देने जा रहे हैं।' सामर ने इसका क्या उत्तर दिया, मुझे मालूम नहीं, क्योंकि जेल के गारद ने इस समय एक बाढ़ मारी। इसके अतिरिक्त मेरा ध्यान भी उधर नहीं था और उसका स्वर भी बहुत धीमा था। इतने में विलाकम्पा ने हमारे पास आकर कहा—

'मैं तो अब यहाँ से जा रहा हूँ।'

'किधर?'

'मैं सोना चाहता हूँ। मैंने तीन दिन से कपड़े नहीं उतारे हैं। मैं देहात की ओर जा रहा हूँ।'

यह कहकर उसने अपना रिवालवर उठाया और जेल के फाटकों के इर्द-गिर्द जो गहन अंधकार था उस पर नौ फ़ायर किये। रिवालवर ख़ाली करके उसने जेब में रख लिया और इस भाव से मानो वह अपना कर्तव्य पूरा कर चुका हो वहाँ से अन्तर्धान हो गया। सामर का विचार था कि बिलाकम्पा भावी विपत्ति की आशंका से जान बचाकर भाग गया था। परन्तु उसका उद्देश क्या था। संभवतः स्टार को अपना लेने के विचार से उसने ऐसा किया था। यह बात सामर ने एक दुकान के वितान में आश्रय ग्रहण करते हुए उच्चस्वर में कही थी। अब घोड़ों की टापों का शब्द सुनाई दिया और मैं भी सामर को

भाँति छिप गया। दुकान के अन्दर पहुँचकर मैंने देखा कि एक बक्स में जिसके जोड़ों पर जस्त लगा हुआ था पानी में एक सामुद्रिक जन्तु पड़ा हुआ है। वह एक प्रकार का सामुद्रिक घोड़ा था। वह चिकना और चमकदार था। उथले और गंदे जल में वह खिन्न-सा पड़ा हुआ था। बक्स इतना छोटा था कि वह करवट भी नहीं बदल सकता था। एक दुष्ट प्रकृति नौकर मलमल का पायजामा पहने हुए बाहर आया। सामर और मैं—हम दोनों चुपचाप खड़े रहे। नौकर ने दियासलाई जलाई। जब उसने हमारे हाथों में रिवालवर देखे तो उसने बक्स की ओर इंगित करते हुए कहा—

'फ़िलिप को मत मारना!'

यह सुंदर जीव इस प्रकार हिनहिना उठा मानो वह डूबा जा रहा हो। यह बक्स उसके लिए उपर्युक्त नहीं है। वह बालटिक समुद्र का निवासी है। हमें इस जानवर को भी उसके बंधन से मुक्त करना है। सामर ने मुझसे कहा :—

'और यह दूसरा जानवर? यही तो उसका जेलर है न?' उसने रिवालवर से नौकर को इंगित करते हुए कहा।

उस रुक्षस्वभाव नौकर ने पिस्तौल को दूसरी ओर मोड़ने की चेष्टा करते हुए कहा—

'मुँह से जो कुछ चाहो कह लो किन्तु तमञ्चा दूसरी ओर फेर दो।'

फिर उसने यह देखा कि वह जानवर जीवित है या नहीं। फिर उसका खेल दिखाने के अभिप्राय से एक बालटी में से एक सड़ी हुई मछली उठाई और वह उस जानवर को दिखाते हुए कहा—

'फ़िलिप, ज़रा चार्ल्स्टनवाला नाच तो दिखाओ!'

बन्दी जल-सिंह ने बड़े कष्ट से अपने शरीर को तोड़ मरोड़कर अन्त में मछली को मुँह में पकड़ पाया। वह उसे तत्काल निगल गया। सामर ने उसकी चमकीली काली पीठ देखकर कहा—

'इसकी पीठ पादरियों जैसी है।'

बाहर से तड़ातड़ गोलियों की आवाज़ें आ रही थीं। ऐसा प्रतीत होता था मानो सारा स्कायर घोड़े सधानेवाले सवारों से भरा हुआ है जो अपने हंटर घुमा रहे हैं। सामर का ध्यान फिर विलाकम्पा की ओर चला गया और उसने कहा—

'आओ आगे बढ़ चलें। यदि हमारे गोलियाँ लग जायें तो बहुत अच्छा हो।' तदनन्तर उसने जलसिंह के बक्स की ओर रिवालवर उठाकर कहा—

'हमारे और इस जानवर के जीवन में सादृश्य है। हमें भी अपनी मछली के लिए नाचना होता है और अपने रखवाले की जेबें रुपयों से भरनी पड़ती हैं।'

अब हम बाहर आते हैं। जेल की खिड़कियों से क़ैदी हमें प्रोत्साहित करने के लिए ज़ोर से नारे लगा रहे हैं। तमञ्चों के द्रुतगामी शब्द के साथ गारद की राइफ़िलों की भारी आवाज़ सुनाई पड़ रही है। किन्तु न कहीं कामरेड ही दिखाई देते हैं न गार्ड ही। अपने-अपने गुप्तस्थानों से कोई बाहर नहीं आता। अन्धकार गहरा है और ऐसा प्रतीत होता है कि यह अन्धेरा जीते जी यूँही रहेगा या यूँ कहलो कि ऐसा मालूम होता है कि हम सभी दो तीन मिनट के मेहमान हैं। वह बन्दरवाला कभी-कभी दिखाई दे जाता है। बन्दर उसके पीछे कूदता, खींचता-खिंचता चला जा रहा है। गोलियों से घबड़ाकर बुड्ढा अपने हाथ क्रास के रूप में छाती पर रख लेता है और कराहने लगता है। गोलियों की संख्या बढ़ जाती है। दोनों ओर के बहुत-से आदमी काम आ चुके हैं—यह बात निस्सन्देह है। बराबरवाली झोंपड़ी का वितान उठाकर दो व्यक्तियों को इंगित करता हुआ एक मनुष्य चिल्ला उठता है—

'देखो, यह यहाँ हैं—यह यहाँ हैं। मैं आपत्ति में पड़ना नहीं

चाहता।' उसका यह ख़याल है कि उसके वितान में छिपे हुए इन दो तमंचेवालों ने ही यह सब सत्यानाश कर रखा है। इस झोंपड़ी पर लिखा हुआ है—'मूरो का विध्वंस।' अन्दर मनुष्यकाय पुतलों का एक ग्रूप है जो दाढ़ीवाले मूरों के प्रतिनिधि हैं। वह सशीघ्र फिरकी घुमा देता है और यह मूर लोग एक ओर से निकलकर एक दूसरे पर बड़ी गंभीरता के साथ कूदने लग जाते हैं। सामर कहता है कि इस झोंपड़ी का मालिक एक पश्चिमी गॉथ है। यह तमाशा पूर्वजों के स्वभाव की पुनरावृत्ति है। इस बीच में यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि आक्रमण विफल होता जा रहा है। आश्रयस्थान से बाहर आना असंभव है क्योंकि गारद बहुत बढ़ा दी गई है, सारे द्वार बन्द कर दिये गये हैं और खिड़कियों की प्रत्येक दरार से गोलियाँ बरस रही हैं। उन्होंने सारे स्क्वायर को अवश्य घेर लिया होगा। यदि हम चूहों की मौत नहीं मरना चाहते तो हमें किसी न किसी प्रकार यहाँ से भाग चलना होगा। व्यक्तिगत कर्माधिकार लोगों को लोहे के फाटक की ओर ले जा रहा है और हम भी बड़ी सावधानी के साथ उसी ओर चलते हैं। मूरों का अध्यक्ष गोली से मारा जा चुका है और सिविल गार्डों की गोलियाँ मूरों में उथल-पुथल मचा रही हैं।

हम जेल की दीवार के पीछे जा पहुँचते हैं। उसमें बहुत सी खिड़कियाँ हैं। हम बड़ी सतर्कता के साथ नीचे उतरते हैं क्योंकि उस ओर से भागने का मार्ग रोकने के लिए सिपाही पहरे पर खड़े कर दिये गये हैं। हमें एक घण्टे से अधिक समय तक झाड़ियों में छिपे पड़े रहना पड़ता है। हमारे ऊपर गोलियाँ चल रही हैं। गार्डों की गोलियाँ एक दूसरे को अवश्य लग रही होंगी। वह बुड्ढा, उसका बन्दर और जलसिंह फ़िलिप—सभी स्वाहा हो गये होंगे। मिट्टी के बर्तनों और खिलौनों की सब दुकानें तहस-नहस हो गई होंगी। घोड़ों के इधर-उधर दौड़ने का शब्द भी सुनाई दे रहा है। कुछ और भागे

हुए कामरेडों से भी हमारी भेंट होती है। प्रातःकाल जब हम मॉनक्लोश्रा स्क्वायर की दूसरी ओर पहुँचते हैं तो हमें यह ज्ञात होता है कि हम लोग कम से कम पन्द्रह आदमी हैं। उजाला होने पर मैं देखता हूँ कि सामर क्रोध में भरा हुआ है। वह चलता हुआ कह रहा है—

'क्या तुम कारावासी भाइयों के पास प्रकाश पहुँचाने के इच्छुक नहीं हो ? लो देखो, प्रकाश वह रहा।'

बात सच्ची है। सूर्य उदय हो रहा है। किन्तु सामर को यह क्या हो गया है ? वह सदैव असन्तुष्ट-सा रहता है और चाहे उचित हो या अनुचित बात-बात पर बिगड़ता रहता है। सच्ची बात तो यह है कि हम लोग भी यह भलीभाँति जानते हैं कि अब दिन निकल आने के कारण हमारा सफल होना कठिन है। अन्धकार में हर एक काम आसान मालूम होता है; किन्तु अब सूर्य के प्रकाश में पेड़ और मकान, यहाँ तक कि वायु भी हमारे अनुकूल नहीं मालूम होती। ये सब तटस्थ हैं, और पेड़ों की हरियाली और आकाश की नीलिमा पर विजय पाने के लिए जितनी शक्ति की आवश्यकता है उतनी शक्ति हम लोगों में तो है नहीं।

मुझे नहीं मालूम कि क्या हुआ। कोई चिल्लाया, कूदा और भाग पड़ा। जब मुझे इस परिस्थिति का भान हुआ तो हमारे ऊपर तीन राइफिलें तनी हुई थीं। तत्पश्चात् प्रश्नों और तलाशी का नम्बर आया।

उनमें से एक ने यह उत्तर दिया कि मैं एक सक्रिय अराजकवादी हूँ। क्या जेल में भोजन दिया जाता था ? बहुत अच्छा। सक्रिय अराजकवादी !

दूसरे ने प्रश्नकर्ता की ओर न देखते हुए उत्तर दिया—

'मैं एक मज़दूर हूँ। जानते हो मज़दूर किसे कहते हैं ? जो अपने पुरुषार्थ द्वारा रोटी खाता है उसकी यह संज्ञा होती है।'

एक अफ़सर ने उसके उलटी तलवार मारी। तदनन्तर हमारी

मुश्कें बाँधकर वे हमें एक राजमार्ग पर ले गये जहाँ जेल की एक लारी खड़ी हुई थी। उसमें खाने बने हुए थे। हम सबको किसी प्रकार उन खानों में बैठना पड़ा। सदर कोतवाली में ले जाकर हमको सबसे नीचे तल्ले की एक ओर की जालदार कोठरियों में बन्द कर दिया गया। वहाँ क्राउज़ेल, लिबर्टो, मारग्राफ़ और हेलियोंस भी मौजूद थे। ये सब भी पिंजड़ों में बन्द थे। दो एजेन्ट हमसे प्रश्न करते थे और तीसरा एजेंट टाइपराइटर खटखटाये जाता था।

मालूम तो यह होता है कि ये लोग हमें आज ही जेल ले जाएँगे। आक्रमण में भाग लेने से हम इन्कार नहीं कर सकते, किन्तु अपने बयानों में हम इससे इन्कार करते हैं, क्योंकि पुलिस के साथ हमारे इस संघर्ष में अपराध स्वीकार कर लेना सबसे बुरा है।

वे हमें कोठरियों में बन्द नहीं करते। यह लक्षण तो अच्छा है। हमें तहखाने में ले जाकर एक पंक्ति में खड़ा कर दिया जाता है। हमें इसी तरह घण्टों खड़ा रक्खा जाता है। अपनी कोटरी के सीखचों के पास आकर लिबर्टो हमसे कई प्रश्न करता है।

'क्या सामर भी पकड़ लिया गया है? क्या केंद्रीय समिति की बैठक हो गई?' एक गार्ड कारतूसों से भरा हुआ एक दो पौंड वज़नी बक्स सीखचों पर दे मारता है।

'ओ आदमी, तुम पीछे हटो।'

वे लोग सब कोठरियों के भीतर चले जाते हैं। ये लोग इन क़ैदियों के साथ इतना कड़ा बर्ताव करना क्यों आवश्यक समझते हैं? एक गार्ड इसका यह कारण बतलाता है:

'हम छः दिन से लगातार ड्यूटी दे रहे हैं जिससे हमारा स्वास्थ्य मिट्टी में मिल गया है!'

यह नीचे का तल्ला समकोण है और गार्ड बराबर इधर से उधर, उधर से इधर टहलते रहते हैं। वे न हमें बात करने देते हैं और न

ज़मीन पर बैठने ही देते हैं ! हममें जितने वृद्ध हैं वह लोग स्वयं भी फ़ौज में नौकरी कर चुके हैं और इस बात को जानते हैं कि इस दशा में मनुष्य की गति कितनी परिमित हो जाती है और वह इस प्रकार स्वच्छन्द कर्माधिकार से वञ्चित हो जाता है। वह गार्डों के इस व्यव-हार के औचित्य को भी समझते हैं। क़ैदियों को बात न करने देना और उन्हें कोठरियों के अन्दर चले जाने का हुक्म देने के मर्म को वह भली भाँति जानते हैं। जब मैं बीस वर्ष का नवयुवक था तो मैं भी उन्हीं के सदृश था—अनुशासन तथा आज्ञा का दास था। किन्तु जीवन के कटु अनुभवों ने मुझे यह सिखा दिया है कि अनियन्त्रित कर्माधिकार के बिना मनुष्य कुछ भी नहीं है। एक गार्ड आकर प्रश्न करता है—

'जेल पर आक्रमण करने से तुम्हारा क्या मतलब था ? जब तुमने किसी भी योजना के बिना यहाँ आक्रमण किया तो तुम्हें यह अपना मुँहमाँगा फल ही मिल रहा है।'

हमने उनकी कोठरियों के सीखचों में से देखा कि हमारे चारों सहयोगी दरवाज़ों से लगभग एक गज़ के फ़ासले पर अन्धकार में बैठे हुए हैं। वही एजेण्ट सार्वजनिक रक्षा विभाग के एक पदाधिकारी से बातें करने लगा। उसने कहा—

'जो सूचना हमें सिंडीकेटों के स्थानीय परिषद् के मंत्री से प्राप्त हुई है वह सर्वथा सत्य नहीं है।'

'इस समय मंत्री कौन है ?'

'मिगुएल पैलेशियॉस।'

हम उनकी बातें सुन सकते हैं। वे यह बातें जान बूझकर हमें सुनाने के लिए कर रहे हैं। उनका उद्देश्य यह है कि हम कामरेड पैलेशियॉस को जो हमारी संस्था के सर्वोत्कृष्ट सदस्यों में से एक है, मुख़बिर समझने लग जाएँ। इस धोखे पर यथार्थता पूर्णतः घटित

करने के लिए अफ़सर एजेन्ट को सावधान करता है—

'चुप हो जाओ ; वे लोग तुम्हारी बातें सुन रहे हैं।'

किन्तु ये दोनों भूल में पड़े हुए हैं। पहली बात तो यह है कि हम सब इस प्रकार के धोखों को समझते हैं, और दूसरी बात यह है कि कामरेड पैलेशियाँस स्वयं कई दिन से जेल में है। स्पष्टतः ये दोनों इस बात को भूले हुए हैं।'

लिबर्टो टाँग पर टाँग रक्खे हुए बैठा है। हैलियाँस के पैरों के तलुए पृथ्वी पर हैं और कमर के पीछे हाथ किये हुए उनके सहारे बैठा हुआ है। काडज़ेल पाँव सिकोड़े हुए घुटनों पर ठोढ़ी रक्खे बैठा है। ऐलिनियो बिलकुल बेहोश सा प्रतीत हो रहा है। यद्यपि अब खूब दिन निकल आया है फिर भी ये लोग अभी सो नहीं सके हैं। इन्हें बराबर इधर-उधर दौड़ाया जा रहा है। कभी जज के सामने पेशी होती है तो कभी पुलिस के अध्यक्ष के सामने। कभी इन्हें हाल के आये हुए बंदियों के सामने ले जाया जाता है। सारांश यह कि दिन-रात के चौबीसो घण्टों में इन्हें एक क्षण भी चैन से बैठने नहीं दिया गया है। मालूम होता है कि इनका मामला संगीन है, इन लोगों को कम से-कम दस वर्ष की सज़ा होगी। उनकी छः दिन की बढ़ी हुई टोढ़ी और डगमगाती हुई आँखों के देखने मात्र से उनकी दुर्दशा भलीभाँति हृदयङ्गम हो जाती है। हमको फिर उसी जेल की खानेदार लारी में बिठाकर जेल ले जाया जायगा।

कुछ देर पश्चात् एक पदाधिकारी जाली के पास जाकर कहता है—

'खड़े हो जाओ।'

ये चारों आज्ञापालन करते हैं।

'तुममें एलिनियो मारग्राफ़ किसका नाम है ?'

'मेरा।' ऐलिनियो उत्तर देता है।

'तुम्हारी पत्नी छाती से बच्चे को चिपकाये हुए मरणासन्न अवस्था

में इन्फेन्टास स्ट्रीट में पड़ी हुई मिली है। उसको अस्पताल पहुँचा दिया गया है।'

'उसको क्या हुआ है।'

'भूखों मर रही है।'

ऐलिनियो इस बात को सम्भव समझता है। मकान के मालिक से मिलकर पुलिस ने उसको घर से निकाल दिया था। इन लोगों पर किराया बहुत चढ़ गया था। पुलिस-पदाधिकारी ऐलिनियो के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। किन्तु वह मुँह ही मुँह में कुछ बड़बड़ाया जसको वह अफ़सर कुछ समझ न सका। उसने फिर कहा—

'तुम लोग अपनी औरतों को ऐसी दुर्दशा में छोड़ आते हो!'

ऐलिनियो चुप रहा और अफ़सर उसे ताने देता रहा। अन्त में ऐलिनियो ने उसे गालियाँ दीं। तो उस पुलिसवाले ने धमकाकर कहा—

'अभी दरवाज़ा खोलकर तेरी रंगत देखता हूँ।'

'अभी खोल। खोलता क्यों नहीं?' ऐलिनियो ने क्रोध में लाल होकर कहा। वह उसको काटने-नोचने को अधीर हो रहा था। एक और अफ़सर और एजेण्ट ने आकर अपने साथी से कहा कि इन लोगों से बात करना व्यर्थ है। इससे क्यों व्यर्थ सिर मार रहे हो। किन्तु ऐसा क्यों कहा? यह बातें भी उन्होंने ऐसे विलक्षण भाव से कहीं कि चारो क़ैदी कुतूहल से उनकी ओर देखने लगे। उनमें से एक एजेण्ट ने हँसकर फिर कहा—

'किन्तु ऐसा क्यों?'

तदनन्तर उसने गार्डों को सम्बोधित करते हुए कहा—

'इन लोगों से हुज्जत मत करो। ये तो कुछ कहें उसके उत्तर में बस 'हाँ' करते रहो। यदि ये कुछ माँगे तो वह वस्तु इन्हें बाज़ार से ला दो।

बातचीत यहीं समाप्त हो गई। इसके पश्चात् न तो कोई बात उनमें

से किसी ने कही और न कोई विवाद ही किया। ये लोग न तो इन चारों को अपना शत्रु समझते हैं न अपराधी ही। वे उन्हें मनुष्य तक नहीं समझते। फिर एक गार्ड आकर पूछता है—

'क्या तुम्हें किसी वस्तु की आवश्यकता है ?'

लिबर्टो जिसके पास कुछ रुपयों की रसीद है उसको गार्ड के हाथ में देकर कहता है—'जेल में रुपया जमा है। यह रसीद ले जाओ और हम चारों के लिए क़हवा ले आओ।'

गार्ड शिकायत के स्वर में कहता है—

'अरे भाई, यह तो अन्याय है। हम तीनो आदमियों ने यहाँ बाहर खड़े-खड़े रात-भर ड्यूटी दी है। हमारे सुबह के क़हवे में भी दो घण्टे की देर हो चुकी है।'

लिबर्टो बैठ जाता है, खोपड़ी पर हाथ फेरता है और क्षीण स्वर में कहता है—

'बहुत अच्छा, जनाब। तो फिर आप अपने तीनों के लिए भी लेते आइये।'

अम्पारो का मृत्यु-संकल्प

अम्पारो साधारणतया ८ बजे सोकर उठी और स्नानागार में चली गई। यद्यपि ठण्ढे पानी से नहाने से उसकी तबियत खराब हो जाया करती थी फिर भी आज उसने जलपात्र में गुनगुना पानी ही भरा। देहात की ओर खुलनेवाली बड़ी खिड़की का पट उसने पहले ही खोल दिया था। उसमें से फ़ौलाद के रंग का प्रातःकालीन धूसर प्रकाश आ रहा था। एनामल पर आकाश का प्रतिबिम्ब पड़ने के कारण जल हलके नीले रंग का प्रतीत होता था। जल में प्रविष्ट होकर वह कुछ देर तक चमकीली टोंटियों को निर्निमेष दृष्टि से देखती रही जिनमें उसकी गरदन और कन्धों का प्रतिबिम्ब पड़ रहा था। फिर दृष्टि उठाकर उसने खिड़की में से आकाश की ओर देखा। आज उसे ऐसा मालूम हो रहा था मानो वह सारे संसार से पृथक् हो। उसे कोई

भी कहीं अपना नहीं जान पड़ता था। उस रात से उसके अन्तस्तल में एक रहस्य छिपा हुआ था। उस रहस्य ने उसके चारों ओर ऊँची दीवारें खड़ी करदीं थीं। इस दशा में उसके लिये केवल आकाश और मेंघों को देखना ही सम्भव था जैसा कि वह इस समय कर रही थी।

इस समय उसके विचारों का केन्द्र सामर था। जब उसने सामर से यह कहा था कि उसने स्वप्न कभी नहीं देखा था, तो वह कैसा आश्चर्यान्वित हो उठा था? उसके हृदय में सामर के प्रति अब वह उग्र भाव नहीं था। जो उसे उसकी क्रान्ति, उसकी द्वेषपूर्ण भावनाओं तथा उसकी भुजाओं की ओर बरबस खींच ले जाया करता था। वह उसके हृदय से सदा के लिए निकल गया था। वह जानती थी कि अब वह कभी लौटकर आएगा भी नहीं। एक प्रचण्डवात उसे उससे दूर खींच ले गया था और निरन्तर उससे अधिक दूर भगाता रहेगा। वह सब बातें अब असम्भव थीं। वह इस विषय पर शान्तिपूर्वक विचार कर रही थी। गुनगुना जल उसके कन्धों और वक्ष पर चढ़कर गिर रहा था। गत दो वर्ष उसने मदोन्मत्त की भाँति मिथ्या कल्पनाओं में काटे थे। उसने कल रात जो सुहाग का जोड़ा पहना था अब उस पर एक कभी न छुटनेवाला धब्बा पड़ गया था। तत्पश्चात् उसके मन में एक अद्भुत विचार उदय हुआ। वह सुन्दर विचार यह था कि कदाचित् उसके इस उन्माद का फल एक नन्ही बच्ची की प्राप्ति हो।

नहाकर जल से निकलते हुए उसने अपना प्रतिबिम्ब सामने के दर्पण में देखा। उस मधुर रात्रि के बाद से उसे अपने शरीर की श्वेतता और सरसता पर गर्व हो गया था। क्या वह अब भी प्रेम किये जाएगी? वह यह नहीं जानती थी, और इस विषय पर रुककर विचार करना भी नहीं चाहती थी। अब यह सब असम्भव था। सामर

उसके साथ सुखी नहीं हो सकता था। वह तो उस सुदूर देश का पथिक था जहाँ कि वह कल्पना में भी उसका साथ नहीं दे सकती थी। पिता से मज़दूरों के षड्यन्त्र की बात कहकर उसने उसके साथ जो विश्वासघात किया था उसके कारण सामर उसको अवश्य त्याग देगा। उसके छज्जे के नीचे एक मनुष्य का जो वध किया गया था उसने उन दोनों के मध्य में ऐसी गहरी खाई खोद दी थी—उन्हें एक दूसरे से इतना दूर हटा दिया था—जिसको लाँघ जाना असम्भव-सा प्रतीत होता था। उसका संसार ही उसके संसार से बिलकुल भिन्न था। सामर के संसार में एक अथवा सहस्रों मनुष्यों की हत्या कर डालना और फिर भी निर्दोष बने रहना सम्भव था। वह इस बात को समझती तो थी किन्तु इसको हृदयङ्गम करना नहीं चाहती थी। उसे अपनी इच्छा के विरुद्ध फिर उसी दुष्ट फ़ाऊ का ध्यान आने लगा। वही भयानक दृश्य—हरी-हरी बेलों तथा सूरजमुखी के नीले फूलों के मध्य में उसका गोलियों से छिपा हुआ शरीर—फिर उसकी आँखों में फिर गया। इससे पहले उसने रिवालवर छूटने का शब्द नहीं सुना था और वह यह समझा करती थी कि मृत्यु से खेलनेवाले असाधारण प्राणी ही यह भीषण कार्य किया करते हैं। श्वेत साया पहने हुए वह खिड़की पर झुककर खड़ी हो गई। फ़ाऊ के आहत शरीर से गिरे हुए रक्तविंदु अभी तक वहाँ देख पड़ते थे। ल्यूकस के यह मित्रगण हत्यारे थे। आवश्यकता पड़ने पर स्वयं ल्यूकस भी हत्या कर सकता था। उसके संसार में मृत्यु के साथ प्रार्थनाओं, आँसुओं और काले वस्त्रों का कोई सम्बन्ध ही नहीं था, वहाँ तो केवल एक दीवार और कुछ अपरिचित व्यक्तियों की आवश्यकता थी। सामर के संसार के लौह-विधान में न तो चोग़ा, टोपी और लेस की आस्तीनें पहननेवाले न्यायकर्ताओं की आवश्यकता थी, न गार्डों और छपे हुए क़ानून की। वह उसके संसार में कभी जा ही नहीं सकती थी। यदि

वह उसका अनुवर्तन करने की इच्छा भी करे तो भी उन शब्दों के कारण जो उसने अपने पिता से कहे थे वह सामर से पृथक् हो गई थी। 'पिताजी, ये लोग रेजिमेंट में विद्रोह फैलाने का प्रयत्न कर रहे हैं।' इन लोगों के विचार में इन शब्दों का कहना विश्वासघात था। विश्वासघात। उसके छज्जे के नीचे मारे जानेवाले व्यक्ति का भी तो यही अपराध था—विश्वासघात !'

इसी वजह से वह अपने आपको सामर के अयोग्य समझती थी। अब वह अपने आपको अपने कुटुम्ब, अपने शिशुवत् स्वप्नों, सोहाग वस्त्रों के (जो पहले ही कलंकित हो चुके थे) तथा गृहस्थ-जीवन के सुख के अयोग्य समझ रही थी। अब वह एक पतिता स्त्री थी, उस मधुर प्रेम-क्रीड़ापूर्ण रजनी के कारण नहीं, किन्तु उस विश्वासघात के कारण ! इस विश्वासघात का असह्य विचार उसके प्राणों को भेदे डालता था, उसके जीवन की जड़ों को काटे दे रहा था। वह उसकी माता की पवित्र स्मृति तक को कलुषित किये दे रहा था। तदनन्तर इस उलझन में पड़ जाने के कारण उसका सिर चकरा गया। इतने थोड़े समय में इससे पहले कभी उसने इतनी बहुत-सी बातें नहीं सोची थीं। वह स्नानागार से बाहर आई। बरामदों में प्रातःकालीन उदासीनता, शून्यता और ठंडक मालूम होती थी। खाने का कमरा अपरिचित-सा प्रतीत होता था। वह होटल का कमरा-सा जान पड़ता था। सेविकाएँ तो एक बहुत दूर की बात मालूम होती थीं। जब एक नौकरानी ने आकर उससे कुछ कहा तो उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानों उसका कंठस्वर उसने कभी पहले सुना ही नहीं था। वह उसकी ओर आँख उठाकर नहीं देखना चाहती थी। सेविका ने कहा कि एक नौजवान लड़की उससे भेंट करना चाहती थी। वह नौकरोंवाले ज़ीने से आई है और रसोई घर में उसकी प्रतीक्षा कर रही है। अम्पारो ने रसोई घर में पहुँचकर देखा कि बेंत की कुर्सी के किनारे पर एक

नवयुवती बैठी हुई है। वह खूब बनी-ठनी थी। उसके केश गुथे हुए थे। वह नीली जर्सी पहने हुए थी और उसकी एक बग़ल में एक मुर्ग़ा था।

'ल्यूकस, फिर भी ल्यूकस!' उसने अरुचि के साथ मन ही मन कहा। फिर भी उसने नवागता युवती से अपने पीछे आने की प्रार्थना की।

अम्पारो के कमरे में पहुँचकर वे दोनों आमने-सामने बैठ गईं। स्टार के मुख पर भयानक शांति का भाव देख पड़ता था। उसके नेत्र पूर्णतः खुले हुए तथा स्थिर थे। अम्पारो को आशा थी कि स्टार स्वयं वार्तालाप आरम्भ करेगी; किन्तु उसके कुछ देर कुछ न कहने पर उसने प्रश्न किया—

'क्या तुम ल्यूकस की सहचरी हो?'

स्टार ने हाँ-सूचक सिर हिला दिया। अम्पारो सोचने लगी 'कामरेड' वाग्दत्ता पत्नी से कहीं ज़्यादा प्यारी होती है। वह स्वयं कभी सामर की 'सखी' होने का सौभाग्य प्राप्त न कर सकी थी। उसने स्टार की टोपी उठाकर शृंगार की मेज़ पर रख दी। उसमें लिपटा हुआ एक प्लेटदार रिवालवर खट-से फ़र्श पर गिर पड़ा। इस पर स्टार मुस्करा दी और रिवालवर उठा लेने के लिये नीचे झुकी। चूँकि उसे हाथ में लिये रहना स्वाँग बनाना-सा प्रतीत होता, अतः उसने रिवालवर को टोपी के ऊपर रख दिया। अम्पारो ने सोचा, चूँकि यह सामर की सखी है अतएव उसके लिए रिवालवर रखना और आवश्यकता के समय उसका उपयोग करना नितांत स्वाभाविक था। यह नवयुवती सामर तथा उसके मित्रों के अद्भुत तथा नूतन संसार से उसके पास आई थी। आख़िरकार स्टार बोलीः—

'चूँकि मुझे यह मालूम है कि आप सामर की वाग्दत्ता पत्नी हैं इसलिये मैं आपसे यह पूछने आई हूँ कि क्या आपको यह मालूम है कि

कल उन लोगों के बारको में पकड़े जाने के बाद उनके साथ क्या कार्यवाही की गई है।

अम्पारो उसे सहर्ष सारी बातें बता देती किन्तु उसे सामर के अतिरिक्त किसी का कुछ हाल ही नहीं मालूम था।

'क्या वह अब भी बारकों की कोठरियों में बन्द है?' स्टार ने पूछा।

यद्यपि यह शब्द कहते हुए उसकी जान-सी निकली जा रही थी तो भी अम्पारो ने शीघ्रता के साथ उत्तर दिया—

'नहीं, नहीं, वह बिलकुल स्वतंत्र है।'

स्टार की समझ में नहीं आया कि अकेले सामर को किस प्रकार मुक्त किया जा सकता था। अतः अम्पारो ने इसका यह निरूपण किया—

'वह भाग गया।'

स्टार की दृष्टि अब भी जिज्ञासापूर्ण थी। अतएव अम्पारो ने एक ही श्वास में उसे सारा क़िस्सा सुना डाला। उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि उसके मुख से यह शब्द किस प्रकार निकल सके :

'पिताजी स्वयं अपनी ज़िम्मेदारी पर उसे यहाँ लाये थे किन्तु वह भाग गया।' इन शब्दों से ऐसा प्रतीत होता था कि वह सामर पर दोषारोपण कर रही है, अतः उसने सशीघ्र यह भी कहा—

'मैंने भी उसको इस काम में सहायता दी थी।'

इसके बाद कुछ समय तक वह दोनों मौन बैठी रहीं। स्टार और अम्पारो दोनों एक दूसरे को घूर कर देख रही थीं। अम्पारो ने इशारे से प्रश्न भी किया। धूसर प्रकाश सहसा निर्मल हो उठा, फिर बिलकुल छिप गया, और फिर चमक उठा। फिर दूरस्थ मेघों के रह-रहकर गरजने का शब्द सुनाई दिया। इस समय झंझावात का उठना एकदम अप्रत्याशित-सा था—बिलकुल एक तमाशा-सा प्रतीत होता था। बादलों के गरजने का शब्द सुनकर मुर्ग़ा व्यग्र हो उठा। अब ये दोनों चुप बैठ

थीं। कहने को कुछ था ही नहीं। कुछ देर बाद स्टार ने मौसम की बात छेड़ते हुआ कहा कि मैं वारिश आने से पहले चली जाऊँगी; किंतु अम्पारो ने उसे रोक लिया।

'तुम्हारे खयाल में वह अभी खतरे में है?' अम्पारो ने पूछा।

'कौन?'

'ल्यूकस।'

स्टार ने कुछ असमंजस के बाद उत्तर दिया—

'हाँ, वर्तमान अवस्था में तो ज़रूर खतरा है। वह उसका पीछा करेंगे। उसको पकड़कर लाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। कम से कम उस समय तक जब तक कि यह गड़बड़ मची हुई है। क्या आप नहीं देखतीं कि उसको सक्रिय अवस्था में गिरफ़्तार किया गया है?'

अम्पारो ने इस बात को एक सविवाद कटाक्ष के साथ 'हाय!' कहते हुए सुना।

स्टार ने अम्पारो की ओर एक कुतूहलपूर्ण दृष्टि से देखा। वह देखना चाहती थी कि बूज़्वों की प्रेम में क्या दशा हुआ करती है। अम्पारो को उसने अभी तक प्रच्छन्न उद्विग्नता की दशा में देखा था। उसके हृदय की दशा उसके हावभाव से स्पष्ट ज्ञात हो रही थी। जब अंधकार को चीरती हुई बिजली कौंदती थी तो अम्पारो के केश सोने-चाँदी के तारों के समान चमचमा उठते थे। स्टार ने उससे पूछा—

'क्या सचमुच उसके साथ तुम्हारी सगाई हो चुकी है?

'हाँ। किंतु आप यह प्रश्न क्यों कर रही हैं?'

स्टार ने कंधे उचका दिये। मुर्ग़ा भागने का प्रयत्न कर रहा था। उसको ज़ोर से नीचे दबाकर स्टार ने उत्तर दिया—

'यूँही पूछ लिया।'

अम्पारो की भृकुटी पर बल पड़ गये। इससे उसकी सुंदरता में वृद्धि हो गई। उसे स्मरण हो आया कि स्कूल में यह बतलाया गया

था कि इस प्रकार के सीधे प्रश्न अशिष्ट समझे जाते हैं। धृष्टता के भाव को हटा देने के लिए स्टार को यह बतलाना चाहिये कि उसने यह प्रश्न क्यों किया था। उसको स्टार के अधरों पर प्रच्छन्न मुस्कराहट भी देख पड़ी। फिर इस प्रकार मानो बिजली के कौंदने ने उसको भावुकता से मुक्त करके उसके भीतर नवशक्ति का संचार कर दिया हो, उसने चमकते हुए चाँदी की क़लईवाले रिवालवर की ओर देखा। उसके मन में आया कि इस अशिष्ट युवती को मार डाले किंतु उसने इस इच्छा को दबाकर केवल इतना कहा—

'मेरा विचार है कि आप मुझे कुछ बताना चाहती हैं किन्तु आप झिझक जाती हैं। निस्संकुचित होकर वह बात साफ़ कह डालिये।'

अम्पारो का तीर निशाने पर लगा। स्टार कहने लगी—

'आपके इस संबंध का कोई शुभ परिणाम नहीं निकलेगा। सामर आपसे प्रेम नहीं करता।'

'किन्तु आप यह बात किस आधार पर कह रही हैं?'

अब बातचीत में तेज़ी आ गई। अम्पारो के नेत्र चमक उठे। किंतु स्टार की दृष्टि स्थिर और शांत थी, मानो उसके नेत्र बाज़ार से मोल लिये हुए शीशे के अंटे हों! वह कहे गई—

'कोई आधार तो है ही।'

'लेकिन वह है क्या? मेरा खयाल है...' वह कोई संदेहपूर्ण बात कहने जा रही थी।

स्टार ने उसकी बात काटकर कहा—'आपके खयाल करने की कोई ज़रूरत ही नहीं है। बात बिलकुल साफ़ है। सामर आपसे घृणा करता है।'

उँगलियों में उँगलियाँ डालकर अम्पारो अपने नखों को हाथों के पृष्ठ भागों में गड़ाने लगी। फिर उदासीनता का ढोंग रचकर उसने हकलाती हुई आवाज़ में कहा—

'क्या उसने स्वयं आप से यह बात कही है ?'

स्टार ने इस प्रश्न का कुछ उत्तर नहीं दिया। अम्पारो भौचक्की-सी इधर-उधर देखने लगी। वह कुछ कहना तो चाहती थी मगर उसकी समझ में नहीं आता था कि क्या कहे। सारी मुसीबत तो यह थी कि जो कुछ स्टार ने कहा था वही वह इसके पूर्व स्वतः कह चुकी थी! अब स्टार की इस चुप्पी ने उसकी पहली मधुर अनिश्चितता को सदा के लिए दूर कर दिया था। अब संदेह की कोई गुंजाइश ही नहीं रह गई थी। स्टार कहती जा रही थी—

'उसकी घृणा को तुम समझ नहीं सकतीं, क्योंकि तुमने उसके साथ केवल यही बुराई की है कि तुम उससे प्रेम करती हो। मैं भी, यद्यपि आपने मेरे साथ कोई बुराई नहीं की है वरन् कपड़े और खाना देकर अपनी सहृदयता का परिचय दिया है—मैं तक भी आप सब लोगों से द्वेष रखती हूँ।'

अम्पारो का ध्यान अपनी बातों पर न होते हुए भी स्टार कहती रही—

'फिर भी उसे पूर्णतः सुखी बनाना आपके हाथ में है।'

वह किस प्रकार सामर को सुखी बना सकती थी, यह बात पूछने का अम्पारो को साहस नहीं हुआ। वह उसके उत्तर से डरती थी। फिर भी, न पूछने पर भी, स्टार ने कटाक्ष द्वारा उसे अपना अभिप्राय समझा ही दिया। अब उनकी दृष्टि से दृष्टि जा मिली। स्टार ने निश्चय के स्वर में कहा—

'मैं क्रांति के नाम पर, अपने पक्ष की दुहाई देकर आपसे यह सच्ची बात कह रही हूँ।'

अम्पारो सोचने लगी सामर को किसी दूसरे को बीच में डालने की ऐसी क्या आवश्यकता थी। वह तो स्वयं ही सब कुछ निश्चित कर गया था। उसने उदासीनता के भाव से कहा—

'मैंने तुमसे कहा था कि हम दोनों की सगाई हो चुकी है, किन्तु यह बात सर्वथा सत्य नहीं है। तीन दिन से उसका निषेध हो गया है। यदि तुम इसी बात को जानने की इच्छुक थीं तो अब निश्चिन्त हो जाओ। वह सम्बन्ध अब टूट चुका है।' उसका हृदय टूक-टूक हुआ जा रहा था किन्तु वह किसी तरह शांत तथा दृढ़संकल्प का भाव बनाये रही।

'सदा सर्वदा के लिए?' स्टार ने पूछा।

उसके इन शब्दों में दर्पपूर्ण सन्देह का आभास था। इस लड़की के सभी शब्दों में, जिसको कि वह उतरे हुए कपड़े और फटे हुए जूते दिया करती है, कैसी तुली हुई दृढ़ता थी जिसका कि उसके परिसरों से कोई सम्बन्ध नहीं था। उसके प्रश्न का उत्तर देने के बजाय वह छज्जे के उस पार देखने लगी। उसने बारकों पर दृष्टिपात किया जिसकी लाली मायल धूसर दीवारें बिजली के आकस्मिक प्रकाश में गहरे गुलाबी रंग की मालूम हो रही थीं। अम्पारो को अब कुछ कहना-सुनना नहीं था, फिर भी वह स्टार के सदैव अपने समीप रहने से प्रसन्न होती। इस समय स्टार की दशा भी विचित्र थी। वह अपनी जगह उसी तरह बैठी हुई थी। वह उन वाक्यों को जो कि विदा माँगते समय कहे जाते हैं सहसा बिलकुल भूल गई थी। अम्पारो ने उसकी ओर दृष्टि उठाकर देखा। इतने भर से उसे अपने और सामर के बीच की खाई का पूर्ण निश्चय हो गया। स्टार के नेत्रों पर मुहर-सी लगी हुई मालूम होती थी। कोई भी प्रकाश रेखा उनके भीतर प्रवेश नहीं कर सकती थी। उनके भीतर जो प्रचंड प्रकाश भरा हुआ था वह उसको अन्दर नहीं आने देता। इस आन्तरिक ज्योति से उसकी आँखों की पुतलियाँ तथ उनके शुक्ल-मंडल ऐसी विलक्षणता के साथ चमक रहे थे कि यह प्रतीता होता था कि नीली मलमल सूख रही है।

'कदाचित् आप ल्यूकस से प्रेम करती हैं।'

अम्पारो की दृष्टि में स्टार का सामर से प्रेम करना नितांत स्वाभाविक ही था। स्टार ने भी हाँ-सूचक सिर हिलाकर कहा—

'हम सभी कामरेडगण परस्पर प्रेम करते हैं।'

इसी प्रकार का प्रेम ल्यूकस अम्पारो से भी चाहता था। साहचर्या की यह पहली आवश्यकता है—एक से विचार होना और प्रेम से मिलकर रहना। परन्तु यह बात सामर और अम्पारो के लिए असंभव थी। अन्तिम बातचीत के अन्तिम शब्द अभी तक उसके कानों में गूँज रहे थे—

'मुझे क्षमा कर रहे हो?'

'नहीं।'

यह बात उसने अन्धकार में ओझल होने के पूर्व कही थी। अपने पिता की रक्षा करने पर अम्पारो अब पछता रही थी। किन्तु अब जब पछताना व्यर्थ था तो पछताने से क्या लाभ? अब उन दोनों का कामरेड बन जाना सर्वथा असम्भव था। स्टार उसके मुख को देखकर मन ही मन कहने लगी—'यह बीमार है, इसे बूर्ज्वा प्रेम का रोग है।' और इधर अम्पारो उसकी दृष्टि से दृष्टि मिलाकर सोच रही थी—'यह एक नक्षत्र के समान भावरहित तथा शांत है। दृष्टिगोचर होती हुई भी वह अत्यन्त दूरस्थ है। यदि वह निष्कपट और सरल प्रकृति है फिर भी वह रहस्य से आवृत्त भी है।'

'तुम उससे, ल्यूकस से, मिलने जा रही हो न?' उसने स्टार से पूछा।

'मेरी उसके साथ इसी आध घण्टे के भीतर भेंट होगी।'

'क्या तुम उसके पड़ोस में रहती हो?'

'हाँ।'

'अपने माता-पिता के साथ?'

'मैं अपनी दादी के साथ रहती हूँ। उन्होंने गत रविवार को सड़क

पर मेरे पिता का बध किया है।' अम्पारो चौंक पड़ी, किन्तु स्टार की शांत तथा धीर मुद्रा को देखकर वह इस बात को प्रायः तत्क्षण भूल गई। उसने खड़े होकर स्टार से कहा—

'क्या तुम्हें पूर्ववत् गरीबों के लिए कुछ पुराने कपड़े ला दूँ ?'

'वे लोग ग़रीब नहीं हैं,' स्टार ने शिष्टभाव के साथ उसके शब्दों को ठीक करते हुए कहा—'वे मज़दूर हैं जिन्हें काम नहीं मिलता।'

तदनन्तर अम्पारो ने स्टार को बताया कि उसके पिता ने ख़ुराक लगाये जाने की ऐसी विधि निकाली थी जिसके कारण बेकार लोगों के लिये बहुत-सा खाना रोज़ बच जाया करता था। वह यह सिद्ध करना चाहती थी कि उसका पिता सहृदय था, किन्तु स्टार को इस बात में परोपकारशीलता के मिथ्याभिमान की दुर्गन्ध मालूम हुई। अम्पारो अंदर चली गई और एक मिनट बाद एक खुला हुआ लिफ़ाफ़ा हाथ में लिये हुए आई। उसके अन्दर एक पर्चा था जिस पर केवल यह पाँच-छः शब्द लिखे थे —'क्या तुम्हें अब अधिक सुख होगा ?' तत्पश्चात् उसने स्टार को दो जाकटें, एक पायजामा और तीन कमीज़ें दीं। स्टार ने धन्यवाद देते हुए कहा कि आपका यह नोट आधे घंटे के भीतर सामर के हाथ में पहुँच जायगा। विदा लेते समय जब उसने अम्पारो से हाथ मिलाया तो उसे उसका हाथ काँपता हुआ-सा मालूम हुआ और फिर जब उसने यह अंतिम वाक्य कहा तो उसका कंठस्वर भी भर्राया हुआ प्रतीत होता था—

'यदि तुम सामर से प्रेम करती हो तो उसे सुखी बनाना।'

उपर्युक्त शब्द कहते समय उसकी दृष्टि चांदी की प्लेटवाले रिवाल-वर जा पड़ी। उसके दिल में तो आया कि नीली जर्सी में गोली मार दूँ। वह भावावेश से विह्वल हो उठी। किंतु जब उसने स्टार को विदा करके नौकरोंवाले ज़ीने का द्वार बंद किया तो उसके मानसिक चक्षु के सम्मुख स्टार ऐसे दिव्य भाव से खड़ी हुई थी मानो वह बाइबिल कथित

कोई देवदूती हो जो उसका लिफ़ाफ़ा अपने ऊपर उठे हुए हाथ में लिये जा रही थी। इस कल्पना से अम्पारो को कुछ शांति मिली। वह खाने के कमरे में गई और फिर वहाँ से अपने शयनागार में गई। अब अँधेरा गहनतर हो गया था। उसने झरोके के किवाड़ पूरी तरह खोल दिये। उसी समय विद्युत के कौंदने से सहसा सारा आकाश रंजित हो उठा। कुछ देर के लिए वह इस भाराक्रांत नभमंडल की ओर चित्र-लिखित-सी देखती रह गई और अपने आपसे प्रश्न करने लगी—

'आज तीसरे पहर क्या होगा ?'

सन्निहित भविष्य की जो कल्पना उसके मन में थी उसमें किसी भी मनुष्य का अस्तित्व नहीं था। केवल प्रकाश और ध्वनि का बाहुल्य था। उसके पिता और सेविकाओं के लिए उसमें कोई स्थान ही न था।

'आज तीसरे पहर क्या होगा ?'

उसने अपने हृदय से फिर यही प्रश्न किया। फिर उसने मेघों को आकाश में भ्रमण करते हुए देखा। हवा के साथ उड़ते हुए हिमकणों से एक ऊँची खिड़की ढक गई। उसने अपने कपोलों पर हाथ फेरे और सुंदर केशों को ठीक किया। उसने मुस्कराते हुए पुलकित स्वर में कहा—

'मेरे जीवन के मिथ्या स्वप्न !'

किंतु सहसा पीछे हटकर वह कमरे से बाहर चली गई। वह स्टार के रिवालवर को न देखने का प्रयत्न कर रही थी। स्टार उसको उसकी कपड़े पहनने की मेज़ पर छोड़ गई थी। उसके पिता के सोकर उठने में अभी एक घण्टा शेष था। उसने एक दराज़ में से नीचे पहनने के वस्त्र निकाले, फिर वह यह देखने गई कि थर्मस की शीशी में पानी गरम करने के लिए चूल्हे में काफ़ी आग है या नहीं और फिर एक सेविका से उसने बिजली की इस्त्री गरम करने को कहा। तत्पश्चात् उपगृह में जाकर वह समाचार पत्रों के कुछ टुकड़े लाई। इनमें पाल वैलेरी पर फ्रेंच भाषा में लिखा हुआ एक लेख था और

दो लेख सामर के थे। सामर के ये दोनों लेख बूर्ज्वों की संभ्रात शैली में लिखे हुए थे। इन्हें उसने खास तौर पर अम्पारो से सुरक्षित रखने के लिए लिखा था। बैलेरी सम्बन्धी लेख से सामर को कोई दिलचस्पी नहीं थी। अम्पारो ने स्वयं अपनी इच्छा से इस प्राचीन आत्मा की मृदुल आकांक्षाओं को अपने संग्रह में स्थान दिया था। उसने इन लेखों को कितने उत्साह के साथ चुन-चुनकर एकत्र किया था। उसका खयाल था कि ये उसके नये घर की शोभा होंगे। उसका यह घर खुला हुआ होगा—वायु और प्रकाश के आने के लिए उसमें बड़े-बड़े रोशनदान और खिड़कियाँ होंगी। घर-गिरस्ती के काम-धन्धे से निबटकर, शान्ति के साथ एकान्त में बैठकर वह कभी कभी इन अमर पुष्पों से अपना मनोरञ्जन किया करेगी। उसने इनका पुष्पों की तरह चयन किया था! किन्तु अब वह स्वप्न क्या कभी लौट सकते थे। इसके विपरीत ल्यूकस यह बात पहले ही से जानता था कि वह शुभ दिन कभी आनेवाला न था!

समाचार पत्रों के यह टुकड़े सामर की जेब में पड़े रहने के कारण तुड़मुड़ गये थे। अम्पारो ने मलमल के एक टुकड़े पर ज़रा-सा पानी लगाया। कागज़ की शिकनों को पहले हाथ से सीधा किया। फिर उसको उस गीले कपड़े पर रखकर बड़ी सावधानी से लोहा किया। सब कागज़ों को इस प्रकार ठीककर लेने के पश्चात् उसने अपने पिता के दफ़्तर में जाकर उनको बड़े-बड़े तख्तों पर गोंद से चिपकाया, उन पर एक ओर अंक डाले और उनकी एक तालिका बनाई। इस काम में उसे बड़ा मज़ा आया। वह इस काम में ऐसी आत्म-विस्मृत हो गई थी कि जब बावर्ची ने झाँककर उससे कुछ पूछा तो उसने हर बात पर हाँ सूचक सिर हिला दिया। फिर जब उसने गौर किया तो उसे यह ज्ञात हुआ कि उसने बिना विचार किये हुए ही लंच लाने की आज्ञा देदी थी

उन सब काग़ज़ों को संग्रह में यथास्थान रख देने के बाद वह फिर शयनागार की ओर लौट पड़ी। रास्ते में वह एक मिनट के लिए खड़ी हो गई। रसोई घर के तखते पर रखे हुए शीशे के बर्तनों में से एक असावधानी से रखा हुआ बर्तन इधर-उधर वाले बर्तनों से टकरा रहा था। वह सोचने लगी :—

'आज रात को पिताजी को खाना कौन खिलाएगा ?'

वह बड़ी दृढ़ता के साथ इधर-उधर काम कराती रही। कर्नल को उठने पर जिन-जिन वस्तुओं की आवश्यकता होती थी उसने उन सबको उचित स्थान पर रखवा दिया। उसने शीशे की छोटी-सी कीप द्वारा ओडिकोलोन बड़ी बोतल से नहाने की शीशी में लौटा। उसने देखा कि कीप कुछ गंदी है। उसने सोचा कि इस असावधानी के लिए वह सेविका को फटकार बताये ; किंतु वह ऐसा करना भूल गई। वह अपने कमरे में चली गई। उसकी समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि आज उसे सारी चीज़ों से अपना सम्बन्ध टूटा हुआ क्यों जान पड़ रहा था। हर एक चीज़ मिट जाना चाहती थी। बड़े ज़ोर की आँधी चल रही थी। वृक्ष टूटे से पड़ रहे थे। मॉनक्लोआ की ओर से गोलियों की आवाज़ आ रही थी। प्रत्येक गोली यही कहती हुई जान पड़ती थी—'कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं !' यह आवाज़ वायुमण्डल में बड़े ज़ोर से गूँज रही थी। किंतु कुछ गोलियों का शब्द प्रतिध्वनि-रहित भी था। यह शब्द कर्णकटु तथा घोर निषेधार्थक प्रतीत होता था। आज तो आकाश भी निषेध करता हुआ जान पड़ता था। घरों पर जो प्रातःकालीन अंधकार छाया हुआ था वह शाम का अंधेरा-सा जान पड़ता था।

वह कपड़े पहनने की मेज़ के संगमर्मर के तख्ते को साफ़ करने लगी। इस काम में उसे रिवालवर को वहाँ से उठाकर रात की मेज़ पर रख देने की आवश्यकता प्रतीत हुई। फिर वह मेज़ की सफ़ाई

समाप्त ही न कर सकी, क्योंकि वह रिवालवर को हाथ में उठा कर पलंग के पास आ खड़ी हुई। उसने कमरे की दीवारों और दर्पण को घूरकर देखा। कुछ देर तक वह वर्षा से शराबोर होते हुए देहात की ओर निर्निमेष दृष्टि से देखती रही। क्या आगे भी झंझावात आया करेंगे? विद्युत् कौंदा करेगी? अब मेरे कमरे का क्या हाल होगा और मेरे दर्पण में कौन अपना मुख देखा करेगा? हवा से झुकते हुए वृक्षों को देख कर वह सोचने लगी—'सितम्बर में पतझड़ होगा और मैं उसे न देख सकूँगी।' कभी हँसने की और कभी रोने की उसकी इच्छा हो रही थी। इसी द्विविधा से उसके कपोल पुलकित हो रहे थे। उसने देखा कि दीवार पर नीली डोरी से एक चित्र लटका हुआ है। विजली की चमक से जलपात्र और दर्पण अग्नि सदृश रक्तवर्ण हो उठते थे। बाहर बड़े ज़ोर से पानी गिर रहा था। बौछार आने से उसे कुछ शांति मिली। 'मेरे जीवन की मिथ्या कल्पनाओं!' इतना कहकर झंझावात के भयंकर प्रकोप के मध्य, उसने रिवालवर चला दिया। उसे बस इतना भर मालूम हुआ कि तमंचा उछलकर उसके हाथ से छूट गया। तदनन्तर अपने वामस्तन में उसे कुछ जलन मालूम हुई। वह अपने बिस्तर पर पड़ी हुई थी। वह छत की तरफ़ टकटकी बाँधकर देखने लगी। फिर वह इधर-उधर सिर हिलाने लगी। अब उसे यह होश नहीं रहा था कि वह क्या कर रही है।

सेविकाएँ दौड़ी आईं और भागकर उसके पिता के कमरे में पहुँची। किन्तु कर्नल घर पर नहीं था। वह बारकों में गया था। सम्भवतः वह रातभर जागता रहा था। जब रिवालवर उठा कर देखा गया तो वह बिलकुल खाली था। उसमें केवल एक कारतूस था। उसके छूट जाने पर केस बाहर निकल आया था। अम्पारो फिर बोली नहीं। मरते समय उसके हृदय से लहू निकला जिसने उस रात के खून के धब्बे को खून ही से धो दिया। वह बूर्ज़्वा विवाह का एक छोटा-सा धब्बा था।

अम्पारो के अन्तिम शब्द बहुत साधारण थे—

'मेरी प्यारी माँ !'

उसे शुद्ध हृदय से यह विश्वास था कि उसने सच्चा मार्ग पा लिया था। यह कि वह अब एक छोटे से खोए हुए सुन्दर जानवर के बच्चे की तरह नहीं थी। यह कि उसकी माता उसकी राह देख रही थी। यह कि वह कदाचित् एक लोकप्रिय कवि के शब्दों में 'एक स्वप्रकाशित रेखा के ज़ीने पर चढ़कर' स्वर्ग पहुँच जायगी। बिजली की इस्त्री पर जो भूल से कम्बल पर पड़ी रह गई थी, गोली के आकार का एक काला चिह्न था।

सामर की स्थिति स्वचालित यंत्र की तरह

उसने यह समाचार अभी एक पत्र में पढ़ा था, क्योंकि सांध्य-पत्र अब पूर्ववत् निकलने लगे थे। यह समाचार 'समाचार' कालमों के अन्तर्गत ही छपा था, किन्तु सम्पादक ने उसे कालम में सर्वप्रथम स्थान देकर प्रधानता प्रदान करती थी। अक्षर बहुत गहरी काली रौशनाई से छापे गये थे। छापे की प्लेट के पूरी तरह ठीक न बैठने के कारण प्रथमाक्षर 'D' की बग़ल में एक काला धब्बा पड़ गया था। शीर्षक तीन कालमों में इस प्रकार दिया गया था—'कर्नल अेशिया डेलरेया की पुत्री अपने ही घर में एक प्राणांतक आकस्मिक दुर्घटना का शिकार हो गई।' इन पंक्तियों को पढ़ते ही उसने पत्र तह करके जेब में रख लिया और वह उठकर इस प्रकार चल पड़ा मानो बड़ी जल्दी में हो किन्तु वास्तव में वह प्रत्येक मोड़ पर असमंजस में पड़

जाता था। जिस प्रकार एक अनुभवरहित चोर तुरन्त चुराई हुई पाकेट-बुक को अपनी जेब में रखा करता है उसी प्रकार सामर ने वह पत्र जेब में रखा था। उसका विचार था कि प्रत्येक मनुष्य उसे घूरकर देख रहा है और वह स्वयं भी बिना कुछ देखे हुए उनको घूरकर देखता जा रहा था मानो एक हत्यारे की तरह वह अपनी दुष्कृति पर गर्व कर रहा हो। इसी तरह वह आठ बजे से रात के दस बजे तक घूमा किया। वह एकाकी होना चाहता था किन्तु सभी जगह मनुष्यों की उपस्थिति के कारण उसका अभीष्ट सिद्धि न हो सका। वह लापरवाही के साथ सीधा नाक की सीध पर चला जा रहा था। इस बात को जाने बिना कि वह कहाँ जा रहा है वह जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाए चला जाता था। चलता-चलता वह शीघ्र ही चम्बेरी में जलाशय के समीप जा निकला। इस जलाशय की इमारत बाइज़ेन्टाइन गुम्बज के सदृश उन्नत तथा गोलाकार बनी हुई है। उसके पैरों में गरमी मालूम होने लगी। उसके माथे से पसीना बह रहा था। वह ठहर गया। गुम्बज के पीछे से एक नक्षत्र उदय हुआ। वायु शीतल तथा निर्मल थी। वह सहर्ष कारागार की बात सोचने लगा। वहाँ वह संसार से वियुक्त-सा अपनी कोठरी में बैठा हुआ शान्तिपूर्वक विचार कर सकता था। इसके विपरीत अब वह न तो अपने विचारों को शृङ्खलाबद्ध ही कर सकता था और न अपनी मनस्थिति पर विचार ही कर सकता था। अब फिर वह एक स्वचालित यन्त्र की नाईं चलने फिरने लग गया था। आधी रात के समय उसे यह ज्ञात हुआ कि अब वह बिलकुल थक गया है। अतः वह एक अन्धकारपूर्ण द्वार में बैठ गया। यह स्थान नगर के केन्द्रीय भाग से बहुत दूर नगर की सीमा पर, उसकी स्वर्गीया प्रेमिका के मकान से सबसे अधिक दूर, टेटुएन डि लास विक्टोरियाज़ नामक गली में था। अनजान में वह अम्पारो से दूर भागा जा रहा था। वह उसकी स्मृति, उसके मकान और उसके विचार तक से दूर

भाग जाना चाहता था। अब उसने दियासलाई जलाकर उस पैराग्राफ़ को फिर पढ़ना आरम्भ किया।

वह पैराग्राफ़ यह था—बैलेकॉस पुलवाले थाने में आज प्रातःकाल उस शोकावह आकस्मिक दुर्घटना का समाचार प्राप्त हुआ जिसके द्वारा ७४ नं० के छोटे तोपखाने के आदेशदाता कर्नल, सेनोर ग्रेशिया डेलरेयो की इकलौती पुत्री का देहावसन हुआ। इस अष्टादशवर्षीया सुन्दर लड़की का नाम अम्पारो था। वह अपने मकान में बैठी हुई एक रिवालवर का निरीक्षण कर रही थी। अकस्मात् घोड़ा दब जाने से यह दुर्घटना घटित हो गई। निस्सन्देह इस दुर्घटना का कारण या तो उपर्युक्त ललना का शस्त्र-सम्बन्धी अज्ञान था या कोई और बात जिससे गोली छूट गई और पसलियों के मध्यवर्ती चतुर्थ स्थान में जा पहुँची। सरकारी सर्जन की राय में जख्म अपरिहार्यरूप से प्राणान्तक था। साधारण नियमानुकूल कार्यवाही के पश्चात् अदालत ने उपर्युक्त शस्त्र को ज़ब्त कर लिया। बहुत से उच्चपदाधिकारियों ने सेनोर ग्रेशिया डेलरेयो के मकान पर जाकर शोक तथा सहानुभूति प्रदर्शित की।'

सामर को पहले से यह संदेह था कि अम्पारो ने अवश्य आत्मघात किया है। अब यह पैराग्राफ़ हर तरह उसके विचार की पुष्टि कर रहा था। उसने इसके आगे कुछ न सोचा। हाथ पर ठोड़ी रखकर वह अँधेरे में पड़ रहा। उसकी हजामत बहुत बढ़ गई थी। उसने सोचा कि वह बिलकुल आवारा-सा प्रतीत होता होगा। आवारा उन लोगों की संज्ञा है जो तारों की छाँह में रात को निरुद्देश भाव से मटरगश्त किया करते हैं। उनको किसी वस्तु पर विश्वास नहीं होता, यहाँ तक कि उनको अपने शरीर पर, विश्वास के अभाव तक पर विश्वास नहीं होता। तारोंभरी रात में घूमना, जब गाने की इच्छा हुई तो कोई मूर्खतापूर्ण ऊल-जलूल बच्चों का गीत या कोई सुन्दर ग्राम्य गीत अलाप उठना, यह इन लोगों का विशेष लक्षण है। यह जानते हुए भी कि

इस तालाब में गदहों और भेड़ों ने पानी पिया है वह उसी गंदे जल से अपनी प्यास बुझाते हैं, ऊँची सड़कों के किनारेवाली खाइयों में मज़े से पड़ रहते हैं, जब आँधी आती है और मूसलाधार पानी पड़ता है तो ये लोग समाचार-पत्रों की धज्जियों से बोए हुए खेतों में होकर नंगे बदन बेतहाशा भागते हुए देख पड़ते हैं। किसी से बातचीत न करना, किसी को न देखना, सर्दी-गर्मी दोनों का कष्ट बरदाश्त करना, निर्जन और ऊजड़ पहाड़ियों पर चढ़ जाना, अँधेरे में कपड़े उतार देना और प्रातःकाल की प्रतीक्षा करना—यही इनका जीवन है!

सामर ने पत्र के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। उसने कर्नल ग्रेशिया डेलरेयो वाला रिवालवर जेब से निकाला और उसे खरंजे के सिरे-वाली नाली के मुँह में फेंक दिया। वह खड़ा-खड़ा सामने की दीवार को घूरता रहा। उस दीवार में एक खिड़की थी, जो इस समय बंद थी। उसके पीछे प्रकाश देख पड़ता था। पर्दे के पीछे गैस की मेंटिल और गिलोब की झलक एक दरार से देख पड़ती थी। वह सोचने लगा कि बेचारे स्पेन में गैस की रोशनी का युग ही नहीं आने पाया। अन्य देशों में विद्युत-प्रकाश के पूर्व गैस की रोशनी हुआ करती थी। यह रोशनी प्रजातंत्र विचार के अधिक अनुकूल और कल्याणकारिणी थी। किन्तु खेद है कि स्पेन में मिट्टी के तेल की रोशनी के बाद फ़ौरन बिजली का युग आ-उपस्थित हुआ। उसने सोचा कि इस विषय पर एक अच्छा लेख लिखा जा सकता है। किन्तु क्या वह इस दशा में कोई भी लेख लिखने के योग्य था? जब उसे अपने अंदर जीवन-शक्ति का अभाव-सा प्रतीत हो रहा था, जब उसमें इतनी भी शक्ति नहीं थी कि वह किसी भी विचार को लेखबद्ध कर सके, तो वह कोई लेख क्या लिख पाता? वह फिर उसी दहलीज़ में बैठ गया। उसके पास टोप नहीं था। दीवार की चौखट उसके

सिर में चुभती थी। उसने बड़ी मुश्किल से अपने पैर फैला दिये। उसे अब ऐसा मालूम हो रहा था कि अँधेरे में उसका कचूमर निकला जा रहा है। यही उसकी अन्तिम घड़ियाँ हैं। बचपन में वह बड़ा जोशीला था। यदि उसे यह मालूम हो जाता कि उसी दिन या दूसरे दिन उसे किसी बात से खुशी होनेवाली है तो वह उसी समय आशा से प्रफुल्लित हो उठता और सारे दिन उत्साह से भरा हुआ रहा करता था। उस समय वह ज़रा-सी बात पर उत्तेजित हो जाया करता था। तदनन्तर उसका उत्साह कुछ परिमित हो गया, फिर भी वह काफ़ी ठहराऊ तथा दृढ़ था। इसके बाद वह प्रेम के नशे में पागल-सा हो गया। अम्पारो के प्रेम ने उसकी आत्मा की समस्त निहित शक्तियों को उभारकर अधिक शक्तिशाली बनाया, इन संदिग्ध तथा अस्थिर प्रेरणाओं को स्थिर तथा संगठित कर दिया। उसने अपनी अन्तिम चेष्टा की। ऊँचा उठने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा दी। और अब उसी अम्पारो ने स्वयं उस चमत्कार को विलुप्त कर दिया। इसका कारण यही था कि सामर के प्रति उसका प्रेम निस्सीम था, अलौकिक था। उस गोली से वह उसका हृदय तोड़ गई। उसने अब तक जो कुछ सामर को प्रेमोपहार में दिया था, उसकी अन्तरात्मा में जो कुछ बल भरा था, वह सब-का-सब उसकी मृत्यु के साथ ही विलुप्त हो गया। अब सामर ने बड़ी संलग्नता के साथ अपनी हानि का हिसाब लगाना आरम्भ किया—

'मेरे विश्वास का जो कुछ भी अंश अवशेष था, वह उस सबको छीनकर चली गई।' उसने दृढ़ता-भरे स्वर में कहा।

उसके अंतस्तल में से एक छिपी हुई आवाज़ निकली जिसने उसके इन पुराने शब्दों को दोहरा दिया—

'आत्मभाव बूर्ज्वा-कल्पना मात्र है। सेनोर लैनिन, सेनोर रूज़वेल्ट, क्या यह आत्मा कोई काम की चीज़ है?'

उसके साथ, अम्पारो की मृत्यु के साथ ही, स्वयं उसकी आत्मा मर गई थी। और अब वह पूर्णतः रिक्त रह गया था। आत्मा के बिना किसी वस्तु पर श्रद्धा कैसे की जा सकती है, लगन किस प्रकार लगाई जा सकती है, श्रद्धापूर्ण भावनाओं को नैतिक सिद्धान्तों के रूप में किस प्रकार परिणत किया जा सकता है और इन सिद्धांतों को मानवता से ऊँचा उठाकर दिव्य कैसे बनाया जा सकता है? उसके बिना तो जीना भी असम्भव है। वह फिर सामने की दीवार को टकटकी बाँधकर देखने लगा।

'यह आत्मा की प्रवृत्ति ही का परिणाम है कि यह ईंटें और खीपड़े एक मकान का रूप धारण करने में समर्थ हो सके हैं।' उसने कहा। 'परन्तु चूँकि बूर्ज्वा धर्म-भाव को नष्ट कर देना असम्भव है और विशुद्ध आत्मभाव का अभाव है, उसमें बूर्ज्वा विशेषण सदैव जुड़ा रहता है, इसी वजह से यह ईंटों और पत्थरों का ढेर केवल मकान बनकर ही नहीं रह गया बल्कि वह सम्पत्ति और एक पवित्र गृह बन गया है।'

इस आत्मभाव का मूलोच्छेद करना आवश्यक है, चाहे हानि ही क्यों न उठानी पड़े। यदि आवश्यकता पड़े तो सारे मकान को धूलधूसरित कर देने में भी कोई आनाकानी नहीं करनी चाहिये। किन्तु यह विचार मरणासन्न वर्तमान काल से जो अभी तक जीवित था—उसके दायरे से बाहर उठ रहे थे मानो वह यहूदियों के सिरों पर जलती हुई अग्नि की लपटों से निकल रहे हों। यह विचार उसके मस्तिष्क से नहीं निकल रहे थे किन्तु किसी अन्य स्थान से बने बनाये रँगे रँगाए आ रहे थे। वह उसके संवृत मस्तिष्क पर आक्रमण कर रहे थे। वह उसके मस्तिष्क में प्रतिबिम्बित हो रहे थे—इसी से वह उससे निकलते हुए से प्रतीत होते थे। उसने धीरे से चौखट पर अपना सिर दे मारा। फिर ज्यादा ज़ोर के ऐसा किया। फिर जब चोट लग

गई तो वह सिर को सुहलाने लग गया। जब हाथ में ख़ून लगा तो उसने उसको वहाँ से हटा लिया। उसके सिर में छोटा-सा घाव हो गया था। वह डरकर खड़ा हो गया।

वह फिर बैठ गया। उसे अपनी गरदन पर लहू बहता हुआ प्रतीत हुआ। उसे इसकी परवा ही क्या थी? 'मुझे सम्भवतः धनुर्वात रोग हो जायगा,' वह सोचने लगा, 'और मैं कुछ ही घण्टों में मर जाऊँगा।' इस विचार से उसकी शान्ति भंग नहीं हुई और फिर चौखट पर सिर रखकर और पैर फैलाकर लेट गया। वह तो अब थी ही नहीं। उसे तो मरना था ही। उसके क्षमा प्रदान किये बिना वह जीवित रह ही नहीं सकती थी। किन्तु अब गैस की रौशनी पर लेख लिखना उसके लिए असम्भव था। अब तो उसके लिए आत्म-विश्वास के साथ 'कार्य' करना, यहाँ तक कि उपर्युक्त प्रकार हँसना और रोना भी असम्भव था। वह केवल जीता रह सकता था। ओह! ऐसा जीना भी क्या? कुर्सी या मेज़ की तरह जड़वत् पड़े रहना! अब उसकी इसी प्रकार जीने की अभिलाषा थी। किन्तु प्राणों का मोह अभी तक शेष था। वह इस 'अब' को दीर्घ से दीर्घ बना देना चाहता था।

उसके दोनों हाथ इधर-उधर थे, उसकी टाँगे अच्छी तरह फैली हुई थीं, उसके माथे पर ख़ून के निशान थे। उसे अपने कालर के अन्दर तक ख़ून जाता हुआ प्रतीत हुआ। किन्तु उसे इसकी कोई भी चिन्ता नहीं थी। वह तो निषेधोन्मत्त था। 'कभी नहीं'—यही शब्द उसके कानों में निरन्तर गूँज रहे थे। 'सदैव और' जो स्वयं उसकी ध्वनि थी, जो धूल-भरी सड़क की, भविष्य के मतवाले जन-समुदाय की मज़दूरों के औज़ारों की और क्रांतिकारियों के शस्त्रों की नित्य-निरंतर टेक थी—उसके हृदय तक इन शब्दों की अब गति ही न थी। उसका हृदय कह रहा था, 'कभी नहीं; कभी नहीं, कभी नहीं!' आधे घंटे तक वह बिलकुल असहाय, निश्चेष्ट, विचार तथा भाव-रहित दशा में पड़ा रहा। फिर

उसे एक वृद्धा की असमान पदध्वनि और गुनगुनाने का शब्द सुनाई दिया। वह कोई सुश्राव्य बात कह रही थी, संभवतः किसी शिशु को लोरी देकर सुला रही थी। वह वृद्धा स्त्री उसी दहलीज़ में आ पहुँची जहाँ कि सामर बैठा हुआ था। वह 'सुखद संध्या' कहकर अभिवादन करती हुई एक कोने में जा बैठी। यह शब्द भिखमंगों के परिचायक और उनका पारस्परिक गूढ़ संकेत हैं। सामर ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। उसकी आँखें खूब खुली हुई थीं और वह शून्य की ओर ताक रहा था। उसका हृदय 'कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं' कहता हुआ धक्-धक् कर रहा था। उसके हाथ का पृष्ठ-भाग खरंजे की ठंड से सुन्न हो गया था। किंतु वह बोल नहीं सकता था, न वह देख ही सकता और न विचार ही कर सकता था। वृद्धा ने अब बड़बड़ाना शुरू कर दिया। उसके वाक्य कठोर तथा जुगुप्सापूर्ण थे।

मुझे तीन दिन छत के नीचे बिना सोये हो चुके हैं। और तू, हरामी पिल्ले, खूब मज़े से दूध पीता और सोता रहता है। चाहे तेरी माँ मर क्यों न जाय मगर तू उसकी छाती से मुँह न हटाएगी, है न? मेरी नन्हीं जान, तू मुझे मारे डाल रही है!

यह भी लाड़-प्यार की अनूठी बातें थीं! उसकी छाती से एक शिशु चिपका हुआ था। वह स्वयं बुड्ढी झाँकड़ थी किंतु उसके बच्चे की टाँगें मोटी थीं।

'मेरे मित्र, तुम देखते हो न कि मुझे तो एक न एक दिन भीख माँगते हुए सड़क पर मरना है, उसने सामर को सम्बोधित करते हुए कहा, 'परंतु जीवन उसी तरह चला जाता है।'

'जीवन' से उसका तात्पर्य अपने बच्चे से था। सामर ने उसकी बात अच्छी तरह सुन तो ली किंतु वह न हिला-डुला और न मुँह से कुछ बोला ही। वृद्धा ने कुछ देर उसे घूरकर देखा और वह फिर कूदकर अलग खड़ी हो गई और कहने लगी—

'माता मरियम की सौगंध, यह तो मुर्दा है !'

किसी को मुर्दा समझना भी कोई ऐसी बुरी बात नहीं है। उसकी गोदी में शिशु हँस रहा था और उसकी माता घाघरा हिलाती हुई भागी जा रही थी।

'अरे भगवान्! मुर्दा !'

सामर ने यह सब बातें सुन ली थीं। वृद्धा सत्य ही कह रही थी। सामर उससे सहमत था। वह सचमुच मर चुका था। यद्यपि वह सचेत होता जा रहा था और सभी नित्यकर्मों को वह फिर आरंभ करेगा, तो भी वह यथार्थ में मर चुका था। वह मुर्दा था और जब तक उसे यह निश्चय न हो जाएगा कि वह जीवन को फिर पूर्ववत् आरंभ कर सकेगा वह पूरे मनोयोग के साथ अपने मुर्दा होने की बात को छिपाने का अनवरत प्रयत्न करता रहेगा। यद्यपि उसके नेत्र खूब खुले हुए थे तो भी उसने उन्हें खोलने और सँभल जाने की भरसक चेष्टा की। उसके सिर से खून बहना बन्द हो चुका था। बुढ़िया दूर भागी जा रही थी। वह उठ बैठा। उसके हृदय में एक नूतन शांति का संचार हो रहा था। अम्पारो के आत्मघात की बात उसने बड़ी विरक्तता के साथ फिर सोची। उसे केवल यह बात सोचकर आश्चर्य हुआ कि उसकी मृत्यु हो जाने के कारण अब उसे उसके पत्र और फ़ोटो लौटाने नहीं पड़ेंगे, क्योंकि साधारण सम्बन्ध-विच्छेद और मृत्यु में बड़ा अन्तर है। अपनी असहायता और सत्यानाश के जिन विचारों ने उसे पहले व्याकुल कर दिया था वह उन्हें बिलकुल भूल गया। उसने अपने कन्धों पर और द्वार में खून के धब्बे देखकर कहा—'खून निकल जाने से मेरा दिमाग़ साफ हो गया है।' यह भी कैसी विचित्र बात थी। उन अगणित अवसादपूर्ण विचारों को जो भूतों की नाईं उसकी छाती पर सवार थे, थोड़ी-सी खून की बूँदों ने मार भगाया था।

किन्तु उसकी नैतिक-शून्यता अभी तक जैसी की तैसी थी। वह एक

छायादार सड़क पर दृढ़तापूर्वक एक सिरे से दूसरे सिरे तक चला गया। उसकी इन्द्रियाँ सचेत थीं। उसके विचार सुस्पष्ट थे। उसके विचार वस्तुस्थिति के अनुकूल थे, उनमें उसका अतिक्रमण न था, इसीलिए वे शान्तिप्रद भी थे। इन विचारों ने उसे घर चलने की प्रेरणा की। वह यह खयाल करके कि पुलिस उसके पीछे लगी हुई है पाँच दिन से अपने मकान पर नहीं गया था। निस्सन्देह अब भी वहाँ चौकसी रखी जाती होगी, कोई न कोई किसी गुप्त स्थान से उसे देखता रहता होगा। यह बात सुस्पष्ट थी कि उसके वहाँ पहुँचते ही वह पकड़ लिया जाएगा, उसे हथकड़ियाँ पहनाकर सदर कोतवाली ले जाया जायगा। 'यदि ऐसा हुआ तो मैं कल जेल में होऊँगा।' जिस प्रकार स्वजन-वियोग अथवा किसी अन्य घोर आपत्ति में पड़कर निराशा के अतिरेक में घर-बार त्याग कर किसी मठ में चले जाते हैं उसी तरह इस समय सामर भी जेल में जाना चाहता था। सामर—वही सामर जो पहले सदैव ऐसी बातों का उपहास किया करता था, अब सांसारिक मनुष्यों के मठ—मानल्कोआ जेल का आश्रय ग्रहण करना चाहता था। यही काम सबसे उत्तम और सुगम भी था। अतः अपने आप को पकड़ा देने के उद्देश्य से वह अपने मकान की ओर चल पड़ा।

मार्ग निरन्तर ढालू था। इस समय डेढ़ बजा था। नगर और उपांत की सीमा पर पहुँचने से पहले उसने अपने आपको साफ़-सुथरा बनाने का भरसक प्रयत्न किया, कपड़े झाड़े, बाल ठीक किये और कमर सीधी करके भलेमानसों की तरह आगे बढ़ा। जब वह घर पहुँचा तो उसका चौकीदार वहाँ मौजूद था। उसने बड़े कुतूहल के साथ सामर को देखा। सामर को उसके हावभाव से ज्ञात हो गया कि गत रात्रियों को पुलीस ने उसे परेशान किया था। किन्तु अब वह पूर्णतः निश्चिन्त था। पुलिस और क्रांति, जेल और क़ब्रिस्तान—उसे इनमें से किसी की भी चिन्ता नहीं थी। ज़ीने पर चढ़कर वह अपने कमरों में पहुँचा।

उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो कुछ हुआ ही न हो। काली पालिश वाला पयानो बाजा अपने स्थान पर रखा हुआ था, किवाड़ों के निष्प्रभ शीशे पर्दों से ढके हुए थे। सिगरेट की रकाबियों के पास सिगरेट का एक भी टुकड़ा नहीं देख पड़ता था। फिर अन्दर जाकर उसने किताबों से भरे हुए अल्मारी के तीनों तख्तों को देखा। अपनी लिखने की मेज़ और संकुचित शय्या पर दृष्टिपात किया। वह मेज़ के एक कोने पर बैठ गया। सिगरेट जलाकर वह दीवार पर लटके हुए अम्पारों के फोटो को देखने लगा। 'वह मर गई, वह मर गई।' उसने मन-ही-मन कहा। फिर यह देखने के लिए कि क्या ज़ोर से कहने का अधिक प्रभाव होता है उसने इन शब्दों को ज़ोर से कहकर देखा। फिर वह उठकर चित्र के पास गया और आज उसने इन दो वर्षों के प्रेमाभिनय में पहली बार इस शीशे में जड़े हुए चित्र को चुम्बन किया। पहले जब कभी वह पूछा करती थी कि 'तुमने मेरे चित्र को चुम्बन किया या नहीं?' तो वह सदैव झूठ-मूठ 'हाँ' कह दिया करता था। फिर उसने एक दराज़ खेंचकर ख़तों के तीन बड़े-बड़े बंडल निकाले। उनमें से एक पर उसने दृष्टि डाली और उसे मेज़ पर फेंक दिया।

'ये तो सभी एक से हैं।' उसने कहा।

उन सब में उन्हीं पहले वाक्यों की पुनरावृत्ति थी। चाहे कोई सा पत्र उठा लो, उसमें वही दीर्घ परिचित वाक्य मिलेंगे। अतएव पत्रों को इसी प्रकार छोड़कर उसने कपड़े उतारे। एक बुड्ढा पड़ोसी एकाडियन बाजे पर शूबर्ट की मार्च बजा रहा था। उसको अच्छी तरह सुनने के लिए सामर ने खिड़की खोल दी। उसकी सगाई के समय की स्मृतियों में यह मार्च भी एक मुख्य स्थान रखती थी। बाज़े के तार रात के अन्धकार को भेदते हुए संसार को सुनील कल्पनाओं तथा मृदु-नृत्य से परिप्लावित किये दे रहे थे, विचारों की नीली भूलभुलइयों, मिथ्या आशाओं और बड़े-बड़े स्वप्नों के जाल सारे संसार में बिछाये दे रहे थे।

आत्मा का तो स्वाभाविक कर्तव्य ही यह है कि हमें अनन्तता से संवलित कर दे। किन्तु सामर इस समय न तो असंभव बातों की अनुभूति कर रहा था और न उनका स्वप्न ही देख रहा था। ये सब बातें उसके लिए अब थीं ही नहीं, ये सब उसी समय संभव थीं जब कि वह स्वयं एक स्वप्न था, जब वह स्वयं एक परिवर्तनशील आकारवाली द्रव्यरहित वस्तु के समान सूक्ष्म था। किंतु अब—

उसने कपड़े उतारकर पाजामा पहना। सोने के लिए लेटने के पूर्व उसने सलीपर भी पहने थे। दाएँ सलीपर का पंजा फट गया था छेद में से उसकी उँगली बाहर निकल आई थी। वह अंतर्मार्ग में गया और फिर सारे मकान को पार करके छज्जे पर पहुँचा, जहाँ कि फ़व्वारा लगा हुआ था। पहले उसने छज्जे पर झुककर गली पर दृष्टि डाली। वहाँ उसे रात के चौकीदारों का एक दल देख पड़ा। 'तो जीवन उसी तरह चला जाता है', उसने कहा। किंतु इस वाक्य ने उसके हृदय पर कोई गहरा प्रभाव नहीं डाला; उसके लिए यह एक साधारण-सी बात थी—इस कान से सुनी उस कान से निकाल दी। फिर वह फ़व्वारे के नीचे बैठकर नहाया। वह खूब तरोताज़ा होकर अपने कमरे में वापस आया। यद्यपि उसके कंधे और बाँहें ठण्डी थीं, उसको शरीर के अन्य सब भागों में गर्मी मालूम हो रही थी।

फिर वह बिस्तर पर पड़कर सो गया। सुबह को गृह-स्वामिनी घबड़ाई हुई-सी उसके कमरे में आई। उसने पुलिस के बारम्बार आकर परेशान करने की शिकायत करते हुए कहा कि यद्यपि उसकी सज्जनता में उसे कोई संदेह नहीं था फिर भी पुलिस के बारम्बार आने से स्वयं उसे और उसके अन्य किरायेदारों को बड़ा कष्ट होता था। सामर ने अँगड़ाई ली और उसकी बात काटकर कहा—

'बहुत अच्छा! बहुत अच्छा! नीचे जाकर पहले जलपान भेजिये।'

सेविका जब नाश्ता लेकर आई तो उससे उसने जाकेट की जेब से

सिगरेट निकाल लाने को कहा। जब लड़की ने कुछ काग़ज़ निकाले तो उनमें उसे एक लम्बा लिफाफ़ा नज़र आया। उसने लड़की से लिफाफ़ा माँगा। वह उसको फिर देखना चाहता था। उसको परसों दोपहर के समय स्टार उसके पास लाई थी। उसने उसे खोलकर वे शब्द फिर पढ़े—'क्या तुम्हें अब अधिक सुख होगा?' अम्पारो। फिर उसने क़हवा पिया और झरोका अच्छी तरह खोल दिया। उसने टेलिफ़ोन की घण्टी सुनी। यह समझकर कि कदाचित् उसे कोई पुकार रहा है वह फ़ोन पर गया। स्टार ने फ़ोन पर कहा—'मुझे तुम से एक बड़ी भयानक और ज़रूरी बात कहनी है।'

'हाँ! हाँ!' उसने भावरहित स्वर में कहा। 'वह समाचार मुझे पहले ही ज्ञात हो चुका है। बड़ी भयानक दुर्घटना हो गई। बेचारी अम्पारो चल बसी!'

उसकी इस बात का निषेध करते हुए स्टार ने कहा—'नहीं, अरे वह यह बात नहीं है।' उसके स्वर में किंचित् कटुता थी। उसका अभिप्राय यह था कि जो बात वह कहने जा रही है वह अम्पारो के प्रसंग की अपेक्षा कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। सामर भी यह सुनकर प्रसन्न हो उठा, क्योंकि उसका विचार भी यही होता जा रहा था। फिर उन दोनों ने मिलने का स्थान निश्चित किया और सामर अपने कमरे में लौट आया। अम्पारो के पत्र को उसने फिर पढ़ा। 'क्या तुम्हें अब अधिक सुख होगा?' इसका उसने ज़ोर से उत्तर दिया—'हाँ।'

फिर उसने दर्पण में अपना मुख देखा। उसको अपने आप में बहुत अन्तर प्रतीत हुआ। उसने पाजामावाली जाकेट को उतारने से पहले अपने नेत्रों का अध्ययन किया। यह नेत्र तो उसके थे ही नहीं। यह रिक्त तथा सन्दिग्ध दृष्टि उसकी थी ही नहीं। चूँकि इस समय वह अपने मुर्दा होने की बात भूला हुआ था इसीलिए यह रहस्य उसकी समझ में न आया।

गली की विभिन्न ध्वनियाँ और प्रकाश इस समय भी पूर्ववत् झरोके से उसके कमरे में आ रहे थे। बाहर जाकर रेलिंग पर कोहनियाँ रखकर वह नीचे देखने लगा। अच्छी तरह देख-भाल लेने के बाद वह इस नतीजे पर पहुँचा कि पुलिस ने उसको मकान से भागा हुआ समझकर यहाँ चौकसी करना बन्द कर दिया है। किन्तु इस आशंका से कि कहीं किसी एजन्ट की दृष्टि उस पर न पड़ जाय वह सशीघ्र पीछे हट गया। तदनन्तर उसने वस्त्र पहने। सारे काम पूर्ववत् होने लगे थे। क्रान्तिकारियों की गिरफ्तारियों और तलाशियों द्वारा पुलिस ने उनके संसर्ग-सूत्र का नाश कर दिया था। जन समुदाय को फिर उभारने और रणोन्मत्त करने के लिए अब उन्हें फिर एक नये रणनाद की आवश्यकता होगी। उन पुराने तीरों से अब काम नहीं चल सकेगा। और अब ज्यों-ज्यों दिन जाते जायँगे उस नवीन ध्वनि का निकलना उत्तरोत्तर कठिनतर होता जायगा। सामर ने कन्धे उचका-कर कहा—

'परन्तु इससे अन्तर क्या पड़ सकता है?'

इन सब बातों का उसके लिए अब महत्त्व ही क्या था? यह गुत्थी सुलझाना कोई बच्चों का खेल न था। क्रान्ति की मरणासन्न शक्तियाँ अब हर घड़ी और भी तितर-बितर होती जा रही थीं। उसने कन्धों को ऊपर उठाते हुए कहा—

'क्यों नहीं? इससे अन्तर अवश्य पड़ेगा।'

यद्यपि इसी बात की सम्भावना अधिक थी कि यह जीर्णता केवल सामर ही में हो और वह स्वयं अपने अवसाद से अभिभूत होकर सब चीज़ों को अपने ही रंग में रँग रहा हो, तो भी वह छतों पर खड़ा होकर आकाश का इस प्रकार निरीक्षण करने लगा जिस प्रकार कि कृषकवृन्द दुमदार सितारा देखकर उसको टकटकी बाँधकर देखा करते हैं।

८

'प्रत्येक वस्तु नीचे जा रही है।' उसने दुबारा कहा।

शायद यह बात वह अपने सम्बन्ध में कह रहा था। सम्भव है कि उसका सम्बन्ध इस आन्दोलन ही से हो।

सुनील आकाश में प्रातःकाल चन्द्रमा ने चलते हुए कहा—तीन नूतन नक्षत्रों का आविर्भाव हुआ है। एस्पार्टको, प्राग्रेसो और जर्मिनल—यह उनके नाम हैं।

शैतान की मोटरकार

रात के नौ बज गये थे और चारों बन्दी कामरेड अभी तक अपनी-अपनी कोठरियों में बन्द थे। गार्डों और एजन्टों को प्रातःकाल जो आज्ञा दी गई थी उन्होंने उसका अक्षरशः पालन किया है। वह आज्ञा थी—'बन्दियों से बातचीत मत करो।' वह बन्दियों की प्रत्येक बात का उत्तर केवल 'हाँ' द्वारा दे रहे हैं। इन लोगों के साथ इतना कठोर अत्याचार क्यों किया जा रहा है इस बात को जानने की आशा से लिबर्टो प्रत्येक नवागन्तुक की सूरत देखा करता है। क्राउज़ेल सबसे प्रश्न पूछा करता है; किन्तु उसे कोई उत्तर नहीं मिलता। चीफ़ से उसने तीन बार प्रश्न किया, किन्तु वह केवल कन्धे उचकाकर चला गया। उन तीन गार्डों में से केवल एक ने जिनके कि साथ उन्होंने सुबह क़हवा पिया था इतनी बात कहने का साहस किया :—

'मैं समझता हूँ कि कचहरी ले जाने के पूर्व वे तुम्हें यहाँ से बाहर नहीं निकालेंगे।'

क्राउज़ेल की समझ में नहीं आता था कि उन्हें फिर कचहरी ले जाने से क्या लाभ होगा। अदालत फिर यही आज्ञा देगी कि बन्दियों को फिर जेल ले जाया जाय। इस बात में कोई भी सन्देह किया ही नहीं जा सकता था। इस उधेड़बुन के कारण रात के १०–११ बजे तक बन्दियों को यही नहीं जान पड़ता था कि अब कुछ ही देर में क्या होने वाला है। वे बेचारे इसी सोच में पड़े हुए सूखे जा रहे थे कि न जाने अब क्या हो।

मारग्राफ़ इस समय अपने माता-पिता और उनके परिवार की बात सोच रहा था। वह यहाँ से बहुत दूर पर रहते थे। उनके पास गये हुए उसे वर्षों हो गये थे। जहाँ तक उसकी पत्नी और पुत्र का प्रश्न था, वह तो अब निश्चित-सा प्रतीत होता था। जब वह पकड़ा गया था तो उसे इस बात का पूर्ण विश्वास था कि उसकी पत्नी को कोई भी कष्ट न पहुँचाएगा। यद्यपि उसको मकान खाली कर देने का नोटिस दिया जा चुका था फिर भी गृहस्वामी से उसे ऐसी आशा न थी। यदि केवल रुपये का प्रश्न होता तो उसकी पत्नी पर इतना ज़ुल्म न न ढाया जाता। दस-पाँच टकों के लिये गृहस्वामी उसकी बीबी बच्चे को इस तरह घर से बाहर कभी नहीं निकालता, खासकर जब कि वह यह सोचता कि एलिनियों कुछ समय पूर्व तक अपना किराया समय पर दे दिया करता था। गृहस्वामी यह बात अच्छी तरह जानता था कि उसका पैसा मार में नहीं है और वह अवश्य उसके छूट आने तक कुछ भी न कहता। परन्तु यहाँ तो मामला ही और था। पुलिस ने किराया देकर गृह स्वामी को उसे इस पाशविकता के साथ निकाल देने पर मजबूर किया था। पड़ोसी लोग बड़े ग़रीब थे। ज़बानी जमाखर्च के अतिरिक्त वह कुछ

भी सहायता करने योग्य न थे। इनमें से बहुतों की हार्दिक सहानुभूति उसके साथ होगी। इसके अलावा निर्धन लोगों में बद्दुओं जैसा हाल भी होता था। बद्दुओं तथा अन्य जंगली जातियों में यह बहुधा देखा जाता है कि जब पुरुष लड़ाई पर चले जाते हैं तो घरों की बागडोर स्त्रियों के हाथ में आ जाती है। पुरुषों की अनुपस्थिति में किसी-किसी घर पर आपत्ति भी आ पड़ती है। स्त्री-बच्चे भूकों मरने लगते हैं। उस समय अन्य स्त्रियाँ अपने बच्चों के पेट भरने के भार का बहाना करके एक दूसरे के साथ निर्दयता का व्यवहार किया करती हैं। मारग्राफ़ के विचार में स्त्रियों का यह स्वभाव भी किसी हद तक उसकी पत्नी की दुर्दशा का उत्तरदायी था। जब गृहस्वामी ने उसे घर से निकाल दिया होगा तो उस बेचारी की क्या दशा हुई होगी! उसके पास था ही क्या? पुलिस के डर से भी किसी ने उसको ढाढस बँधाने का साहस न किया होगा। एलिनियो को इस बात का ज़रा भी ताज्जुब नहीं था। किसी भी वकील, जज या पुलिस के ज़रा-से इशारे से उसका सत्यानाश होना सम्भव था।

लिबर्टों यह सोचना ही नहीं चाहता था कि हो क्या रहा है। वह चुपचाप, माथा-पच्ची किये बिना, समय यापन करना चाहता था क्योंकि वह जानता था कि समय स्वयं हर एक प्रश्न का उत्तर उपस्थित कर देगा। उसे किसी प्रकार का भय नहीं था। उसका खयाल था कि कल वह जेल की कोठरी में होगा। जेल से वह डरता नहीं था क्योंकि वह उसको योगियों का एकांतवास समझता था। जिन आदमियों को कभी पहले जेल हो चुकी है वह इस मर्म को जानते हैं कि जनता के लिए प्राण बलिदान कर देनेवाले वीरों के लिए यसूमसीह की तरह पहले चालीस दिन तक निर्जन बन में भूखा रहना आवश्यक है।

हेलियास को इसी बात की बड़ी चिन्ता लगी हुई थी कि उसके नये जूतों का क्या होगा। वह जानता था कि यह उसे जेल अथवा

दंडिताधिवास में जाकर बेचने अवश्य पड़ेंगे । उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसे अरुचिकर जूते पहनने होंगे। उसके मत में मनुष्य के ओढ़ने-पहनने के सामान में जूतों का होना अत्यावश्यक था। वह स्वयं इस सम्बन्ध में बड़ा अभागा था । जब कभी भी वह दीर्घकाल तक पैसा बचाकर घोड़े की खाल का नया जोड़ा लेने में समर्थ होता था तभी उसके सिर पर आपत्तियाँ आना शुरू हो जाती थीं । पाँचवी गैलरीवाले लोग जिनमें हरएक प्रकार के फेरीवाले थे—कोई शस्त्रकार था, कोई लम्प बेचता था कोई मिठाई, कोई कबाब, कोई रेडियो, कोई पुराना सामान—ये लोग देखते ही उसके जूतों का मूल्य आँक लेते थे और उसे तरह-तरह के लालच दिया करते थे। यद्यपि क्राउज़ेल जूतों को न बेचने की भरसक चेष्टा करता रहता था ; किन्तु अन्त में उसे वह तम्बाकू या समाचार पत्रों के लिए पैसे जुटाने के लिए बेच डालने ही पड़ते थे । बदले में उसके पहनने के लिये वह ताँत के तले का पुराना जोड़ा भी दिया करते थे। वह अब बड़े खेद के साथ अपने इन नये जूतों को देख रहा था क्योंकि इनके हाथ से जाने के पश्चात् जेल से छूटने पर उसे नया जोड़ा मोल लेने में कम से कम ७-८ मास अवश्य लग जाएँगे ।

११ बजे एक हुक्म मिला जिससे कोठरियों के समीपवर्ती गार्डों में चहल-पहल आरम्भ हो गई। एक-एक करके वह इन चारों को गार्ड-रूम में ले गये । उनमें प्रत्येक से वही प्रश्न पूछा गया—

'उस एजेन्ट का बध किसने किया ?'

इन चारों ने भी यही उत्तर दिया—'हमें कुछ नहीं मालूम ।' फिर चीफ़ बराबर प्रश्न करता रहा। उन्हें इस बात से कोई आश्चर्य नहीं हुआ। उसके प्रश्न ही यह स्पष्ट बतला रहे थे कि उसके पास इनके विरुद्ध काफ़ी शहादत मौजूद है। इस समय लिबर्टो कुछ डाँवाडोल-सा दिखाई दिया। शंका होना प्रत्येक अवस्था में हानिकारक होता है ;

किन्तु जब मनुष्य का अपने विचारों पर अधिकार न हो तो इसका बहुत बुरा प्रभाव हुआ करता है।

इन चारों को फिर कोठरियों में बन्द करने के बजाय उन्होंने इन्हें लॉबी में खड़ा कर दिया। यह स्थान उन लोगों के लिए जो जेल से बाहर निकलते या बाज़ार जाते थे एक प्रकार का प्रवेशगृह था। तदनन्तर उन्हें सहस्रद्वार यात्रा पर ले जाया गया। यह एक भूल-भुलैया थी। जिस स्थान से यह आरम्भ होती थी वहीं इसका अन्त होता था। कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्हें सारे जीवन-भर इसका अन्त ही न मिला और इसके विपरीत, कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने इस बात का कारण जाने बिना ही, बहुत से द्वारों के खुलने और बन्द होने के पश्चात् अपने आपको सड़क पर खड़ा हुआ पाया। लॉबी में कई मार्ग ऐसे थे जिनमें से भाग निकलना असम्भव था—द्वार, खिड़की और टेलिफ़ोन का बक्स। इस जगह बैठकर सिर्रानवादा के जंगल में कुटी के अन्दर बैठे हुए गार्ड को फ़ोन करने में कैसा मज़ा आता! इसके बाद तीन एजेन्ट खुली हुई हथकड़ियाँ लेकर आये। हथकड़ियाँ पहना देने के बाद उन्हें इकहरी फ़ाइल में बाहर ले जाया गया। सड़क पर एक खुली हुई मोटर खड़ी थी। उस पर छः गार्ड राइफ़िलें लिये हुए बैठे थे। यह मोटर बहुत बड़ी और भद्दी थी। उसे देखकर हेलियस को बचपन की पढ़ी हुई एक कहानी याद आ गई। कहानी का शीर्षक 'शैतान की मोटरकार' था। उस कहानी में भी एक ऐसी ही कार का उल्लेख था, जिसके सारे कल-पुर्ज़े खराब थे जिसमें न बैठने का ठीक प्रबंध था और न किसी प्रकार की कोई ओट थी। दोनों एजेन्ट और छै गार्ड उनके साथ मोटर पर सवार हो गये। देहाती भुसके छकड़े की नाईं वह कार इधर-उधर झोंके खाती चलती थी। वह कभी तो तेज़ी से चलती थी और कभी बिलकुल धीमी पड़ जाती थी। जब वह एक चौड़ी और सीधी गली में पहुँचे तो इतने ज़ोर के धक्के लगे कि

लोगों ने अपने टोपों को हाथों से पकड़ लिया। गार्ड और एजेन्ट बिलकुल मौन थे। वसंत ऋतु की रात थी। हड़ताल प्रायः समाप्त हो चुकी थी। लोग गली में आनन्द मना रहे थे। इन चारों कामरेडों ने सतृष्ण नेत्रों से इस दृश्य को देखा। उन्हें इस बात का पूर्ण विश्वास था कि अब वे जेल ले जाये जा रहे हैं। प्रिंसेसा स्ट्रीट होकर ही तो जेल जाया जाता था—इस मार्ग को भली भाँति जानते थे! किंतु लिबर्टो को इसका विश्वास न था—उसके हृदय में घोर शंका भरी हुई थी।

मानक्रोआ स्कायर में मेला पूरी बहार पर था। सारी दुकानें प्रकाश से जगमगा रही थीं। लेकिन इस समय भीड़ बहुत कम थी। हेलियस ने रोशनी, क्रीड़ाचक्रों, फूलों इत्यादि सभी चीज़ों को बड़े मनोयोग के साथ देखा। वह यह सोच रहा था कि जब वह अपनी कोठरी में से इन चीज़ों को फिर देखे तो उसे इन सब चीज़ों के स्थान ठीक-ठीक याद होने चाहिए। किंतु जब उन्हें कार के रुक जाने की आशा हुई तो एक एजेन्ट ने ड्राइवर से कुछ कहा जिसके परिणाम-स्वरूप कार आहिस्ता आहिस्ता पुएटी डि हाइरो की ओर बढ़ने लगी। अब बंदी निराश हो गये। हेलियस ने स्थूलाकार कारागार को इस प्रकार मुड़कर देखा मानो वह उसी का मकान हो और यह लोग उसके प्रवेशाधिकार का निषेध कर रहे हों! एजेन्टों और गार्डों के चेहरे पत्थर जैसे थे। लिबर्टो उनकी भाव-भंगी से अपने भविष्य का पता चलाने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहा था। मारग्रॉफ़ विकृत भाव से उन्मत्त की तरह दाँत निकाल रहा था। यह चारों एक ही बात सोच रहे थे। यद्यपि एक दूसरे की दृष्टि में वह उसी का आभास खोज रहे थे, तो भी उस बात को मुख से कहने का साहस किसी में नहीं था। सहसा एक झटका लगा और कार ठप हो गई। ड्राइवर ने अपने स्थान पर बैठे हुए उसे फिर चलाने की चेष्टा की किंतु स्विच ने काम न किया।

मारग्राफ़, जो मोटरकारों के कल पुर्जों को अच्छी तरह जानता था, मंद-स्वर में बड़बड़ा उठा।

'व्यर्थ। यह सब व्यर्थ है!'

हेलियस को अपने घोड़े की खाल के जूतों के ख़राब हो जाने का भय होने लगा। तत्पश्चात् एक एजेन्ट उतरा और कार का द्वार खोलकर कहने लगा—

'अब हमें पैदल जाना होगा, क्योंकि कार बिगड़ गई है।'

उसका स्वर तथा भाव इतना स्वाभाविक था कि उस पर किसी को कुछ भी आश्चर्य न हुआ। यहाँ समीप में कोई मकान न था। लगभग दो मील आगे बढ़कर एक सुसम्पन्न तथा फैशनेबुल उपांत था जहाँ एक कारख़ाना और कई बढ़िया कोठियाँ थीं। बन्दी अब यह सोचने लग गये कि पुलिस शायद इस असाधारण शीघ्रता के साथ उनको किसी ऐसे स्थान को ले जा रही है जहाँ कुछ और भी बन्दी होंगे और जज उन सबका न्याय करेगा। हेलियसने बड़ी चतुरता के साथ कहा—

'श्रमजीवियों की हकूमत में कम से कम हमें इतना तो अवश्य ही मालूम हो जाना चाहिये कि हमें कहाँ ले जाया जा रहा है।'

हेलियस ने इन शब्दों को दोहराया। इनके सुनने से लिबर्टो को अपने स्कूल के समय की एक घटना याद हो आई। उसके साथ एक छोटा-सा लड़का पढ़ता था। एक दिन उसने पित्ती से सूजे हुए और लाल-लाल हाथों को दिखाते हुए उससे कहा था:

'क्या मुझे सचमुच यह हाथ लिये हुए रेखागणित के घण्टे में जाना होगा?'

दोनों उपर्युक्त वाक्य जो इतने विभिन्न थे, इतने विभिन्न स्थानों और परिस्थितियों में कहे गये थे, क्या इनमें कोई पारस्परिक सम्बन्ध होना सम्भव था? अब लिबर्टो इसी विषय पर एकाग्रचित्त हो विचार करने लग गया। वह ऐसी छोटी-छोटी बातों से अपना मन बहलाना

चाहता था। इस प्रकार वह अपने मन से उस भयानक शंका को जो उसके अन्तस्तल में बारम्बार उठ रही थी दूर रखने का अथक प्रयत्न कर रहा था। वह शंका थी—'पलायन के नियम' की। फिर भी मूर्ख हेलियस यह प्रश्न कर रहा था! क्या उसे यह स्पष्ट उत्तर नहीं मिल रहा था? वह उन्हें पलायन का नियम चरितार्थ करने बस्ती से दूर ले जा रहे थे। उसकी बचपन की स्मृति और हेलियस के प्रश्न में जो पारस्परिक सम्बन्ध था वह उनके हथकड़ियों से आहत हाथों से, उनकी असहाय अवस्था और अज्ञात आशंका से स्पष्ट था।

'क्या मुझे सचमुच यह हाथ लिये हुए रेखागणित के घण्टे में जाना होगा?'

उस लड़के के कान सिर से बहुत आगे निकले हुए थे। जब उसे सिगरेट खरीदने के लिए टकों की आवश्यकता होती थी तो वह अवकाश में सिर पर रूमाल बाँधकर लाट पादरी के महल के सामने भिखमंगों की पंक्ति में जा खड़ा होता था। लाट पादरी का प्रासाद स्कूल के बिलकुल सामने था। कभी-कभी वह रेखागणित के घण्टे से भाग कर दो-तीन अन्य लड़कों के साथ किसी पास के खेत में पहुँच जाया करता था। वहाँ साधारणतया भेड़ बकरियाँ चरती रहती थीं। यह लोग किसी मेमने को पकड़ लेते और उसको रूमाल से बाँधकर थाने ले जाते।

'यह मेमना लावारिस-सा इधर-उधर मारा-मारा फिरता था। इसलिए हम इसे यहाँ पकड़ लाये हैं।'

पुलिसवाले इन छोटे-छोटे लड़कों की प्रशंसा करते थे और इन्हें कुछ इनाम भी दे देते थे। उनका यह विचार होता था कि मेमने का मालिक जब अपना जानवर लेने आयेगा तो इनाम के ये पैसे बड़ी खुशी से दे जायगा। लिबर्टो को यह सब बातें याद थीं। किन्तु पलायन का नियम— यह क्या बला थी?... सरकार सभी बातों का

क़ानून बनाती है। यदि कोई अराजकवादी या साम्यवादी किसी मनुष्य की हत्या करें तो वह घातक हैं, यदि वह चोरी करें तो चोर हैं। सरकार सभी बातों का क़ानून बनाती है। यदि सरकार किसी का वध करना चाहती है तो उसे राजमार्ग पर ले जाकर, देश की रक्षा के नाम पर, उसके दो गोलियाँ मार देती है और फिर जज साहब के सम्मुख कहती है :

'वह भागा जा रहा था। गोली मार देने के अतिरिक्त हम कुछ और उपाय कर ही नहीं सकते थे।'

जज साहब इसके निषेध में बहुत-सी बातें कह सकते हैं। उदाहरणार्थ—एक बन्दी के लिए भागने का प्रयत्न करना तो परम स्वाभाविक ही है। गार्डों का यह कर्तव्य है कि जो आदमी निहत्था है, जिसके हाथों में हथकड़ियाँ पड़ी हुई हैं, उसको भागने से रोकने में वह शस्त्र का प्रयोग न करें। जज और भी ऐसी बहुत बातें कह सकते हैं, विशेषकर जो अभी बुड्ढे नहीं हुए हैं और जिनके हृदयों में यौवन-कालीन उदार वृत्तियाँ अभी तक विद्यमान हैं। किन्तु इन सबको सोचकर सरकार ने इसका भी पहले ही से प्रबन्ध कर रखा है। इसका भी एक क़ानून बना दिया है जिसके द्वारा जजों से टीका-टिप्पणी करने का अधिकार छीन लिया गया है। जब दफ़ा ४८७ लगाई जा सकती हो तो न्याय की बकवास व्यर्थ है; जब क़ानून की धाराओं में अपराधों और उनके दण्डों की पूरी व्याख्या कर दी गई है तो उत्तरदायित्व के प्रश्न पर बाल की खाल निकालने की क्या आवश्यकता है? किसी भी व्यक्ति को क़ानून पर मनन करने या उसके निरूपण करने की कोई आवश्यकता ही नहीं। क़ानून की किताब से अपराधी की मिसल को लाकर मिला दिया। जब मिसल पर किताब बिलकुल पूरी-पूरी चिपक गई तो इस यंत्रवत् समता को देखकर फ़ौरन् दण्ड की धारा पढ़ दी :

'छः साल और एक दिन।'

या

'हथकड़ियाँ बेड़ियाँ सहित आजीवन कारावास ।'

इसी प्रकार जिस जगह कि मृत्युदण्ड छपा हुआ है वहाँ तक आवश्यकतानुसार पढ़ते चले जाओ। किन्तु 'पलायन का नियम' वह क़ानून है जिसका उपयोग जजों के हाथ में नहीं होता। इसका प्रयोग पुलिस उन परिस्थितियों में किया करती है जब कि वह अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए ऐसा करना आवश्यक समझती है। सार्वजनिक शान्ति की रक्षा या स्वयं पुलिस कर्मचारियों को उनके पेशे की प्रतिष्ठा का पाठ हृदयङ्गम कराने के लिए भी वह इस नियम का उपयोग किया करती है। इस पर जजों को टीका-टिप्पणी करने का अधिकार नहीं होता। वह भी यह जानते हैं कि 'पलायन का नियम' भी एक क़ानून है जिसका वाह्यरूप तो अच्छा है किन्तु उसके भीतर सरकार की पोल भरी हुई है और सरकार के उच्च पदाधिकारी उसका उपयोग किया करते हैं।

यहाँ भी अब वही 'पलायन का नियम' उपस्थित था। चारों ओर अन्धकार छाया हुआ था। यह अन्धकार मानो इसी नियम की घोषणा कर रहा था। हथकड़ियाँ पहने हुए चारों क़ैदी पंक्तिवद्ध चले जा रहे थे। उनके साथ, इसी रूप में, राइफ़लें लिये हुए छः गार्ड भी चल रहे थे। एक एजेन्ट सबके आगे चल रहा था और दूसरा सबके पीछे। लिबर्टो आगे था और हेलियस पीछे। वे दोनों पाँव घसीट कर चल रहे थे और बिना कारण ही गिर पड़ते थे। वे अच्छी तरह समझ गये थे कि क्या होनेवाला है। लिबर्टो को औरों की दशा का ज्ञान नहीं था किन्तु वह इस बात को जानने का इच्छुक अवश्य था। सड़क के मोड़ पर जेल की काली स्थूलाकार इमारत ऊँचाई पर स्थित होने के कारण फिर दिखाई दी। वह उनकी बाईं ओर स्पष्ट नज़र आ रही थी। लिबर्टो ने कहा—

'वहाँ पहले और पाँचवें वार्डों में कामरेडगण इस समय पड़े सो रहे होंगे। उनके लिए सब कुछ पूर्ववत् हो रहा है। और यहाँ हमारे लिए सभी चीज़ों का अन्त हो रहा है।'

'कारागार का जीवन कैसा सुखद है। उसके सहन कैसे प्रकाश-युक्त हैं, वहाँ का वायुमण्डल कैसा सदय और सुखपूर्ण है' उसने जेल की ओर ऐसे भाव से देखा मानो वह कोई जादू का किला हो, मानो वह मोक्षधाम हो जहाँ जाने से उसे रोका जा रहा है। मानो वह हाथ बढ़ाकर उसको छू सकते थे, उन्हें वहाँ जाने का अधिकार प्राप्त होते हुए भी उन्हें यह परमधाम, यह निर्वाणपद प्राप्त करने से रोका जा रहा था! ऐसी अवस्था में सारी आशा छोड़ बैठने के सिवा वे और कर ही क्या सकते थे। पुलिसवाले जो अब उस 'पलायन' के नियम का उपयोग करनेवाले थे अपने इन शिकारों को राजमार्ग से कुछ दूर हटा लाये। यह बात प्रमाणित करने के लिए कि बंदी भागना चाहते थे यह आवश्यक था कि बंदियों के शरीर जिस स्थान पर पड़े हुए मिलें वह राजमार्ग से कुछ दूर हो। किंतु यह लोग तो अभी तक राजमार्ग पर ही थे!

हेलियस कुछ गुनगुना रहा था और पैरों से ताल दे रहा था। पहले उसे यह ज्ञान नहीं था कि वह क्या कर रहा है। किंतु उसे शीघ्र ही यह मालूम हो गया कि वह 'अतर्राष्ट्रीय' गीत गा रहा था। लिवर्टो को अब यह बात संदेहरहित रूप से मालूम हो गई, यह जान-कर कि हेलियस भी अब मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा है उसके सारे संदेह दूर हो गये। इस निश्चितता को वह सहन न कर सका। वह अधीर हो उठा। अब वह इस प्रकार लापरवाही के साथ पृथ्वी पर पैर रख रहा था मानो वह नंगे पैर हो और सारे जीवन-भर बिना जूतों के ही चलता रहा हो। मारग्राफ़ और फ्राउज़ेल भी हेलियस के साथ स्वर मिलाकर गाने लगे। उनके स्वरों से ऐसा प्रतीत होता था मानो वे पिये हुए हैं

या कई दिन से सोए नहीं हैं। वे मंद स्वर में गा रहे थे। अपने चहुँ ओर अन्धकार देखकर लिबर्टो को बचपन के डर की बात याद हो आई और उसकी इच्छा हुई कि वह प्रखर सूर्य के प्रकाश में प्राण त्यागता। अंधकार में तो हिंस्रपशु, डाकू और चोर-उचक्के मरा करते हैं। वह धूप, हवा और चौड़े मैदान में मरना चाहता था।

जब एजेन्ट उनको राजमार्ग से दूर हटा ले चला तो वे तीनों चुप हो गये लिबर्टो के मन में चिल्ला उठने की उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई, वह चाहता था कि सुदूर प्रकाशित खिड़कियों के पीछे जो नागरिक अभी तक जाग रहे हों उनको सचेत कर दे, अपने तुमुलनाद से रात्रि की निस्तब्धता को भंग कर दे, वह स्वयं उसको सुनना चाहता था, अपने कानों में उसकी गूँज भर लेना चाहता था। क्राउज़ेल अपने साथियों से छोटे-छोटे वाक्य कह रहा था मानो वह किसी भाषण का अंश हो।

'भाइयो, हिम्मत न हारो—क्रांति निरंतर आगे बढ़ती जायगी।'

गार्डों और एजेन्टों की अपेक्षा इन चारों की गति में अधिक दृढ़ता थी। इस बात का ज्ञान कि हम बिना अपराध मारे जा रहे हैं हमारे भीतर एक असाधारण नैतिक शक्ति का सञ्चार कर देता है। इसमें एक अप्राकृतिक सौंदर्य होता है। एक निर्दोष मनुष्य की हत्या करना निरपराधता को उन्नति के इतने ऊँचे शिखर पर पहुँचा देना है जहाँ कि मनुष्य की कल्पना कभी पहुँच ही नहीं सकती। इसके विपरीत घातक अपनी शांति खो बैठता है, उसका नैतिक अधःपतन हो जाता है।

जब लिबर्टो ने एजेन्टों और गार्डों को अपनी चाल धीमी करते और पछड़ते हुए देखा तो उसने इतना भर सोचा—

'अब।'

यदि उसमें अपना कलेजा काटकर बाहर फेंक देने की सामर्थ्य

होती तो वह इस समय ऐसा अवश्य कर गुज़रता।

हेलियस भी इस बात को अनुभव कर रहा था कि अब अंतिम समय आ पहुँचा है। अतः उसने उन्मत्त की तरह पूर्ण शक्ति लगाकर कहा—

'इनकिलाब ज़िंदाबाद !'

लिबर्टो ने ऐसे स्वर में उत्तर दिया मानो वह आँखें मूँद कर पहाड़ पर से गिरने जा रहा हो। अब वह फ़ायर करना आरम्भ करेंगे। भागकर जान बचाना असम्भव था। यह चारों दृढ़ता, उदासीनता एवं निष्काम भावना के साथ बढ़े चले जा रहे थे। अब सब गार्ड और एजेंट रक्षकगण-सदृश क्राउज़ेल से दो पग पीछे चल रहे थे। किसी के अभी तक तैयार न होने पर एजेंट के कर्कश स्वर में फटकारने की आवाज़ सुन पड़ी। इसी के साथ राइफ़ल में कारतूस भर जाने पर मैगज़ीन की चटखनी बन्द होने का प्रच्छन्न शब्द भी हुआ।

हेलियस का नाद अभी तक वायुमंडल में मुखरित हो रहा था। वह एक वीर की चुनौती थी जिसको हत्यारों ने स्वीकार नहीं किया। इस पर लिबर्टो ने डपटकर कहा—

'कायरो, फ़ायर क्यों नहीं करते ?'

यद्यपि इस पर भी गार्ड कुछ न बोले, तो भी ये चारों रुक गये। हाथों में हथकड़ियाँ होने पर भी उन्होंने परस्पर हाथ मिलाये। उनमें से कोई भी ज़रा काँपा तक नहीं। हेलियस सर्वप्रथम काल का ग्रास हुआ। जब इन लोगों ने तमंचे के दो फ़ायरों का शब्द सुना तो वह भागने को उद्यत हुए। किन्तु वह चारों एक रस्सी में बँधे हुए थे। अतः एक दूसरे से जितना अधिक दूर हट जाना सम्भव था वह उतनी दूर अलग हो गये। हेलियस की पीठ में दो गोलियाँ लगीं। लिबर्टो के गिरते समय बाढ़ की सहसा दीप्ति दिखाई पड़ी। उसका शरीर केवल एक बार तड़पने के बाद ही ठण्डा हो गया। वह अवश्य तत्क्षण मर

गया होगा। जब वह चारों भूशायी हो गये तो गार्डों ने उनके समीप आकर हत्कड़ियाँ और रस्सी खोल ली। उनमें से तीन अभी तक जीवित थे। लिवर्टो को छोड़कर सबकी धुकधुकी चल रही थी। हेलियस अभी तक अपने घोड़े की खाल के जूतों की बात सोच रहा था। इसी दशा में गार्डों ने उसकी खोपड़ी उड़ा दी। तदनन्तर शेष दोनों के हृदयों पर राइफ़लों की नालें रखकर उन्होंने कई फ़ैर किये।

पहली गोली छूटने के पश्चात् चारों बन्दियों के मुखों से न तो कोई वचन निकला और न कोई आवाज़ ही निकली। उनके कण्ठों में कुछ घरघराहट-सी हुई और वह धम् से पृथ्वी पर आ रहे। तत्पश्चात् पुलिसवाले सशीघ्र मोटरकार की ओर चल पड़े। रास्ता चढ़ाव का था। उनमें सबसे बुड्ढा आदमी बड़बड़ा उठा—

'इस हरामी ड्राइवर की बदमाशी तो देखो। अगर वह दो-चार क़दम और मोटर बढ़ा लाता तो क्या हर्ज था!'

सिंचाई की नाली में पतेल के नीचे एक गड्ढे में पानी भरा हुआ देख पड़ता था। उस जल में एक नक्षत्र प्रतिबिम्बित हो रहा था। पत्थर की एक कूँडी में जल झर रहा था। गोली चलने के पश्चात् घोर सन्नाटे में जल, अन्धकार और नक्षत्र ने एक स्वर होकर प्रश्न किया—

'मनुष्य क्यों मरते हैं?'

'क्योंकि उन्होंने मृत्यु का आविष्कार किया है। जन्म और मृत्यु वह कविताएँ हैं जिनसे वह अपने विचार में जीवन का शृङ्गार किया करते हैं। न वह जन्मते हैं और न मरते हैं। तुम्हारी ही तरह, ओ सुन्दर नक्षत्र, तुम्हारी ही नाईं, माता कृष्णा, और तुम्हारे ही समान रमणी सलिले, मनुष्य भी अजर और अमर है।'

फिर शवालय में

सामर ट्राम के तख़्ते पर खड़ा हुआ था। गत दो दिनों में क्रान्ति के आन्दोलन को बहुत बड़ा धक्का लगा था। शनैः शनैः कारखानों में फिर पूर्ववत् शान्ति और श्रम का दृश्य दिखाई देता जा रहा था। धीरे-धीरे श्रम और उत्पादन का वही पुराना ढर्रा स्थापित होता स्पष्ट दिखाई दे रहा था। वह इस समय उस मूल प्रवृत्ति की बात सोच रहा था जो हमारे अन्तस्तल में स्पंदन करती रहती है और हमें सामूहिक रूप से उत्तेजित करके संघर्ष आरम्भ करा देती है। हम अपने प्राण संकट में क्यों डालते हैं? हम क्यों भिड़ जाते हैं? हमारे इस कार्य के पीछे कोई मूल कारण अवश्य ही होना चाहिये। हमारे यौवनकाल की इस प्राणभूत तथा मौलिक युक्ति में कुछ न कुछ तत्व होना अनिवार्य ही है। हम लोग प्रकृतिस्थ, बलवान

और उदार हैं। हम यह मानते हैं कि एक आदमी को धोखा हो सकता है। किन्तु एक जन-समुदाय को, दस लाख प्राणियों को भ्रम नहीं हो सकता! हमारी आन्तरिक प्रेरणा क्या होती है? स्वाधीन हो जाने की उत्कंठा? हाँ, स्वतंत्रता भाव के रूप में, न कि विचार के रूप में। न तो कोई हमें यह भाव दे ही सकता है और न हम इसे कहीं से प्राप्त ही कर सकते हैं। भावना रूप में स्वतंत्रता को वही मनुष्य प्राप्त हो सकता है जिसने अपने मन को जीत लिया हो और उस अनन्त अज्ञात परमतत्व को निश्चित रूप से जान लिया हो जो कि प्रत्येक मनुष्य के अन्तस्तल में विद्यमान है। वह क्रीतदास जिसकी इच्छा भी उसकी अपनी नहीं है, जिसके स्वप्न काल-संबन्धी नहीं होते बल्कि जो अक्षय जीवन में अमरत्व की कल्पना करता है, अपने अंतःकरण के प्रति वह कोई उत्तरदायित्व इसलिए स्वीकार नहीं करता क्योंकि वह दूसरों की इच्छा का दास है, क्या ऐसा आदमी कभी स्वतंत्र भावना की उपलब्धि कर सकता है? इसके विपरीत, वह उस प्रसव पीड़ा से मुक्त होता है जो विचारों से सजीव कार्य-सामग्री उत्पन्न करती है, क्योंकि उसने जीवन की सीमा अपनी कल्पित अनन्तता तक बढ़ा दी है और वह अखिल परिपूर्णता से कम किसी भी अवस्था का स्वप्न नहीं देखता। 'मुझे केवल उनका आज्ञा पालन करना है। उस सनातन तथा परमतत्व के अतिरिक्त मैं कोई और स्वप्न देख ही नहीं सकता।' ऐसा मनुष्य जिसको प्रतिदिन रोटी मिल जाने का पूर्ण विश्वास हो, जो अपने भोजन को निश्चित रूप से ईश्वरीय उपहार समझता हो और उसके मिलने में उसे किसी प्रकार का सन्देह न हो, ऐसा ही मनुष्य यथार्थ में स्वतंत्रता की अनुभूति कर सकता है। यसूमसीह ने कहा था कि मैं मनुष्यों के लिए स्वाधीनता लाया हूँ। उसकी बात ठीक थी, क्योंकि वह जानता था कि किस प्रकार मनुष्यों को मिथ्या आशाओं और कल्पनाओं से उन्मत्त किया जा

सकता है। 'स्वयं अपने भीतर या अपने साथियों में परिपूर्णता की खोज मत करो, क्योंकि तुम्हें वह वहाँ न मिलेगी। भूमितल पर न्याय की आशा मत करो, क्योंकि तुम उसको यहाँ प्राप्त नहीं कर सकते।' निरवशेष सम्पूर्णता, आदि तथा अंत दोनों ही में ईश्वरीय विभूति थी, न कहीं उसका आरम्भ था और न अन्त। वही अनन्त समान रूप से सब प्राणियों के हृदयों में विराजमान है। धर्म पर श्रद्धा न रखनेवाले मनुष्यों के अन्तःकरण में भी वही विद्यमान है। कैथोलिक धर्म के अनुयायी अपने धार्मिक ग्रन्थों द्वारा उसी की उपलब्धि का विश्वास करते हैं। अतः सामर अनजान में चर्च के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित कर रहा था। 'लाटपादरियों, कार्डिनलों और पोपों का भाव भी कितना प्रशंसनीय है,' वह सोच रहा था, 'इन लोगों को धर्मावलंब माना जाता है और इन्हें स्वयं यथार्थ में ईश्वर पर श्रद्धा तक नहीं है?'

ईसाई धर्म की प्रधान घटना, अर्थात् क़ब्रिस्तान में ईसा को सूली दिया जाना, कोई अनोखी घटना नहीं है। किसी भी कामरेड की मृत्यु को, जिसने संग्राम में प्राण त्यागे हैं, एक ऐसे मत का और इस इस प्रकार के प्रचार का मूलाधार बनाया जा सकता है। उसमें कोई आकर्षण नहीं है। बुद्धिमान मनुष्यों के लिए पादरियों की संस्था में कोई सार नहीं रह गया है। कैथोलिक चर्च को ही ले लीजिये जो कि करोड़ों मूर्खों को अपनी प्रतिभा से चौंधिया चुका है। सिंगर मशीन कम्पनी का संगठन उससे कहीं अच्छा है। वह उससे कहीं अधिक अभिव्यापक है, कहीं अधिक सार्वभौम है। मुझे तो उसकी मनुष्यों को सुखी और निश्चिन्त बना देने की क्षमता पर आश्चर्य होता है।

भावना के रूप में स्वतंत्रता की उपलब्धि उसी मनुष्य को हो सकती है जिसमें कि सामाजिक उत्तरदायित्व का भाव ही न हो, जो कि राजनीतिक क्षेत्र में धार्मिक महत्वाकांक्षा न रखता हो, जिसकी कि न्याय में या मानवता के सौंदर्य में तनिक भी श्रद्धा न हो। कभी न कभी

न्याय का युग भी आएगा, उसकी व्यवस्था करनेवाले प्राणी भी मनुष्यानुरूप होंगे--दुर्बल मस्तिष्कवाले मनुष्यों के लिए यह एक दिखावटी रियायत रखी गई है--और इन्हीं प्राणियों में अखिल, पूर्णता परमपुरुषत्व की झाँकी मिलेगी। और यह दकियानूसी धर्म जो स्वयं ईश्वर पर विश्वास नहीं करता ईश्वर के नाम पर, उपर्युक्त प्रकार के करोड़ों स्वतन्त्र मनुष्यों को सुखी बना देता है। ऐसे मनुष्यों को दास कहना एक राजनीतिक निर्णय है जिसका भाव परिमित है और जो मनुष्य जाति की दृढ़ संभावनाओं की उपेक्षा करता है। स्वातंत्र्यभावना की तुष्टि केवल इसी प्रकार हो सकती है।

विचारों को यहीं छोड़कर सागर ने गहरे श्वास लिये। उसे यह मालूम हुआ कि इस प्रगाढ़ चिंतन ने उसके उष्ण रुधिर को शीतल कर दिया था। 'मेरे इस प्रकार विचार कर सकने का एक मात्र कारण यही है कि वह मर गई है।' उसने कहा। यदि कुछ ही दिन पूर्व यह विचार उसके मन में आते तो वह आशंकित होकर उन्हें दूर भगा देता।

यह भी जीवन का एक मार्ग हो सकता था। किंतु उसे अब इस बात की कोई परवाह न थी। यह बात उसने एक गहरे संतोष के भाव के साथ अनुभव की जिससे वह पीड़ित तथा भयभीत हो उठा। धातु की जो पटरी उसके और कंडक्टर के मध्य में थी उसने उसको खूब कसकर पकड़ लिया। उसने अपना होठ ऐसा काटा कि दर्द होने लगा। एक क्षण के लिए उस पर यह सनक सवार हो गई कि वह बाहर की ओर झुक जाय और अपने सिर को खंभे से टकराकर फट जाने दे। तत्पश्चात् फिर उसी विचार धारा में निमग्न होकर वह सोचने लगा—'यदि मुझमें धार्मिक श्रद्धा होती तो यह मनोवृत्तियाँ, जो एक गंभीर क्रमभंग का लक्षण अथवा कदाचित् उन्माद का प्रारंभ हो सकती हैं, मेरे पास तक न फटकने पातीं। धर्म मुझे अपने आपसे

यह कहने को बाध्य करता कि चूँकि मनुष्य में कोई परिपूर्णता हो ही नहीं सकती, अतः मुझे उसके मर जाने पर दुःख की जगह सुख मानना चाहिये। यद्यपि मैं स्वयं उसका बध कर डालता तो भी धर्म मुझे यह विचार न करने देता कि मेरा मस्तिष्क खराब होता जा रहा है, मुझे अपने आप से घृणा न होती और न पागल हो जाने के भय से व्यथित ही होना पड़ता। क्योंकि एक और मनुष्य के सम्मुख मैं अपनी घोर व्यथा निवेदन करके पाप से मुक्त हो जाता, अपनी आत्मा की रक्षा कर लेता। परमात्मा जो अखिल पूर्णता तथा अहेतुक दया का अक्षय भंडार है, मेरे साथ कठोर न्याय का व्यवहार न करता वरन् मेरी आत्मा को मुक्ति तथा सतत आनन्द प्रदान करके अपनी अलौकिक बुद्धिमत्ता का परिचय देता। और इस पर तुर्रा यह है कि मुझे यह बात बतलाने और हृदयङ्गम करानेवाले स्वयं ईश्वर पर विश्वास नहीं रखते!' अभी सामर कैथोलिक चर्च सम्बन्धी बातों पर ही आश्चर्य कर रहा था कि इतने में ट्रामकार एक विशाल वीथि से होकर संकीर्ण गलियों में मुड़-मुड़कर चलने लगी। वह स्वतंत्रता को भावना के रूप में, केवल धार्मिक अन्धविश्वास ही में कल्पित कर सका। 'यह असम्भव है,' उसने मन-ही-मन कहा, 'किन्तु फिर भी हम इस असम्भवता को सम्भव करने की इच्छा करते हैं। जीने की इस प्रबल इच्छा को जो हमारे मन को दबाये रहती है और सदा दबाये रहेगी हम अपने अति संकुचित राजनैतिक सूत्रों द्वारा तृप्त करने की चेष्टा किया करते हैं।' इसके बाद उसने एक अधिक समर्याद समस्या अपने सम्मुख रखी। 'हमारे लिए जीवन का राजनीतिक पहलू बहुत कम महत्त्व रखता है। राजनीति में सिद्धान्त की परवा न करते हुए समय के अनुकूल रंग बदलने और मतवाद के अतिरिक्त रक्खा ही क्या है। इसीलिए राजनैतिक मत हमारी किसी भी समस्या को कभी हल नहीं कर पाते। उसमें मानवता का जो अंश है हम उसी से प्रेरित होते हैं। और मान-

वता का सबसे मानवीय अंश भावना है। अतएव अज्ञात भाव से सवेग अन्तर्वृत्ति द्वारा प्रेरित होकर हमारा जनसमुदाय राजनीति का निषेध करता है। अतः यदि हम मानवता के सूक्ष्म दृष्टिकोण से जिसके कि हम कट्टर पक्षपाती हैं अपने अन्तःकरण के सम्मुख उपर्युक्त समस्या को रक्खें तो हमें पूर्णतः शुद्धभाव के साथ अपने आप से यह प्रश्न करना पड़ता है। मनुष्य में स्वाधीनता की जो रसात्मक तृष्णा है क्या उसकी तुष्टि द्वारा मनुष्य को अधिक सुखी बनाना हमारा उद्देश्य नहीं है? यदि इस उद्देश्य को स्वीकार कर लें तो यह सवाल उठता है कि क्या अध्यात्मवाद क्रांतिवाद की अपेक्षा इस काम को अधिक सरलता से नहीं कर सकता? हिंसात्मक विस्फोटनों के परिणाम स्वरूप अधिक से अधिक हम कुछ देर नियम बनाने का खेल खेलने में सफल हो सकते हैं। यह नियम परिमित, सापेक्ष, संदिग्ध एवं अपूर्ण ही होते हैं। इसके विपरीत, अध्यात्मवाद अखण्ड विश्वास तथा धार्मिक श्रद्धा के सुदृढ़ आधार पर अपना दर्शन-शास्त्र रचता है। तदनुसार हमारे हृदय में सदैव ही संसार की सुव्यवस्था की लालसा बनी रहती है, न्याय तथा कल्याण के लिए हम नित्य-निरंतर उत्कण्ठित रहते हैं। तो फिर क्या इन समस्त अन्तर्राष्ट्रीय नास्तिकवादों की अपेक्षा रोमन चर्च एक अधिक परोपकारशील कार्य नहीं कर रहा है?' इस निर्णय पर पहुँचकर सामर इस प्रकार मुसकराया मानो उसके ये विचार गम्भीरतापूर्ण नहीं थे। उसने आँखें मूँदकर इन विचारों से अपना पिण्ड छुड़ाने की चेष्टा की। मस्तिष्क को भावशून्य-सा बना लेने के पश्चात् उसने मन-ही-मन कहा—'विचारों को रोकने की यह चेष्टा भी यथार्थ में आध्यात्मिक है। यह एक अखिल सत्ता में विश्वास रखने की परिचायक है। यदि मेरा यह विश्वास कभी भंग हो जाय तो...'

बिना कुछ देखे-सुने वह ट्राम से उतर पड़ा। उससे एक क़दम के फ़ासले पर एक मोटर कार बड़ी कठिनता से ब्रेक लगाकर रुक पाई।

वह बाल-बाल मरते-मरते बचा। वह शांतिपूर्वक चलता रहा। सड़क पार करके उसने अस्पताल में प्रवेश किया। उसका खयाल था कि इस बार उसको चीलघर में जाकर चार कामरेडों की कथित मृत्यु का सत्यापन करने की अनुमति नहीं दी जायगी। अतः अपने एक सुपरिचित डाक्टर की खोज में वह एक कमरे में घुस गया। वहाँ जाकर उस डाक्टर के द्वारा उसने यह अनुमति प्राप्त की। एक अरदली उसके साथ गया। जब वह उस सहन में पहुँच गये जिसमें केवल एक एकेशिया का वृक्ष था तो वह अरदली वापस चला गया। शवस्थान में प्रवेश करते हुए सामर को वह समय याद हो आया जब कि वह कुछ ही दिन पहले 'रायल पारानिम्फ़' हत्याकांड के शहीदों के शव देखने यहाँ आया था। इस समय उस एकांत तथा दुदर्शन भूमिगृह पर सन्ध्या स्वर्ण प्रकाश छाया हुआ था। इस दृश्य को देखकर उसे उस रोशनी का स्मरण हो आया जो कि कैथलिक देवालयों में प्रातः उपासना के समय उसने देखी थी। यह उसके शिशुकाल की एक मधुर स्मृति थी। उसने चारों ओर घूरकर देखा। एक आवाज़ जिसका कि उसकी इच्छाशक्ति से कोई सम्बन्ध ही नहीं था, उसके अन्तःकरण की गहराई में उसे पुकारकर कहने लगी :

'लेकिन अब मैं यह समझता हूँ कि मृत्यु वास्तविक है, अब मैं इस बात को सत्य मानता हूँ।'

उसने उस दिन स्टार से जो कुछ कहा था उसका प्रत्याख्यान करते हुए यह बात कही। 'मैं उस दिन स्टार को,' उसने मन-ही-मन कहा—'यथार्थता का विश्वास प्रदान करना चाहता था। मृत्यु की उपस्थिति में हमें या तो ईश्वर पर विश्वास करना होता है या पूरा नास्तिक बन जाना पड़ता है।' सामर चाहता था कि स्टार के मनोभाव को हटाकर उसकी जगह उसके हृदय में नैतिक निषेधवाद का विश्वास स्थापित कर दे। इस नैतिक निषेधवाद का अर्थ है कि हम

अपनी जीवन-शक्ति में विश्वास रखते हैं, यही शक्ति वायु और चट्टानों का जीवन है किन्तु यह शक्ति हमारे अन्दर कभी नहीं रहती, वह केवल वायु और चट्टानों ही में रहती है। यह सिद्धान्त इस बात पर ज़ोर देता है कि सारे ब्रह्माण्ड का जीवन संगीत सदृश संयुक्त है और एक छोटी-सी सूर्य किरण का किसी मकान के छज्जे पर अकस्मात् प्रकाशित होकर छिप जाना हमारे जन्म-मरण से अधिक महत्त्व रखता है। वह स्टार को यह मत प्रदान करना चाहता था। किन्तु स्टार अराजकवादिनी थी। उसके हृदय पर भावों की विजय हुई थी और अब वही भाव सामर को परास्त किये दे रहे थे।

'अब मैं मृत्यु पर विश्वास करता हूँ।'

केवल पाँच शिलाओं पर शव रखे हुए थे। उन पर चादरें पड़ी हुई थीं। इन पाँच शवों की उपस्थिति ने सन्नाटे को और भी भयानक बना दिया था। सामर का चित्त खिन्न हो गया। फिर भी वह सबसे निकटवर्ती शव के पास जा पहुँचा। बाहर उस अन्तमार्ग में जहाँ से कि द्वारपाल के घर को रास्ता जाता था, एक स्त्री किसी से झगड़ रही थी। उसकी बातचीत से सामर ने यह समझ लिया कि वह चीलघर की चादरें धोया करती थी।

'इसका काम बड़ा दुःखदायी है।' उसने सोचा।

वहाँ की हरएक चीज़ उसे अभिभूत कर रही थी! फिर भी उसकी मनःस्थिति पिछले दिन से बिलकुल विभिन्न थी। वह अक्षुब्ध पृथक्ता, मानसिक अव्यग्रता एवं शान्ति अनुभव कर रहा था। उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो उसकी आत्मा बुझ गई हो। उसने मुसकराते हुए सोचा—

'मैंने उसको अपनी आत्मा भेंट कर दी और वह उसे अपने साथ ले गई।' इस विचार में उसे आनन्द मिला। वह सेब की नाईं मधुर तथा वास्तविक था। वह शव के पास से पीछे हट गया था, अब फिर

उसकी ओर बढ़कर उसने अपनी उँगलियों के अगले पोरुओं से चादर का सिरा उठाया। धोबन की दूर से आनेवाली आवाज़ ने उसका धीरज बँधाया और जैसे ही उसने भुजा ऊपर उठाई शव का सिर और सीना खुल गया। चादर पकड़े-पकड़े वह लड़खड़ाता हुआ पीछे हटा! बराबर खाली शिला के नोकीले सिरे से उसने टक्कर खाई। उसकी कमर में बड़े ज़ोर की चोट आई! उसने चादर छोड़कर कमर सुहलाने का व्यर्थ प्रयत्न किया। चादर नीचे गिर पड़ी। उसकी एक भुजा अब भी शिला पर थी। उसका शरीर बल-शून्य-सा हो गया। उसका सिर झुककर वक्ष पर आ पड़ा, उसका मुख खुल गया, दारुण यातना से उसके नेत्र खुले के खुले रह गये।

'यह तुम हो! यह तुम हो!' उसने भग्नस्वर में कहा।

शिला पर एक स्त्री का मृत शरीर था जिसके बाँये स्तन के नीचे काले दाग़ थे। सामर बोल तो रहा था किन्तु उसके विचारों और शब्दों में परस्पर विरोध था। उसे इन दोनों में से एक का भी ज्ञान नहीं था। अम्पारो के शरीर की सुन्दरता प्रदर्शित करने में मानो प्रकाश को भी आनन्द मिल रहा था।

'यहाँ तो चार के स्थान पर पाँच हैं। पलायन के नियम के शिकार और वह।' उसने जड़वत् कहा।

और इसी समय उसे यह स्मरण हो आया कि यही शरीर दो दिन पहले उसके बाहुपाश में जकड़ा हुआ था। उच्चस्वर में बोलने के अभ्यास के कारण उसके शब्दों में उदासीनता स्पष्ट मालूम हो रही थी। उसके विचार कहीं और थे और उसके शब्द रिक्त थे।

'वह चारों और तुम, अम्पारो। उनका तो वध किया गया है, किन्तु तुम यहाँ कहाँ? मैं तो यही समझता था कि तुम चली गई। और लो तुम फिर मेरे पास लौट आई। तुम्हारी क्या इच्छा है?'

वह स्वयं ही अपनी बात में बाधा देता जाता था। उसका स्वर

इतना भर्राया हुआ था कि वह सुबकी भरता हुआ-सा प्रतीत होता था।

'बोलो ! बोलो ! तुमने।मुझे इतनी खोज करने के पश्चात् पाया है !' उसने एक गहरी श्वास लेकर फिर कहा—

'तुम क्या चाहती हो ?'

यदि कोई उसका आर्तस्वर सुनता तो यही समझता कि वह रो रहा था, किन्तु उसके नेत्र शुष्क थे। धोबिन की दूर की आवाज़ अब भी उसके कानों में पड़ रही थी। उसकी मुर्दा आँखें लाल ट्रल हो गईं और झपने भी लगीं। सामर ने ज़ोर से पुकारकर कहा :—

'यह मेरा अपराध नहीं है। मैं तुम्हारे प्रेम में पागल था। हम दोनों में से एक का मरना आवश्यक था।'

उसने विचार किया कि अब, मर जाने के पश्चात् ही यथार्थ में वह उससे मिल सकी थी। वह कहे गया :—

'तुम मृत्यु थीं। तुम्हारा प्रेम मृत्यु था।'

वह बिना आँसुओं के रो रहा था। उसकी आत्मा विलाप कर रही थी। उसने भुजा पर भुजा रखकर अपना माथा शिला पर टेक दिया। शव की विपन्न नग्नता ने शिलीभूत मौन द्वारा उसकी यातना का उत्तर दिया। अन्त में वह उसी की बग़ल में थी। उसने क्रान्ति को अंगीकार करने में जो त्याग किया था वह इन चारों कामरेडों के त्याग से अधिक था। उन्होंने तो केवल अपने प्राण त्यागे थे। उसने अपने प्राणों और विश्वास दोनों की बलि दी थी। एक आत्मघाती विश्वास और चर्च दोनो को तिलांजलि देता है और उसने जीवन तथा चर्च से भागकर ईश्वर की कृपा तक को खो देने में आगा-पीछा नहीं किया था। सामर विलाप कर रहा था किन्तु फिर भी अम्पारो का नग्न शव पूर्ववत् शिलीभूत मौन द्वारा ही उसका उत्तर दिये जा रहा था। सामर ने झुककर उसका अधरपान किया और प्रार्थना की—

'बोलो ! मुझसे बोलो न !'

उसके दाँतों के पीछे जो गहन अन्धकार छाया हुआ था वह वाचाल हो उठा। संगमर्मर जैसे शरीर पर पड़ा हुआ हाथ भाव दर्शाने लगा। उसकी गोल-गोल पैर की उँगलियों के छोटे चमकीले नाखून बोल उठे। किन्तु इस सुनहले प्रकाश में उसकी कराल नग्न धवलता सबसे अधिक मर्मभेदी थी। परन्तु जब सामर ने उससे बोलने की प्रार्थना की थी तो उसकी हार्दिक इच्छा यही थी कि वह पूर्णतः मौन हो जाय। वह जितनी अधिक विनय कर रहा था, जितना अधिक गिड़-गिड़ाता था उतनी ही अधिक निश्चिन्तता के साथ उसकी वाणी मृत्यु के महारव मौन में डूबती जा रही थी! अतः उसने चुप होकर अपने आपको भूशायी हो जाने दिया। उस खम्भे के पास जिस पर कि शिला का एक सिरा टिका हुआ था वह फ़र्श पर गिर पड़ा। पल पर पल बीतता जा रहा था। उस दारुण मौन में, उस घोर निस्तब्ध एकान्त में वह बोल रही थी। किन्तु वह बोल कहाँ से रही थी? अतः वह कण्ठ-स्वर जिसने कितने ही दिन पूर्व पुलकित अधरों से 'मेरे जीवन की मिथ्या कल्पनाएँ' कहा था अतिदीर्घ यात्रा के पश्चात् अप्रच्छन्न सत्य के लोक में जा पहुँचा था। सत्य का सनातन रूप ही यही है—नग्न, निर्मल, मूक। वह सुन्दर होता है, उसके नयन बन्द होते हैं। किन्तु वह है कहाँ। बोलो, सत्य! तुम कहाँ हो?

सामर उठ खड़ा हुआ और उसके सिर पर प्रश्नों की भरमार करने लगा। उसके शब्दों के सवेग निःश्वास से उसके बालों की एक लट हिल गई।

'तुम कहाँ हो?'

भूमिगृह की घोर प्रतिध्वनि ने अजेय एकाकिता की घोषणा से उसके हृदय को मसोस डाला। इस घोषणा में सत्य था। सत्य रिक्त तथा एकाकी होता है और निराशा को प्रतिध्वनित करता है।

'तुम कहाँ हो? तुम्हें वहाँ कौन ले गया? मुझे भी अपनी

सत्यानुभूति का भागी बना लो जिससे कि मैं भी तुम्हारे इस मौन में तुम्हारा साथी बन सकूँ। तुम मुझसे कहाँ से बोल रही हो?'

वह स्वयं अपने व्यक्तित्व में अम्पारो की मृत्यु और उसके इस हृदयग्राही मौन का कारण ढूँढ़ निकालना चाहता था। उसका मन स्वयं बहुत दूर चला गया था, जीवन से भी दूर। 'मैंने ही तुम्हारे प्राण लिये हैं। किंतु मैं क्या हूँ और कहाँ हूँ?' जिस प्रकार जंगली जानवर स्वयं अपनी छाया पर झपट पड़ता है उसी प्रकार वह अपने मूलतत्व की खोज कर रहा था? उसके भीतर वह कौन सत्ता थी जिसके कारण यह सब कुछ हुआ था? वह इस सत्ता से युद्ध करना चाहता था, उसका अस्तित्व तक मिटा देना चाहता था, और फिर अम्पारो के साथ उसी ओर जाना चाहता था जिधर वह गई थी, ताकि वह भी उस भाषा को समझने लग जाए जिसमें उसका धवल मौन वार्तालाप करता था। वह बराबर उसी की ओर ताकता और नीरव अश्रुओं से रो रहा था। इस अश्रुप्रवाह में वह अपने परिसरों से दूर बहा चला जा रहा था। वह रो रहा था, स्वयं अपने नैराश्य के अतिरिक्त उसे किसी भी और बात का ज्ञान न था, उसकी दोनों आखों से सवेग अश्रुधाराएँ बह रही थीं। वह बहुत देर तक इसी प्रकार रोता रहा। उसकी सुब-कियों और घोर यातना को शब्दों की कोई आवश्यकता ही न थी। वह उससे अब भी उतना ही प्रेम करता था। उसके मर जाने से उसके प्रेम में कोई कमी न आने पाई थी। वह इस समय सोई हुई थी, उससे दूर चली गई थी। और वह उसके प्रेम में उन्मत्त था; उसके मुख में जो अन्धकार था, उसके शरीर पर जो प्रकाश पड़ रहा था—वह उनसे भी डाह करता था! वह दूर थी या सोई हुई थी। वह ऐसी सोई थी—उसकी नींद इतनी गहरी थी कि वह अब कभी जागेगी नहीं। वह उससे इतनी दूर पहुँच गई थी कि उसके पास लौटकर आना असंभव था। वह सदा-सर्वदा के लिए सो गई थी! वह सदैव के लिए दूर

चली गई थी ! अश्रुओं के मध्य में उसकी व्यथा इस प्रकार सशब्द हो उठी :

'तुम्हारे नेत्रों में, समस्त शरीर में, तुम्हारे शब्दों में स्वाधीनता, न्याय और कल्याण भरा हुआ था । तुम्हें खोकर मैं अपना सर्वस्व खो बैठा हूँ। मेरी बात सुन रही हो न ? जिस प्रकार मौन होकर तुमने इतनी बार मेरी बातें ध्यान से सुनी हैं, उसी प्रकार अब भी मेरी बात सुन लो । तुम मूर्तिमान स्वतंत्रता, न्याय और कल्याण थीं। मैं एक अंधी प्राकृतिक शक्ति था। मेरी अंतरात्मा का सूर्य विषाक्त था। मैंने तुम्हारी समस्त सत्ता को अपने बाहुपाश में जकड़कर उसका बध कर डाला। मैंने प्रत्येक वस्तु का तिरस्कार कर डाला ! यदि तुम मेरी बात सुन रही हो तो मुझ पर तरस खाओ ! सौंदर्य तथा स्वर-माधुर्य में तुम अब भी जीवित हो और सदा जीवित रहोगी भी। मैं मृत हूँ, विरक्त और अस्थिर भाव से मैं किसी प्रकार लुढ़कता रहूँगा । चाहे कहीं भी तुम होओ, मेरी इस बात को कान लगाकर सुन लो !'

उसने उसके कान पर मुँह रखकर मंद स्वर में कहा :

'जिस प्रेम का परिचय मैंने उस दिन तुम्हारे निकुंज में और तुम्हारी प्रेम शय्या पर दिया था वही प्रेम अब भी, तुम्हारे मर जाने पर भी, मेरे हृदय में विद्यमान है।'

वह लड़खड़ा गया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह फिर वही प्रश्न पूछ रही है—

'क्या तुम मुझे क्षमा करते हो ?'

उसने अपने माथे पर हाथ फेरा और उन्मत्त की नाईं चारों ओर दृष्टि डाली। वह फिर रोने लगा। रूमाल के भीतर से उसकी सुबकियों का शब्द ऐसा मालूम होता था मानो कोई दिखाने के लिए रो रहा हो। यूँ तो वह कमरे में अकेला था किन्तु सारे कमरे में अम्पारो की सत्ता व्याप्त थी। वह बिलकुल पागल-सा हो गया। उसने अनुभव

किया कि उसका बाँया हाथ हिल रहा है, उसकी पुतलियाँ चल रही हैं। वह इस प्रकार सिहर उठा मानो उसने कोई भयानक किन्तु सुहृदय छाया देखी हो। उसे पुनः यही बात मालूम हुई। वह फिर रो पड़ा। प्रकाश अधिक प्रखर हो उठा था और ऐसा प्रतीत होता था कि वह उसके चमकीले दाँतों तथा पीतवर्ण शरीर से निकल रहा हो।

वह शुद्ध हृदय था। न्याय और कल्याण उसके लिए ललित भावना मात्र थे। जहाँ तक स्वतन्त्रता का सम्बन्ध है उसने उस हृदयंगम स्वतन्त्रता की अनुभूति, जिसके द्वारा मनुष्य स्वयं अपने ऊपर और ब्रह्माण्ड के ऊपर विजय पाता है, उस अवसर से अधिक कभी नहीं की थी जितनी कि उसने अम्पारों को अपने अंक में लेते समय की थी। उसका हृदय निष्कपट था। श्रम की निर्व्याजता सदैव उत्कट तथा प्रदर्शनात्मक हुआ करती है। सामर ने अपनी भुजाएँ ऊपर उठाईं, बाल नोच डाले और नख गर्दन में गड़ा दिये। यही अधर जो अब सदैव के लिए मौन हो गये थे उसकी सारी चिन्ताओं को दूर और उसकी समस्त आकांक्षाओं को पूरा कर सकते थे। और अब, अब अम्पारो को खो बैठने के पश्चात्, उसका जीवन एक मरुस्थल था जिसे उसको रो-रोकर पार करना होगा। उसमें उसको अब नंगे पाँव, उद्देशरहित भाव से, स्वयं अपना विरोध करते हुए, रेत और पत्थरों को अपना वह स्वप्न सुनाते हुए, जिसका पूरा होना अब असम्भव हो चुका था, चलना होगा। उसने अपनी मुट्ठियाँ खूब कस-कर बाँध लीं और चारों दीवारों को उन्मत्त की तरह देखते हुए कहा—'दुष्टो! ओ दुष्टो!'

उसे एक बार फिर अम्पारो के अन्तिम शब्द सुनाई पड़ते मालूम हुए। वह उसके हृदय पर ब्रह्मा की अमिट रेखा की तरह अंकित थे। वह मुट्ठियाँ बाँधे हुए सीधा द्वार की ओर दौड़ गया। वहाँ उसे द्वार में खड़ा हुआ एक आदमी दिखाई दिया। वह नीला जाकेट पहने हुए

था। सामर ने उस पर झपटते हुए कहा:

'तुम क्या चाहते हो?'

उस अपरिचित पुरुष ने कर्कश स्वर में उत्तर दिया—

'तुम कौन हो जो मुझसे इस तरह बात कर रहे हो? तुम स्वयं यहाँ क्या कर रहे हो?'

सामर कुछ बोला नहीं, मौन होकर उसकी ओर घूरता रहा। नवागन्तुक ने उस शिला को इंगित करते हुए जिस पर कि अम्पारो का शव रखा हुआ था, उत्तेजित स्वर में कहा—

'चादर उतरी हुई है। यह बड़ी लज्जा की बात है, क्योंकि स्त्री फिर भी स्त्री ही है।' एक क्षण के बाद उसने फिर प्रश्न किया:

'तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रहे हो?'

इस पर भी जब सामर कुछ न बोला और उसकी ओर पूर्ववत् घूरता रहा तो वह पुरुष मुड़कर बाहर जाने लगा। उसने तीन अन्य पुरुषों से यह बात कही। इनमें से एक अपने कन्धे पर एक बहुमूल्य शवभाजन लिये आ रहा था। नीली जाकेटवाले पुरुष ने अन्दर झाँककर देखा और उन तीनों आदमियों के आगे-आगे वह फिर अन्दर आया। शवपात्र लानेवाले आदमी ने पात्र को पृथ्वी पर रख दिया और नीली जाकेटवाला पुरुष उस शिला की ओर बढ़ा। जब सामर ने उसके मार्ग में बाधा दी तो उसने स्पष्ट भय के स्वर में कहा:

'हम इसे शवभाजन में रखने आये हैं।'

सामर ने द्वार को इंगित करते हुए कहा—

'चले जाओ यहाँ से!'

न जाने क्यों उस आदमी ने सफ़ाई देते हुए नम्रतापूर्वक कहा—

'हम लोग तो केवल अपना कर्तव्य पालन करने आये हैं।'

उसकी बाँह पकड़कर सामर उसे द्वार तक खेंचता हुआ ले गया।

इस पर वह अन्य तीनों उसकी सहायता को आ पहुँचे। सामर ने यह समझ लिया कि वह तीनो डरे हुए हैं। वह यह समझ रहे हैं कि उनका एक पूरे पागल से पाला पड़ा है। सामर ने उसको छोड़कर दूसरों पर आक्रमण किया। वह आदमी हाथ छुड़ाने का प्रयत्न कर रहा था। अब वह फिसलकर पृथ्वी पर आ रहा। सामर ने एक पग पीछे हटकर तुमुलध्वनि में कहा—

'सावधान, उसको कोई हाथ न लगाना!'

तदनन्तर उन तीनों ने उसको शान्त करने की चेष्टा की। अपने साथी को उठाकर खड़ा करने के अनन्तर वह उसके समीप आकर कहने लगे :

'हम समझते हैं कि आप उसके पति हैं किन्तु अब उसको मिट्टी में गाड़ देने के अतिरिक्त हो ही क्या सकता है। हमें आप अपना काम करने दीजिये।' वह लोग दृढ़तापूर्वक आगे बढ़े। उनमें से एक ने अम्पारो के सिर के नीचे हाथ डाला। सामर ने उसके सीने पर कसकर मुक्का मारा और फिर उसको हाथ पकड़कर पीछे खेंच लिया। अब वह सब मिलकर उस पर टूट पड़ना ही चाहते थे कि इतने में सामर उन पर रिवालवर तानकर खड़ा हो गया।

'तुममें से जो कोई भी ज़रा टस से मस होगा मैं उसकी खोपड़ी उड़ा दूँगा।'

तदनन्तर विषण्ण मुस्कान के साथ वह बड़बड़ाने लगा—

'मूर्खो, तुम उसे मिट्टी के नीचे दाबोगे? इससे अधिक तुम्हारी समझ में कुछ नहीं आता?'

वह तीनों पहले धीरे-धीरे पीछे हटे और फिर भागकर बाहर पहुँचे। सामर अपने हाथ में रिवालवर लिये रहा और अपने चारों ओर उन्मत्त नेत्रों से देखता रहा। फिर उसे चारों कामरेडों का ध्यान आया और उसने एक एक करके सबकी चादरें उठा दीं, यह उसके कामरेड थे। अम्पारो

के शव का ध्यान रखते हुए उसने हेलियस पीरेज़ की चादर केवल कमर तक ही उतारी। किंतु चादर उसके घुटनों तक उलट गई। वह घूरता रह गया। उसकी दृष्टि का क्रम भंग हो गया। खिड़कियाँ बहुत छोटी प्रतीत होने लगीं। मक्खियाँ शवों पर भिनभिना रही थीं। यह शब्द वायुयान के शब्द के समान तुमुल था। उसके नेत्र शुष्क थे। अब वह लगातार विचार नहीं कर सकता था। उसे यह भी स्मरण नहीं रहा कि वह कहाँ और क्यों है। उसने शवों और शिलाओं को गिनना चाहा। उसको वह कभी १५, कभी २० और कभी १०० जान पड़ते थे। तदनंतर वह सहसा उसके पास जा पहुँचा। उसने उसके ललाट को देखा—किंतु वह ललाट तो अब प्रस्तर सदृश था। अब उसे हेलियस यह कहता हुआ प्रतीत हुआ—

'प्रेम ! प्रेम। प्रेम !'

वह कान लगाकर खड़ा हो गया। उसने चारों कामरेडों की ओर ग़ौर से देखा। वह चारों मुसकरा रहे थे। हेलियस कहता गयाः—

'हमारा कामरेड एक प्रेमी है ! ज़रा देखो तो उसकी ओर ! क्या हम उसे यहाँ से खेंचकर नहीं ले जा सकते ? और हमारा मृत्यु - संबंधी निषेधार्थक घोषणापत्र—अब उसे कौन तैयार करेगा ?'

फिर वह चारों एक साथ चीख़ उठे—

'घोषणापत्र ! यहाँ से भाग जाओ ! वह तुम्हें यहाँ आकर पकड़ ले जाएँगे और फिर वह घोषणापत्र लिखा न जा सकेगा।'

किन्तु हेलियस पीरेज़ फिर भी अपना राग अलापता रहा—

'यह प्रेम है, कामरेडगण। उसे यहीं ठहरा रहने दो, क्योंकि वह प्रेम करता है।'

इस बात पर वे चारों मुसकरा दिये। सामर इस मुसकराहट को

संवरण न कर सका। सहसा उसे यह ज्ञात हुआ कि समस्त वस्तुएँ अपना साधारण क्रम स्थापित करती जा रही हैं। अब यह चारों कामरेड ठहाका मार कर हँस पड़े—

'प्रेम! प्रेम! प्रेम!'

उसने आगे झुककर फिर उसका अधरपान किया। अन्तर्मार्ग में पदचल समीपतर आती हुई प्रतीत हुई। उसने अपना रिवालवर निकाला, अम्पारो के शव को चादर से ढक दिया और कामरेडों के पास जाकर मन्द स्वर में कहा—

'कामरेड गण!'

उसका स्वर अभी तक उसके अधिकार में न था। वह स्वयं उसे अपना नहीं मालूम होता था। फिर उसने अम्पारो को इंगित करते हुए कहा—

'यह हमारी नयी कामरेड है। अब यह तुम्हारे साथ रहेगी। जिस मरुस्थल में अब तुम्हें जाना है वहाँ एक सच्चे कामरेड की नाईं इसको भी अपने साथ रखना। अच्छा, अब इसके साथ जाओ। देखो, तुम सब मुझे भूल न जाना।' उसको फिर भ्रम हुआ। अम्पारो के अन्तिम शब्द उसके मस्तिष्क में फिर गूँजने लगे—वही शब्द जो उसने झरोखे से कहे थे—

'क्या तुम मुझे क्षमा करते हो?'

उसने द्वार में मुड़कर कामरेडों को सम्बोधित करते हुए कहा—

'मरुस्थल में, तारिकाओं के मृदु प्रकाश में, तुम सब इसका अपराध क्षमा कर देना। वहाँ क्षमा कर देना संभव है, क्योंकि सभी वस्तुओं का आदि तथा अन्त क्षमा ही है। अन्धकार और प्रकाश के अतिरिक्त वहाँ और कुछ है ही नहीं।'

पदध्वनि अब उसके पीछे, बिलकुल समीप आ पहुँची थी। भूमि-गृह से बाहर निकलकर वह लोहे के एक जंगले पर चढ़ गया और

दीवार की चोटी पर जा पहुँचा। वहाँ से उसने देखा कि दो एजेण्ट उसका निशाना ताक रहे हैं। उन पर फ़ायर करके वह दीवार की दूसरी ओर फिसल गया। तदनन्तर भागकर वह एक सुरक्षित स्थान पर जा पहुँचा।

छठा इतवार

विषरणता का उत्तरफल

पैसिफ़िको स्ट्रीट में एक रात

संग्राम के तनाव के पश्चात् शिराएँ शिथिल पड़ जाती हैं और मनुष्य तथा अन्य प्राणी, सभी वस्तुएँ, यहाँ तक कि वायु भी—समस्त ब्रह्माण्ड विश्राम के लिए लालायित हो उठता है। उपर्युक्त घोर संघर्ष के अनन्तर मैड्रिड नगर का पैसिफ़िको मुहल्ला सर्वप्रथम सोकर उठा और उसीने उस पुरानी दासवृत्ति को सबसे पहले पुनः स्वीकार किया। मज़दूर पूर्ववत् कारखानों में जाने लगे। यह जाने हुए बिना कि वे क्यों और किसके लिए काम करते हैं वे काम को आवश्यक समझकर उसमें अज्ञानतः संलग्न हो गये। 'क्यों' और 'किसके लिए'—इन बातों की खोज करना उनका कार्य नहीं था। सैकड़ों मज़दूरों को इस बात की कोई चिन्ता ही न थी कि उनके काम से समाज को क्या लाभ पहुँचता है। उनको तो रोज़ कुआँ खोदना और रोज़ पानी पीना था।

रोज़ाना मज़दूरी के नियम ने उन्हें फिर पशु तुल्य बना दिया था। वे सरल प्रकृति अविचारशील ललचाये हुए पशुओं की नाईं काम पर टूट पड़ते थे। वे तो केवल पेट भरने के लिए परिश्रम करते थे। उनमें क्रियात्मक आनन्द की अनुभूति कहाँ ? वह क्या सृजन करते हैं और किसके लिए—उन्हें यह जानने से क्या प्रयोजन ! जब भूख से आँतें कुलबुलाने लगीं तो ये बेचारे विवश होकर फिर वही पराई मेहनत करने लगे। सदैव उनकी यही दशा रहती है—पसीना बहाकर चार पैसे कमाना और पशुवत् पेट का गड्ढा भर लेना ! अन्य सभी बातें उनके लिए व्यर्थ हैं।

बहुत से कामरेड मैड्रिड छोड़ भागे थे। वह सभी एण्डालूशिया की ओर अग्रसर हो गये। यह एक बड़ी आश्चर्यजनक बात है कि अभी से जब कि हम गुप्त स्थानों में छिपे हुए हैं एक अदृश्य शक्ति हमें दक्षिण की ओर अग्रसर होने को प्रेरित कर रही है। जब हमारी मशीन की कोई प्रधान कमानी टूट जाती है तो हमारा अन्तःकरण हमें दक्षिण की ओर जाने की प्रेरणा किया करता है। हम उसी प्रकार दक्षिण को जाते हैं जैसे कि प्रणय-ऋतु की समाप्ति पर—क्योंकि एक न एक दिन प्रेमकाल का अन्त होना अवश्यम्भावी है—आक्टोबर मास में पक्षीवृन्द निरक्ष की ओर जाया करते हैं। सामर भी दक्षिण की ओर चल पड़ा। मार्ग में वेधशाला के समीप रिटायरो पार्क में उसे स्टार और विलाकंपा एक बिंच पर बैठे हुए दिखाई दिये। स्टार का मुर्गा भी वहाँ मौजूद था। इन तीनों ने एक दूसरे के नेत्रों में नेत्र डालकर यही एक मूक प्रश्न पूछा— क्या इन चारों कामरेडों की मृत्यु ने हमारे आन्दोलन का अन्त नहीं कर दिया है ? फोन करते समय स्टार उससे यही बात कहना चाहती थी। इस बात की तुलना में अम्पारो के आत्मघात का प्रसंग, जिसका कि अन्य दोनों को अभी तक ज्ञान न था, बिलकुल नगण्य और फीका प्रतीत होता था। मैड्रिड की स्थिति अब यथाक्रम होती जा

रही थी। सभी बातें अब उसी पुराने ढर्रे पर होने लग गईं थीं। विलाकम्पा ने भी सामर से वही मूक प्रश्न किया। सामर ने भी होंठ बंद किये हुए उसका यह उत्तर दिया—

'वस्तुस्थिति हमें वशीभूत कर सकती है। क्रान्ति पर हमारा उतना ही अधिकार है जितना कि अन्तरिक्ष विद्या जाननेवाले को मौसम पर होता है।'

विलाकम्पा ने समाधान के स्वर में कहा—

'बहुत अच्छा, किन्तु यह तो बताइये कि हुआ क्या है।'

मोटर लारियों के धड़ाधड़ आने-जाने से खरंजा हिला जा रहा था। घंटी बजाती हुई ट्रामकारें इधर-उधर आ-जा रही थीं। लोग अपने अपने कामों से इधर-उधर जा रहे थे।

'बहुत अच्छा, किन्तु यह तो बतलाइये कि हुआ क्या है?' विलाकम्पा ने फिर पूछा।

इस प्रश्न का सामर ने यह उत्तर दिया—

'जो कुछ होना था वह सब हुआ। हमारे ऊपर क्रान्ति का आधिपत्य है और एक दिन वह होगा जबकि वह सर्वत्र शासन करेगी।'

इस बीच में उसने कहीं-कहीं किसी-किसी कामरेड को मार भी डाला था। तदनन्तर यह दोनो आँखों ही आँखों में प्रश्नोत्तर करते रहे। कुछ देर पश्चात् इस क्रम को तोड़ते हुए स्टार ने कहा कि गत दिवस से मुर्ग़ा और विलौटा हर समय परस्पर झगड़ा करते रहते थे।

सिंडीकेटें अभी तक बन्द थीं। चूँकि प्रायः सभी नेता जेल में थे, सभा करने का प्रयत्न करना सर्वथा व्यर्थ था। किन्तु कुछ ही समय पश्चात् जेल में सभाएँ होने लग जायेंगी। यह सभाएँ यथाक्रम होंगी। इनमें निर्दिष्ट प्रस्ताव रखे जायँगे। इनका विवरण लिखा जायगा। स्टार और विलाकम्पा की आँखें चार हो गईं। स्टार के नेत्रों में अपना प्रतिबिम्ब देखकर विलाकम्पा प्रसन्न हो उठा।

'कल मुझे भी कारखाने जाकर काम आरम्भ करना होगा।' स्टार ने कहा।

विलाकम्पा यह समझने में असमर्थ था कि वह सब बातें क्यों समाप्त हो गईं।

'क्यों न होतीं?' सामर ने पूछा।

'भाड़ में जाय यह सब! मेरे कैलंडर में तो सात लाल रविवार हैं और आज आम हड़ताल का केवल छठा दिन है। मेरी समझ में नहीं आता कि यह माजरा क्या है। तुम भी तो यह सब देख रहे हो।' विलाकम्पा ने सड़क की चहल-पहल और व्यस्तता को इंगित करते हुए कहा।

सामर ने उत्तर में कहा—

'यदि तुम संकेतों और मूढ़विश्वासों पर श्रद्धा रखते हो तो तुम्हें यह याद रखना चाहिये कि सात यहूदियों की पवित्र संख्या है। इबरानियों के दाढ़ीवाले ईश्वर ने छः दिन में संसार की रचना की थी; किन्तु हमारा सृष्टिक्रम अभी चला जा रहा है और हमारी विजय छठे दिन के पश्चात् होगी।'

'अरे भाई, यह कहने से तुम्हारा क्या अभिप्राय है?' विलाकम्पा ने इन गहरी बातों का मज़ा लेते हुए कहा।

'कुछ अधिक नहीं। बस यही कि हम अपनी सृष्टि के छठे दिन में चल रहे हैं। सम्भव है कि यह दिन अभी वर्षों तक समाप्त न हो, यद्यपि मेरा व्यक्तिगत विश्वास यह है कि अब इसमें कुछ ही वर्ष शेष हैं। इसके बाद हमारा सातवाँ दिन, विश्राम दिवस, आयेगा।'

'तो फिर मेरा कैलेंडर ठीक था?'

'निस्सन्देह! किन्तु हमारा कर्तव्य है कि जब तक हम विजयी न हो जायँ इन छठे और सातवें दिनों के पन्नों को पलटें नहीं।'

अब यह तीनों मौन हो गये। क्रान्ति तथा सिंडीकेटों के विषय पर वह कुछ न बोले।

'हम सुरक्षित हैं—' उन्होंने हृदय की मूक भाषा में, एक अस्पष्ट हर्षानुभूति के साथ कहा। विलाकम्पा प्रसन्नता के भाव से स्टार पर दृष्टि गड़ाये रहा। सामर ने सोचा—'इसने अपने चारों ओर मृत्यु का ताण्डव नृत्य देखा है। इसके देखते-देखते सच्चे कामरेडों ने प्राण त्यागे हैं, इसीलिए इसमें सारे बल और प्रतिघातक शक्ति का ह्रास हो गया है। यद्यपि वह अभी तक बड़े मोज़े नहीं पहनती है तो भी वह स्टार पर रीझा जा रहा है।' तदनन्तर सामर ने भी गत दिवस सदृश शून्यदृष्टि से स्टार की ओर देखा। उसके नेत्र कल से निष्प्रभ हो गये थे। स्टार ने उठकर सामर की भुजा पकड़ ली और यह तीनो नीचे की ओर चल पड़े। संध्या का समय था। चारों ओर शांति छाई हुई थी। पुनर्निर्माण विभाग के मन्त्रिगृह पर जो देवदूत और अन्य प्रतीक बने हुए थे उन पर अन्धकार में शोणित प्रकाश पड़ने से वह उत्कृष्ट प्रतीत हो रहे थे। अटोचा स्टेशन के पीछे सूर्यास्त का अन्तिम आलोक अभी तक दृष्टिगोचर हो रहा था और श्वेतमीनारवाली बैसिलिका की इमारत मक्खन की तरह मुलायम मालूम होती थी। बैसिलिका को देखकर बूर्ज्वा विवाहों, रिटायरो पार्क तथा तत्सम्बन्धी क्रीड़ास्थलों की याद ताज़ा हो गई। स्टेशन पहुँचकर वह पैसिफ़िकों की ओर मुड़ गये और उसके प्रकार से लगे-लगे चलते रहे। फिर मैड्रिड ज़ारागोज़ा-एलिकान्टे रेलवे के दफ्तरों से होते हुए वह दाँए हाथ को मुड़कर एक तंग गली में उतरे, जहाँ से स्टेशन के बाहर रेलवे लाइनों और बहुत-सी शंटिंग लाइनों को रास्ता जाता था। स्टार बराबर पूछती रही—

'हम लोग कहाँ जा रहे हैं? क्या तुम विन्दुओं को अस्त-व्यस्त करने जा रहे हो?'

सामर ने उनसे अपने कल शवालय जाने की बात नहीं कही थी। उसने उसको अपने पागलपन का लज्जास्पद रहस्य समझकर गुप्त रक्खा था।

जिन छोटे-छोटे कारखानेदारों और दुकानदारों की जीविका रेलवे से चलती थी उनके मकानों और कारखानों की ढलवाँ छतों पर सूर्य की किरणें अभी पड़ रही थीं। प्रकाश रंग-बिरंगा गंडेदार था। स्टेशन की सलेटदार चमकीली छतों के ऊपर होती हुई कोयले और धातु, भाप और बेकार लोहे की दुर्गन्ध आ रही थी जिससे उनके कंठों में पीड़ा हो रही थी। स्टार मुर्गे को गोदी में लिए हुए थी। अन्त को वह थककर कहने लगी--

'तुझे मैं कहाँ उतारूँ?'

विलाकम्पा ने भृकुटि चढ़ाकर कहा—

'मैं तो तुम्हारे इस मुर्गे से तंग आ गया!'

वह दोहरी पटरी के साथ-साथ चलने लगे। पटरी बहुत चौड़ी थी। उस पर दक्षिण जानेवाली ट्रकों का ताँता लगा हुआ था। उनकी संख्या अगणित-सी मालूम होती थी। इस अद्भुत राजमार्ग के ऊपर सिगनल के खंभों, छोटे छोटे क्रेनों, पानी की टंकियों, शीशेदार सिगनल-बक्सों का एक जाल-सा बिछा हुआ था। कहीं-कहीं पटरी अर्धवृत्ताकार हो गई थी। कहीं-कहीं ८-६ इंजिन एक पंक्ति में इस प्रकार खड़े हुए थे मानो रिसाले के कम्प में घोड़े खड़े हों। सिगनलों के खंभे और उनके चक्र निशागुम्फित लोहपाश से प्रतीत होते थे। इन दीर्घकाय बधस्तंभों की भुजाओं और टाँगों की संधियों में नीले, पीले, हरे, लाल रंग-बिरंगे प्रकाशविंदु थे जो इस एकांत और निस्तब्धतामें किसी अज्ञात इच्छाशक्ति के आदेशानुसार सहसा चमक उठते या गुल हो जाते थे। स्टार ने चारों ओर देखकर कहा—

'यह दृश्य सिनेमा और थियेटर से अधिक सुंदर है।'

विलाकम्पा भी इस दृश्य से बहुत प्रभावित हुआ किंतु इस भय से कि कहीं सामर उसे वाक्चातुर्य में हरा न दे, वह कुछ बोला नहीं। स्टार अब भी सामर की भुजा पकड़े हुए थी। चूँकि मुर्ग़ा भारी था और स्टार थक गई थी सामर ने उसे उतार देने को कहा और वह कुछ अन्तर से पीछे-पीछे चलने लगा। स्टार ने आकाश की ओर दृष्टि उठाई। सूर्यास्त की आभा अब वहाँ नहीं थी। उसके बिना उसका रंग चीनी सदृश प्रतीत होता था। वहाँ से दृष्टि हटाकर स्टार ने सिग-नलों की पंक्ति पर नेत्र गड़ा दिये। उनके सिरों पर प्रकाश का एक सुंदर पुल दिखाई दे रहा था। स्टार के देखते-देखते कभी कोई प्रकाश-विंदु सहसा प्रदीप्त हो उठता था, कोई बुझ जाता था, कभी कोई भुजा धमकी देती हुई-सी सहसा ऊपर उठ जाती थी और कोई नीचे गिर पड़ती थी। स्टार ज़ोर से हँस पड़ी। सामर ने संतोष के साथ मुसकरा कर कहा—'ज़रा देखो तो यह सब कैसे सजीव हैं! प्राकृतिक होने के कारण ही यह कल्पनात्मक एवं कलात्मक है। क्या यह सब प्रेडो के अजायबघर से सुन्दर नहीं है?'

प्रेडो का अजायबघर इसके सामने नीरस तथा प्रगल्भ जैसा प्रतीत होता था। 'कला' का भाव अनुकरणात्मक तथा निर्विशेष हुआ करता है। प्रस्तुत दृश्य में उनके सामने विशुद्ध रंगों और रेखाओं की क्रीड़ा थी जिसका आधार यांत्रिक गति, परिश्रम तथा रहस्य पर था।

लाइन के साथ-साथ अब वे देहात की ओर चलने लगे। एक लाइन पर एक दीर्घकाय इंजिन भक्-भक् करता हुआ मंदगति से चला आ रहा था। इंजिन ऊँचा था, और उसकी नीची धूम्रपेटिका का निर्गम-कपाट खुला होने के कारण उसमें से भाप के सशब्द बादल उठ रहे थे। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा आ रहा था, उसके पेट में पानी खौल रहा था, वह काले तथा धूसर वर्णों का एक सुंदर संमिश्रण था।

सामर एकटक छिपते हुए अंतरिक्ष की ओर देख रहा था। वह इंजिन उनके बिलकुल पास से गुज़रा। उसका गोलाकार फलक और संयोजक दंड अंदर जाते और बाहर आते हुए चमक उठते थे। वक्रदंडों द्वारा पहियों में शक्ति पहुँचती थी। और इसी से यह विपुलपिंड सुनिश्चितता के साथ आगे-पीछे चलता या रुक जाता था।

उसके पीछेवाली कक्षा में इंजिन ड्राइवर था। वह अधेड़ और गंजा था। उसका मुख कोयले से काला हो रहा था और भाप पसीना होकर टपटप गिर रही थी। सामर को एक क्षण के लिए उसके वायु-मापक यंत्र और उसकी सुई, विधान यंत्र, अंतःक्षेपक तथा गतिमापक यंत्रों की झलक दिखाई दी। यह सब पातल के बने हुए और चमक-दार थे। इनके अतिरिक्त वक्र उत्तोलन यंत्र और भूमितल-प्रदर्शक यंत्र थे। यह सभी पुर्ज़े पशुओं के हृदय, मस्तिष्क और गुर्दों की भाँति कोमल और आवश्यक थे। इन्हें देखकर सामर हर्षित हो उठा। विलाकम्पा स्टार और मुर्गों के साथ आगे चला गया था। सामर को पुकारने के लिए वह जैसे ही मुड़ा वैसे ही स्टार ने कहा—

'अरे उसे तो इंजिनों से प्रेम हो गया है।'

'यदि तुम इस प्रकार ट्रामकारों के प्रति अपने प्रेम का समर्थन करना चाहती हो तो मैं यह कहे देता हूँ कि तुम्हारा यह प्रयत्न व्यर्थ है। ट्रामकारों से प्रेम करने में तो कोई भाव ही नहीं दिखाई देता।' विलाकम्पा सिगनलों के तारों के समीप एक ढेर पर बैठ गया। यह तार पृथ्वी से एक फूट की ऊँचाई पर इधर से उधर तक चले गये थे। स्टार और सामर भी यहाँ आ पहुँचे। अब वे काफ़ी दूर निकल आये थे। एक ऊँची पुलिया पर जाकर पटरी एकहरी हो गई थी और उसके बीच में आ जाने से उन्हें दूसरी ओर का ग्रामीण दृश्य कुछ भी न देख पड़ता था। सामर ने दूसरी ओर लगे हुए बहुत से धातु के खंभों की ओर उंगली उठाई। यहाँ भी इनके ऊपर फ़ौलाद का एक बन सा

दिखाई देता था। यहाँ से रेल की शाखाएँ हो गई थीं। यहाँ भी वही सब चीज़ें—सिगनल और उनके स्तम्भ, हरे, लाल और पीले प्रकाश विन्दु, ऊपर उठी हुई या कैंची की तरह फैली हुई फ़ौलादी बाँहें मौजूद थीं। अब अन्धकार छाने लगा था। नीललोहित छाया में विलीन होते हुए दिन का अन्तरिक्ष पर अब झाड़ू के आकार का एक सूक्ष्मांश अवशेष था—उत्तर से दक्षिण तक एक गुलाबी श्रेणी चली गई थी। सामर मौन था। वह अम्पारो का ध्यान न आने देने का प्रयत्न कर रहा था।

यहाँ उसे अपने बलवान् और नूतन होने की अनुभूति हो रही थी। वही इंजिन लौटा और पूरी सजधज के साथ उनके सामने से होता हुआ आगे चला गया। उसके पहिये उनके सिरों के समतल पर थे। सामर ने एक नूतन, उन्नततर पराक्रम तथा एकता का स्वप्न देखा। इंजिन में जैसी प्रगतिशील शक्ति देख पड़ती थी उसी प्रकार की एक नवीन विमोचन-शक्ति की उसने मधुर कल्पना की। स्टार ने कहा—

'इंजिन अराजकवादी नहीं है।'

विलाकम्पा ने डाँटकर कहा—

'तुम भी कैसी बे-सिर पैर की बातें कहा करती हो!'

वही इंजिन शंट करता हुआ फिर वापस आया। उसको इंगित करके स्टार ने सामर से कहा :—

'लो तुम्हारी प्रेमिका वह आई!'

सामर ने उत्तर दिया—

'वह बूर्ज़्वा नहीं है, यही तो तुम्हारा अभिप्राय है न?'

किन्तु अपने शब्दों को सुनते ही वह समझ गया कि वह विवेक-शून्य थे। अम्पारो का शव उसी दिन प्रातःकाल में दफ़न किया गया था। उसे स्वयं अपने ऊपर लज्जा आ रही थी। उसने स्टार के उत्तर की ओर ध्यान नहीं दिया। वह अपने पैरों के बीच

में पड़ी हुई रेत पर नेत्र गड़ाये रहा। उसके शब्द कठोर थे, उनकी कठोरता मूर्खतापूर्ण, मर्मभेदी और विनाशकारी थी। वह उसके अन्तस्तल में प्रतिध्वनित हो रहे थे, उसे स्तंभित किये दे रहे थे। उसने एक गहरी श्वास ली। स्टार बराबर बोलती रही किन्तु उसने उसकी कोई बात न सुनी। तदनन्तर उसने नेत्र मूँद लिये। जब इंजिन फिर लौटकर आया तो वह प्रकृतिस्थ हो गया। वह फिर बोला किन्तु इस बार उसने अपनी निर्ममता को स्वीकार करते हुए कहा—

'इंजिन एक भावुक प्रेमिका तो नहीं है—क्या तुम इस बात से सहमत हो?'

विलाकम्पा ने निषेध करते हुए कहा—

'तुम रसिकता का उपहास क्यों करते हो? वह हमें ऊँचा उठाती है।'

सामर ने ठहाका मारकर कहा—

'किसी मूर्ख के भाषण से तुमने यह बात सीखी है।'

स्टार ने सशीघ्र झगड़ा मिटाने के अभिप्राय से कहा—

'मेरे विचार में मनुष्य का इंजिन से प्रेम करना संगत मालूम होता है।'

विलाकम्पा इस प्रसंग का सिर पैर न समझ सका। सामर ने भी इस बात को बढ़ाया नहीं। वह यह सोचकर कि यद्यपि विलाकम्पा इस बात को समझने में पूर्णतः असमर्थ था फिर भी वह स्वयं इस प्रकार का एक जीवित उदाहरण था। स्टार भी इस बात को नहीं समझ सकी किन्तु वह तो सामर के प्रत्येक शब्द को पूर्ण विश्वास के साथ सत्य मान लिया करती थी।

'मैं आज उस भविष्यकाल का पूर्वदर्शन कर रहा हूँ,' सामर ने इंजिन की ओर देखते हुए कहा—'जब कि मनुष्य यन्त्र सदृश परिपूर्ण

होंगे। यही स्थिति हमारा अन्तिम लक्ष्य है। उस समय यह संसार उस नवीन तथा यथार्थ सौंदर्य को उपलब्ध करेगा जिससे अध्यात्म-वादी दर्शनों ने हमें शताब्दियों से वञ्चित कर रक्खा है।'

अब वे तीनों मौन हो गये। ऐसे गूढ़ विचार यहाँ असंगत-से प्रतीत होते थे। अन्धकार में इंजिन के अन्तपृ ष्ठ पर दहकती हुई भट्टी का लाल प्रतिबिम्बि पड़ रहा था। उनको एक दूसरे का चेहरा दिखाई नहीं देता था। अन्धकार विश्रम्भालाप को सरल और अनिवार्य बना देता है।

'और तुम्हारी दूसरी प्रियतमा—उस बूर्ज़्वा प्राणवल्लभा का क्या हाल है? मैं उसके यहाँ अपना रिवालवर छोड़ आई थी।'

बड़ी कठिनता से हृदय को थामकर उसने उदासीनता के स्वर में कहा—

'उसने आत्मघात कर लिया।'

स्टार काँप उठी। उसने चिन्ताकुल भाव से सामर को घूर-कर देखा :

'ऐसा कदापि नहीं हो सकता!' उसने कहा।

सामर ने सिर हिलाकर कहा—'यह सच है।'

स्टार ने कहा—

'मेरे रिवालवर से?' और फिर यह सोचकर कि वह अपने हृदय का भाव ठीक नहीं दिखा रही है वह कहने लगी—'तो फिर वह अब क्या मिलेगा! वह रिवालवर बड़ा सुन्दर था, उस पर चाँदी का पत्तर चढ़ा हुआ था।'

अब बेचारा सामर उसकी ओर आँखें फाड़कर देखने लगा। इतने में विलाकम्पा बोल उठा—

'हमारे सामर के साथ सदा विचित्र से विचित्र बातें होती रहती हैं!'

यह स्पष्ट था कि वह हँसना चाहता था। सामर उसकी उदासीनता

से क्षुब्ध नहीं हुआ। वह स्वयं भी मानुषी स्नेह से चित्त हटाकर दाँतोदार पहियों के एक दूसरे के दाँतों में दाँत फाँसकर चलाने की प्रेम-भावना और फ़ौलाद के रहस्य पर विचार करना चाहता था। किन्तु विलाकम्पा और स्टार सदैव उससे आगे रहेंगे। उन्हें न तो दाँतोंदार पहियों का रहस्य जानने की आवश्यकता थी और न मानुषी प्रेम का भेद, न उन्हें लोहित स्वप्नों का अर्थ जानने की ज़रूरत थी, और न दूरस्थ अध्यात्म शास्त्रों के गूढ़ तत्वों को समझने की कोई इच्छा थी। सामर उनके इस गुण का प्रशंसक था। उसने अम्पारो का ध्यान किया और उसकी 'मिथ्या कल्पनाओं को' अपने मानस-पट पर चित्रित करना चाहा, उसके आत्मोत्सर्ग, उसके स्वर की मधुरता और अधरामृत-पान के स्वर्गोपम आनन्द को पुनः हृदयङ्गम करने की चेष्टा की, किन्तु उसे स्वयं अपने अक्षुब्ध तथा उदासीन भाव पर बहुत आश्चर्य हुआ। उसे वह सब बातें इस प्रकार याद आने लगीं मानो उसने वे किसी पुस्तक में पढ़ी हों, मानो उसके जीवन से उनका कोई सम्बन्ध ही न हो। अम्पारो सदैव सहज बुद्धि ही द्वारा सारे कार्य किया करती थी। उसी की प्रेरणा से उसने यह प्रश्न किया था—

'क्या अब तुम्हें अधिक सुख होगा?'

और उसने बिना सोचे-समझे उससे कह दिया था—'हाँ, मुझे अधिक सुख मिलेगा।' इसका कारण यह था कि प्रेम, भावना और विवेक के अतिरिक्त मनुष्य में एक जागरूक सहज-शक्ति भी होती है। उसी की प्रेरणा से उसने 'हाँ' कह दिया था। अम्पारो को भी अंतर्ज्ञान द्वारा इस सत्य का आभास मिल गया था, क्योंकि प्रेम हमारे अज्ञात विवेक-चक्षु खोल दिया करता है। उसने बे सोचे समझें 'हाँ' कह दिया था। इसी शब्द के परिणाम-स्वरूप आज उसे निर्विवाद रूप से यह ज्ञात हो रहा था कि वह अब स्वस्थ हो गया है, प्रेमरोग से मुक्त हो गया है। यह बात सच्ची थी। उसका हृदय हर्षपूर्ण था।

स्टार और विलाकम्पा की निःस्पृहता से वह उद्विग्न नहीं हुआ। जो कुछ हुआ वह अच्छा हुआ।

अब वे उठकर दक्षिण की ओर चल पड़े। चूँकि मुर्ग़े के लाल पर अन्धकार में काले प्रतीत होते थे अतः वह देख ही नहीं पड़ता था। जब वह लोहे के एक पुल पर पहुँचे तो उन्हें रेलगाड़ी आती हुई प्रतीत हुई। पुल की एक ओर एक बहुत तंग पैदल चलने का रास्ता छूटा हुआ था। वे आगे-पीछे एकहरी लाइन में चलकर आगे पहुँचे और पुल के एक खंभे का तकिया लगा कर गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगे। उनके चालीस फ़ीट नीचे एक सड़क थी। जब गाड़ी समीप आती प्रतीत हुई तो उन्होंने उसी ओर मुँह फेर लिया। वह ऊपरवाली पटरी पर आ रही थी। जब वह बिलकुल समीप आ पहुँची तो इंजिन ने सशंक भाव से दो बार सीटी दी। वह एक्सप्रेस गाड़ी थी और ब्रेक लगाकर उसकी गति मंद की जा रही थी। यंत्र हाँपता हुआ किंतु अक्षुब्धता के साथ श्याम तथा धूसर बादल उड़ाता हुआ आगे बढ़ा चला गया। शोर से कान फटे जा रहे थे—सारा पुल हिल रहा था। आकाश में—वायुमंडल में—एक शून्य-सा प्रतीत होता था जो इन मेघों को उगलता और निगलता हुआ मालूम होता था। इस लौह प्रवाह के गमन ने उन्हें अंधा-सा कर दिया, वे सब क्षुब्ध हो उठे, उन्हें और कुछ सुन नहीं पड़ता था, उनकी सारी इन्द्रियाँ स्तंभित हो गई थीं। किन्तु यह क्षण कितना शोभासम्पन्न था! स्टार ने हँस-कर कहा—

'हम लोगों ने फ़ौलाद के जल में स्नान किया है!'

तदनंतर उसने मुर्ग़े को खोजा किन्तु उसे उसकी एक टांग और मुट्ठी भर परों के अतिरिक्त कुछ न मिला। विलाकम्पा ने संतोष की हुंकार भरकर कहा—

'इतने दिनों बाद अब उस मुर्ग़े से हमारा पिंड छूटा है।'

किन्तु स्टार ने मुट्ठियाँ बाँधकर और दाँत पीसते हुए आग्नेय दृष्टि से अंतरिक्ष में विलीन हुई ट्रेन को देखा ! सिगनलों के प्रकाश विंदु मुँह बनाकर मुसकराते हुए प्रतीत हो रहे थे, मानो वह उसका उपहास कर रहे हों। सामर के मानसपटल पर अब भी चलते हुए इंजिन का चित्र अंकित था, वह अभी उसी कल्पना में तल्लीन था, अतः उसने कुछ भी नहीं कहा। यह मानसिक चित्र इतना पूर्ण, दृढ़ और प्रभावशील था कि उसे इस वास्तविक दुर्घटना का पता ही न चला जो स्वयं उसकी कल्पना के समान विलक्षण थी। विलाकम्पा ने रुक कर यह प्रस्ताव किया—

'हमें अब वैलेकास की ओर चलना चाहिये।'

समय बहुत हो गया था। उन्हे घर भी पहुँचना था। अतः वे लौट पड़े। यह पुल २५ गज़ ऊँचा था। यहाँ से एक छोटी-सी पगडंडी नीचे जाती थी जो एक मैदान में जाकर निकलती थी। यद्यपि अंधकार में बहुत कम दिखाई देता था फिर भी यहाँ छोटे-छोटे लड़के अभी फुटबाल खेल रहे थे। इस मैदान के चारों ओर एकतल्ले मकान थे। उसके एक कोने में एक जलाशय था। अब वह एक तंग गली में घुस गये। इस उपांत में देहात-जैसी शांति थी। इस मार्ग से वह पुल के समीप पैसिफ़िको में जा निकले। वे बहुत थके हुए थे। कहीं बैठकर विश्राम करना चाहते थे। अतः वे एक होटल में गये। स्टार मुर्गों की दुःखद मृत्यु पर शोक कर रही थी और विलाकम्पा उसका उपहास कर रहा था।

होटल में उन्होंने कच्चे टमाटर, रोटी और शराब की फ़रमायश की। उन्होंने चटनी बनाई और खूब पेट भरकर खाया। विलाकम्पा ने चारों ओर दृष्टि डाली। तदनन्तर वह मकान नम्बर देखने के लिए बाहर चला गया।

'हेलियस, क्राउज़ेल और फ़ाऊ यहीं रहा करते थे।'

स्टार दाँतों से टमाटर काटती हुई सोच रही थी—मेरे पिता गये, कामरेडगण गये और बूर्ज्वा प्रेमिका भी चल बसी। अब क्या होगा? उसके हृदय में जो गोली है उस पर मेरे नाम के प्रथमाक्षर अंकित हैं। अब अराजकवादी समाचारपत्र मेरे पास आयेंगे। उनके चारों ओर लिपटे हुए काग़ज़ पर मेरा नाम लिखा होगा। सिंडीकेटें फिर खुलेंगी और फिर सारे काम पूर्ववत् होने लग जाएँगे। विलाकम्पा ने दुबारा कहा—

'यहाँ दोनों छपाई का काम करनेवाले कामरेड और फ्राऊ रहा करते थे।'

'वह फ्राऊ बड़ा दुष्ट था!'

ऐसा प्रतीत होता था कि वह मरने के पश्चात् भी श्रमजीवी संस्था के लिए भयावह था। वह अब भी पुलिसवालों के कानों में हानिकारक शब्द फूँक सकता था।

फिर ये तीनों मौन हो गये। एक स्त्री जो सूरत से देखने में दुराचारिणी और साथ ही भीरु स्वभाव की मालूम होती थी—किन्तु यह भीरुता उसमें पड़ोसियों के भय से आ गई थी—अन्दर आई और गृहस्वामिनी से जो मछली तलने के लिए कढ़ाई साफ कर रही थी बातचीत करने लगी। सामर ने उसकी बात सुन ली। वह कह रही थी—'खर्चा देनेवाले मेहमानो की आवश्यकता का विज्ञापन निकलवाने के अभिप्राय से मैं कुछ कपड़े गिरवीं रखकर आपसे रुपए लेने आई हूँ। इस विप्लव में मेरे तीन किरायेदार मारे गये हैं।' फिर उसने अपनी बेबसी दिखाने के भाव से कहा—

'उन पर मेरा एक मास का किराया आता था।'

गृहस्वामिनी ने लापरवाही के साथ पूछा—

'क्या वे कुछ कपड़े भी नहीं छोड़ गये?'

उस स्त्री ने उपेक्षा के स्वर में, जिससे उसके दुखी जीवन का

आभास मिलता था, कहा—

'उन सबके पास मिलाकर इतना भी कपड़ा न था जिससे मोमबत्ती की बत्ती भी बन सकती।'

होटल से निकलकर स्टार और विलाकम्पा तो दोनों साथ-साथ एक ओर चले गये और सामर चुपके से फिर रेलवे की ओर लौट गया। वह फिर उसी स्थान पर बैठकर इंजिन आने की प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी देर बाद एक इंजिन आया और बहुत देर तक उसके सम्मुख खड़ा रहा। सामर को मानो अपनी खोई आत्मा मिल गई। अब वह अपनी इस आत्मा को धूम्रपेटिका में रख आया। यह भाप के श्वेत मेघों से, बसन्तकालीन सुखद मेघों से परिपूर्ण थी और उन्हें निश्वास-रूप में बाहर निकाल रही थी। उसने फिर उसी भविष्य का पूर्वदर्शन किया जो पहियों, फलकों और आध्यात्मिक समवृत्तियों से परिस्फुटित होगा। 'तुम्हारे समान परिपूर्ण,' वह बड़बड़ा उठा, 'ऐसा परिपूर्ण भविष्य जो उन मेघों के समान जो तुम भक्षण करते हो सुस्पष्ट और विमल होगा और तुम्हारे फ़ौलाद के तुल्य दृढ़ और गतिशील होगा।'

उसने अपने भावनामय गत जीवन को दुःख के साथ स्मरण किया और वहीं सोने के लिए लेट गया जिससे कि प्रातःकाल जागने पर, जीवन पुनः आरम्भ करने के पूर्व वह इंजिनों को देख सके। उसे यह आशा थी कि उसका यह आगामी जीवन सरल, भावशून्य एवं उद्योगपूर्ण होगा।

मुर्गों की प्रेतक्रिया

सामर के दाहने हाथ की ओर पैसिफ़िको था और बायें हाथ की ओर लास डेलिशियाज़। उसने इन दोनों दूरस्थ रंगशालाओं की बन्द और अन्धकारपूर्ण खिड़कियों की ओर दृष्टिपात करते हुए कहा—

'भद्र नागरिको, शान्तिपूर्वक पड़े सोते रहो जब कि तुम्हारी कोमल आत्माएँ तुम्हारी क़हवे की विशिष्ट कलों में, तुम्हारे समाचार पत्रों में, तुम्हारे पर्दों में और तुम्हारी रमणियों की मन्थर कार्य विमुखता में, जिसको कि तुम सगर्व सच्चरित्रता समझते हो, प्रच्छन्नभाव से घूमा करती हैं। पतिपरायणता! तुम्हारी स्त्रियाँ तुम्हें प्रतिदिन धोखा दिया करती हैं।'

एक नेकर ने, जो कुछ अन्तर पर एक अलगनी पर सूख रहा था, श्न किया—

'वह किसके साथ व्यभिचार करती है ?'

'ईसा के पवित्र हृदय के साथ।'

सामर फिर कहने लगा :—

'सूर्योदय के समय मैं यहाँ इतनी दूर बैठा हुआ हूँ। पुलिस मेरे पीछे लगी हुई है। तुम्हारी इस पुलिस के होते हुए भी मैं यहाँ तुम्हारे इतने समीप बैठा हूँ। पुलिस में कल्पना शक्ति का अभाव होने के कारण वह मुझे पकड़ने में सफल नहीं होगी। भद्र नागरिको, हममें और तुममें बहुत बड़ा अन्तर है। हम पैतृक विचारों और मनोवृत्तियों से अनभिज्ञ रहकर विचार करते हैं, और भावों का रस लेते हैं। फिर भी हमारे हृदयों में समस्त पूर्वकालीन दासों की क्रोधाग्नि प्रज्वलित है। हमारा शून्य से उद्गम हुआ है। समय की अनुभूति से जो कि एक निकृष्ट राजनीतिक भाव है, हम सदैव दूर रहते हैं। हम प्रत्येक वस्तु की सृष्टि और आविष्कार करते हैं। हम अपने प्रथम दृष्टिपात तथा प्रथम पदार्पण के साथ ही अपने चारों ओर एक नवीन संसार की सृष्टि करते हैं और उसपर अपने संकल्प की मुहर लगा देते हैं। हम सृष्टि हैं, प्रगति हैं, भविष्य की पैनी धार हैं। तुम प्रतिच्छाया हो, प्रसाद हो, अधःपतन और मृत्यु हो। हमारा तुम्हारा साथ कैसा! हमने तुम्हारे पूर्वजों से कुछ भी नहीं लिया है।'

उस सूखते हुए नेकर ने पूछा—

'किन्तु वह आत्मभाव कहाँ से आया? क्या वह भी स्वतः उत्पन्न हो गया? कृपया इस प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर दीजिये।'

'वाह! वह विभिन्न कारणों के मिलने से उत्पन्न हुआ है। बुद्धि से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। यह अंश बूर्ज्वा अवश्य है, क्योंकि तुमने अन्तःकरण की कल्पना से सारे संसार को विषाक्त बना दिया है। किन्तु हममें से बहुतों में यह आत्मभाव सोया हुआ है।'

'क्या संस्कृति द्वारा वह जाग नहीं उठता?'

'हाँ, जाग उठता है।'

'संस्कृति एक मात्र तुम्हारी ही है, सर्वथा बूर्ज्वा है।'

'हाँ, निस्सन्देह।'

'और प्रेम? क्या प्रेम तुम्हारे आत्मभाव को सचेत नहीं कर देता?'

'हाँ, सचेत करता है। किन्तु जब तुम्हारी यह संस्कृति और प्रेम हमें दूषित करते हैं और हमारे आत्मभाव को जाग्रत करते हैं तो हम खतरे को जानकर उससे बचने का प्रयत्न करते हैं।'

'खतरा कैसा?'

'तुम लोग उसे जान ही नहीं पाते। तुम्हारी आत्मा इतनी निर्बल हो गई है कि जब कोई संकटावस्था उपस्थित होती है तो तुम उस विषम भाव को कुमारी मैरी या किसी और ऐसे ही लोकप्रिय भाव में मूर्तिमान कर देते हो। इसके परिणाम-स्वरूप तुम्हें सदा-सर्वदा के लिए शान्ति मिल जाती है। इसके विपरीत यदि हमारी आत्मा सचेत हो उठती है तो वह फिर कभी सो नहीं सकती। वह अनन्त को सजीव मांसपिंड में परिणत करने का उद्योग करती है, इस विशाल, अगोचर प्रकृति और उसके नियमों को, इस ब्रह्मांड और उसके रहस्यमय अभ्यन्तर को सरल सूत्रों में बाँध देने की चिन्ता और आकांक्षा में नित्यनिरन्तर तल्लीन रहा करती है। जब हमारी आत्मा जाग्रत होती है तो उसका प्रथम परिणाम यह होता है कि हम पहले देवताओं को रस्सियों से बाँधकर बनका पेट चीर डालते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे कि बच्चे अपनी गुड़ियों और खिलौनों का पेट चीरकर उसके अन्दर का लकड़ी का बुरादा बाहर निकाल देते हैं। हमारे अभ्यन्तर में ज्ञान संचय करने और प्रभुत्व प्राप्त करने की जो उत्कट लालसा उठती है यह उसी का प्रथमारम्भ होता है। तदनन्तर समस्त रहस्यों को जान लेने में अपनी असमर्थता का अनुभव करके हम निराश हो जाते हैं। उस समय हमें एक निराकार रहस्यमयी सत्ता को पूजने की आवश्यकता

प्रतीत होती है और हमारी इच्छा शक्ति अनन्तता को उपलब्ध करने और उसका भी अतिक्रमण करने को विह्वल हो उठती है। हम समस्त भूतकाल को, सृष्टि आरम्भ और उसके पूर्व की समस्त बातों को जान लेने के लिए लालायित हो जाते हैं।

'तुम लोग भी बड़े अद्भुत जीव हो। इस पथ पर चलने का बुरा परिणाम होगा।'

'हमारा तुम्हारा दोनों का एक ही अन्त होगा—मृत्यु।'

'इसके अतिरिक्त समाप्त हो जाने का कोई और मार्ग भी है?'

'हाँ, है। मरने से पहले हम आत्मा को मार सकते हैं जिसका अर्थ है स्वयं मृत्यु का बध कर देना। बहुत-सी अन्य मूर्खताओं की भाँति मृत्यु भी हमारे मस्तिष्कों में इसीलिए चक्कर लगाती रहती है क्योंकि हमने इस मिथ्या आत्मभाव का आविष्कार किया है।'

'तो फिर आत्मा का संहार किस प्रकार संभव है?'

'प्रत्येक मनुष्य अपनी व्यक्तिगत रीति रखता है। यदि कोई और मार्ग न सूझ पड़े तो गोलियों द्वारा ऐसा किया जा सकता है।'

'आत्मघात द्वारा?'

'यह सबसे कम संतोषजनक विधि है।'

'किन्तु इस दशा में तो आप यह नहीं कह सकते कि हमने मृत्यु पर विजय प्राप्त की है।'

'नहीं, हम यह कहने में समर्थ हैं। आत्मघाती मृत्यु को अपनी इच्छा के अधीन कर लेता है। आत्मघात करना मृत्यु को जीत लेना है। फिर भी आत्मघात आत्मा का छल है। आत्मा कहती है—'यदि तुम मेरा पूर्णाधिपत्य स्वीकार कर लो तो मैं तुम्हें मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेने दूँगी। आत्मा का बादी से फूल जाना आत्मघाती के पतन का कारण होता है। वह विजयी नहीं होता वरन् आत्मा का शिकार होता है।'

'तो फिर आत्मा के संहार का और क्या उपाय हो सकता है ?'

सामर ने अत्यन्त गंभीरता के साथ कहा—

'मैं तो तुम्हें पहले ही बता चुका कि प्रत्येक मनुष्य का अपना उपाय हुआ करता है।'

नेकर बराबर हिलता रहा और कुछ देर मौन रहने के पश्चात् उसने फिर पूछा—

'आत्मा का बध कर देने के उपरांत मनुष्य की क्या गति होती है'

'जब शुक्लपटल शीतल हो गये और बनों तथा सरिताओं से सुशोभित ठोस पृथ्वी निकल आई तो संसार का क्या हुआ ?'

'यह बात भी कृपया आप ही बतला दीजिये। मैंने भूगोल विद्या का अधिक अध्ययन नहीं किया है।'

'शुक्लपटलों के स्वप्न ठोस पृथ्वी में परिणत हो गये। इन्हीं स्वप्नों के कारण जड़ पदार्थों में—संगमर्मर, पहाड़ तथा तीव्र और सुदृढ़ वृहद्-पल के भीतर—एक मूक श्रद्धा का संचार हुआ। इस श्रद्धा के अभ्यंतर में वह स्वप्न विद्यमान रहे जो प्राकृतिक नियमों के रूप में परिणत हो गये। तुम्हारी मूर्खता के विरोध में हम इन नियमों का उपयोग कर सकते हैं। तुम्हारे छिछोरे कानूनों, इन निरर्थक चिथड़ों और पक्षपातपूर्ण अग्रलेखों के विरुद्ध हम उस गुप्त सत्य को अग्रसर कर रहे हैं जिसके द्वारा समस्त ब्रह्मांड चल रहा है। यदि तुम्हारी देखा-देखी हम कभी चपल तथा लघुचित्त बनने की इच्छा से कुछ कह बैठते हैं तो तुम न तो हमारे सरल से सरल शब्दों का अर्थ समझ पाते हो और न उन्हें उच्चारण ही कर पाते हो। सत्य, विशद तथा अन्तिम सत्य, हमारे पास है। हमारी चपलता भी तुम्हारे लिए ज्वालामुखी पहाड़ों और वातचक्र की प्राकृतिक क्रीड़ाओं के समान भयावह और अप्राकृतिक होती है !'

अब भोंपुओं का शब्द सुन पड़ने लगा। अपना सुबह का काम

करने के लिए दो माली अपने गदहों के साथ पुल के बराबर होकर निकले। जिस खिड़की पर वह नेकर सूख रहा था एक स्त्री दिखाई दी। उसने अलगनी खेंच ली और नेकर अन्तर्धान हो गया। अब बेचारा सामर एकाकी हो गया। अब कोई बात तक करनेवाला नहीं रहा। अतः उसने बैठकर एक सिगरेट सुलगाया। सिगरेट जलाते ही उसे भूख मालूम हुई। जेब में एक शिलिंग देखकर उसकी चिन्ता दूर हो गई। इसी मुहल्ले की किसी छोटी-सी सराय में वह जलपान कर लेगा, उसने निश्चय किया। फिर उसने आकाश की ओर दृष्टि उठाई। शनैः-शनैः पौ फट रही थी। कारावंशल के नीचे कुछ कुहरा देख पड़ता था। सूर्य अभी अदृश्य था; किन्तु एक दूरस्थ मेघ प्रदीप्त हो उठा था। पुल के नीचेवाली पटरी पर दो इंजिन शंट कर रहे थे। नीचे अन्धकार होने के कारण धुँआ नीललोहित प्रतीत होता था; किन्तु जब वह क्षितिज से ऊपर उठ आता था तो विमल आकाश में वह धूसरवर्ण का मालूम होने लगता था। दूरस्थ स्टेशन से भौंपू की आवाज़ बराबर सुनाई दे रही थी। रेल के कारखाने अभी नहीं खुले थे। शायद रात को काम करनेवाली टुकड़ी की छुट्टी की यह घोषणा हो। सामर ने चारों ओर दृष्टि डाली, किसी विशेष वस्तु पर नेत्र गड़ाये बिना उसने प्रातःकालीन सुषमा का रसास्वादन किया। मंदप्रभ रंगों को देखा, अस्पष्ट भावों की अनुभूति की। कुसुमित एकेशिया से सिगनल के खंबों की कठोरता को मिलाकर देखा और उस दूरस्थ प्रज्वलित मेघ का निरीक्षण किया। मध्य में जलसिक्त रंजित धूमिला थी, नीचे पृथ्वी-तल पर उसका रंग नीललोहित था और ऊपर आकाश में वह एक धूसरवर्ण मेघ के रूप में छाई हुई थी। उसके ऊपर जो आकाश का निर्मल भाग था उसके ऊपर प्रकाश मालूम होता था। जलसिक्त पृथ्वीतल पर अब भी अन्धकार छ या आ प्रतीत हो रहा था।

स्टेशन के भौंपू की आवाज़ सुनकर अन्य समीपवर्ती तथा दूरस्थ

भौंपू भी बोलने लग गये। इनके तुमुल नाद से क्षितिज विशाल प्रतीत होने लग गया और सामर की भयानक स्थिति भी सरल हो गई। अब यह एकांत उसे शांतिप्रद तथा मधुर प्रतीत हो रहा था। जब से वह नेकर खिड़की के अन्दर चला गया था वह यह अनुभव कर रहा था मानो समस्त संसार में उसके अतिरिक्त और कोई है ही नहीं। उस समय उसको अपने बचपन के एक पेचीदा खेल का स्मरण हो आया जिसमें कि हारनेवाला पीछे से एकाकी रह जाया करता था।

उसका सिगरेट अभी तक समाप्त नहीं हुआ था। आकाश में सहसा एक श्वेतवर्ण तारे को देखकर वह अवाक् रह गया। वह सोचने लगा—इसका रंग नीला क्यों नहीं? बहुत समय पूर्व उसने गेटेकृत 'रंगों का सिद्धान्त' पढ़ा था। उसे उसमें की बहुत-सी बातें स्मरण हो आईं और वह प्रकाशावलोकन में तन्मय हो गया। उसे अप्रत्याशित रूप से स्टार की ध्वनि पीछे से आती हुई सुन पड़ी। वह कह रही थी—

'तुम यह क्या कर रहे हो?'

'तुम स्वयं देख सकती हो। मैं एक तारे को देख रहा हूँ। कैसा प्रिय और मूर्खता का काम है!'

'क्या तुम यहीं सोये थे?'

सामर ने उसके विशद और जलसिक्त नेत्रों को देखकर 'हाँ' सूचक सिर हिला दिया और कहा—'मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि मैड्रिड जाते ही पुलिस मुझे गिरफ़्तार कर लेगी।'

'किन्तु तुम सदैव यहाँ भी तो नहीं रह सकते।' स्टार ने कहा।

'यह तो ठीक है। इसीलिए मुझे अब यह निश्चित करना है कि मैं क्या करूँ।'

स्टार नीली जरसी और पीला साया धारण किये हुए थी। उसकी बग़ल में एक खाली, पट्ठे का जूतों का बक्स था। वह मुर्ग़े के शेष भाग की खोज करने के बाद उसे दफ़न कर देना चाहती थी।

'सारी रात उसी की चिन्ता में नींद नहीं पड़ी।'

उसने सामर की ओर ऐसे भाव से देखा जिससे सामर को ज्ञात हो गया कि स्टार की इस मानसिक व्यथा का कारण वह स्वयं ही था—मुर्ग़ा केवल बहाना मात्र था। और इस भय से कि कहीं वह आत्मघात न कर बैठा हो वह दिन निकलते ही सशीघ्र यहाँ आ पहुँची थी। यह सोचकर वह मुसकरा उंठा। नेकर के साथ बातचीत करते समय के अतिरिक्त आत्मघात का विचार तक उसके मन में न आया था। विवाद के अन्तर्गत भी आत्मघात का कथन केवल एक अवयव के रूप में ही हुआ था। यह सम्भव था कि गत रात को स्टेशन वापस आते समय स्टार ने उसे देख लिया हो। अब वह दोनो मौन थे। कारखानों के भौंपू अब मूक होते जा रहे थे। स्टार ने कहा :—

'सभी लोग काम पर लौटे जा रहे हैं।'

'और तुम ?'

'मैं भी शीघ्रही जाऊँगी।'

स्टार ने बक्स खोलकर खून में सने हुए परों का एक छोटा-सा ढेर दिखाया। उसी समय मुँह में कुछ चीज़ दबाये हुए एक कुत्ता उधर से निकला। स्टार ने बक्स सामर के हाथ में दे दिया और स्वयं थोड़ी-सी पथरियाँ उठाकर कुत्ते के पीछे दौड़ी। कुत्ता मुँह की चीज़ वहीं फेंककर भाग गया। स्टार मुर्ग़ों की टाँग हाथ में लिये लौटी और उसे बक्स में रखकर संतोष के स्वर में कहने लगी :

'अब उसकी सब चीज़ें पूरी हो गईं। क्या तुम इस काम में मेरी सहायता करोगे ?'

तदनन्तर उन दोनों ने पुल के नीचे जाकर एक गड्ढा खोदा। वह अभी इस काम में व्यस्त थे कि वही कुत्ता पुल की चोटी पर दिखाई दिया और प्रतीक्षा के भाव से शान्तिपूर्वक, वहाँ बैठ गया। बक्स को गड्ढे में रखने के पूर्व सामर ने उसे खोला और एक सूखी

हुई डाली से परों को उलटकर देखा।

'हमें प्रार्थना भी करनी चाहिये।' उसने कहा।

किन्तु स्टार नीली पड़ गई और उसने बक्स बन्दकर दिया। सामर भौचक्का-सा होकर उसकी ओर ताकता रह गया। स्टार कुछ कहना चाहती थी किन्तु कुछ कह न सकी। फिर कुतूहलपूर्वक उसने बक्स फिर खोला। परों के नीचे एक लिफ़ाफ़ा था जिसपर स्वयं उसकी हस्तलिपि में अम्पारो ग्रेशिया डेलरेयो लिखा हुआ था। उसने वह लिफ़ाफ़ा खोला। अम्पारो के नाम वह उसका अन्तिम पत्र था जो स्टार को गत चन्द्रवार ही को अम्पारो के पास पहुँचा देना चाहिये था। यह वही पत्र था जो स्टार ने अपने अनाथ हो जाने की प्रथम रात को पढ़ा था और जो उसे अत्यन्त सुन्दर प्रतीत हुआ था।

'तुमने इसको पहुँचाया नहीं?'

स्टार निरुत्तर हो गई। उसके गोल-गोल निर्निमेष नेत्र निराशा से व्याकुल हो उठे। उसके सारे प्राण खिंचकर आँखों में आ गये। उसने पत्र नहीं पहुँचाया था। वह वास्तव में अपराधिनी थी। किन्तु सामर ने कन्धे उचकाकर लिफ़ाफ़े को बक्स की तली में रख दिया और उन दोनों ने मुर्ग़े के साथ उसे भी निःशब्द होकर भूमिस्थ कर दिया। कुत्ता ऊपर से यह सब देख रहा था। सामर ने कुत्ते की सुविधा के विचार से जान-बूझकर गड्ढा कम गहरा खोदा था। स्टार ने इस बात को ताड़कर गड्ढे के ऊपर एक भारी पत्थर रख दिया। कुत्ते ने निराश होकर अपने निचले जबड़े को चाटा और वहाँ से भाग गया।

अपने हाथों से मिट्टी खसाते हुए सामर ने स्टार से पूछा—'क्या तुम्हें यह मुर्ग़ा बहुत अधिक प्रिय था?'

स्टार ने, उसकी ओर से दृष्टि हटाकर, दोनों होंठ चबाते हुए कहा—'बहुत।'

सामर ने हँसकर कहा—

'तब तो तुम अवश्य उसे कभी-कभी 'मेरे प्राण' या 'मेरी आँखों के तारे' कहकर पुकारा करती होओगी। अच्छा बताओ तो सही, तुमने कभी ऐसा किया है या नहीं। जब कोई बहुत अधिक प्रेम किया करता है तो इसी प्रकार के शब्द कहा करता है।'

स्टार ने अपने आपको सम्भालकर उत्तेजित स्वर में कहा—

'इस प्रकार की बातें बूर्ज़्वा कहा करते हैं।'

'और तुम—तुम क्या कहा करती हो?'

स्टार ने साहस करके सामर की ओर देखा और यह उत्तर दिया—

'यह तो मैं नहीं जानती—किन्तु मैं ऐसे शब्द नहीं कहती।'

'फिर भी कुछ न कुछ तो अवश्य कहती ही होगी।'

स्टार ने अस्पष्ट भाव से मुँह ऊपर उठाकर कहा—

'क्या प्रेम को शब्दों में व्यक्त करना आवश्यक है? क्या वह बिना कुछ कहे सुस्पष्ट नहीं होता?'

कुछ देर तक दोनो में से कोई न बोला। तदनंतर सामर ने कहा।

'कैसा सुन्दर प्रभात है—जी चाहता है कि बिना कहीं रुके हुए बराबर आगे बढ़े चले जाएँ। आगे बढ़ते रहना और सदैव नवीन देशों में पहुँचना और नूतन क्षितिज देखना कैसी सुन्दर बात है! प्रभात से परे पहुँच जाना, सूर्य से भी आगे जा पहुँचना और प्रस्तुत घड़ी में सदैव जीवित रहना—कैसा अद्भुत होगा!'

'तो फिर यही कर डालें न?'

'किन्तु ऐसा हो तो नहीं सकता। क्या तुम्हें नहीं मालूम कि पृथ्वी गोल है? इस प्रकार चलते चलते हम अन्त में प्रारम्भ स्थान पर आ पहुँचेंगे।'

स्टार ने हँसकर कहा—

'यह तो बिल्कुल सत्य है! यह एक बाधा है।'

सामर ने सहसा प्रश्न किया—

'तुम हँस क्यों रही हो ?'

स्टार ने चौंककर कहा—

'मैं नहीं जानती,' और फिर गंभीर हो गई।

धुँए और तेल की गंध फैलाती हुई एक ट्रेन ऊपर से निकली। सामर ऊपर चढ़ने लगा और स्टार उसके पीछे हो ली। ऊपर पहुँचकर वे दोनों एक जगह बैठ गये। वह श्वेत तारिका अब भी सुदूर क्षितिज में चमक रही थी। पुल के ऊपर पहुँचकर स्टार पूर्ववत् शांत हो गई। उसके चेहरे पर निर्भयता तथा धृष्ठता का-सा भाव देख पड़ता था। सामर ने कहा—

'तुमने वह पत्र क्यों नहीं पहुँचाया था ? तुमने उसके संबंध में झूठ क्यों बोला ?'

स्टार ने अक्षुब्ध स्वर में कहा—

'मैं तुम्हें यह बात तब बताऊँगी जब तुम मुझे दो बातें बता दोगे। एक बात तो वह है जिसने कई दिन से मुझे परेशान कर रक्खा है। दूसरी बात मेरे मन में जब से मैं यहाँ आई हूँ रह-रहकर उठ रही है।'

'अच्छा, पहले मैं ही तुम्हारी बातों का उत्तर दूँगा। पूछो क्या पूछती हो।'

'दूसरी बात पहले पूछती हूँ। जब मैं आई तो तुम उस तारे की ओर देख रहे थे। उस समय तुम क्या सोच रहे थे ?'

'मैं कुछ भी नहीं सोच रहा था। उस समय मैं भाव-मग्न था। उस भाव को मैं किस प्रकार व्यक्त कर सकता हूँ ?'

'जब तुम निर्निमेष दृष्टि से देखा करते हो, न कुछ कहते हो और न कुछ देखते हो, तो तुम क्या सोचा करते हो ?'

सामर ने हँसकर कहा—

'मैं तुम्हारी यह बात नहीं समझा।'

'किसी-किसी समय तुम आकाश की ओर ताका करते हो! तुम

कोई ऐसी वस्तु देखा करते हो जो किसी और को दिखाई नहीं देती।'

सामर ने फिर हँसकर पूछा—

'तुम्हारे विचार में वह वस्तु क्या है ?'

मेरा विचार है कि तुम सब कुछ कर सकते हो। यदि तुम यह भी इच्छा करो कि पृथ्वी गोल न रहे जिससे तुम सदैव एक नवीन देश में पहुँचते रहो तो तुम्हारी इच्छा मात्र से ऐसा हो सकता है।'

सामर कुछ देर मौन रहने के उपरांत बोला—

'ऐसी बातें तो पुण्यशील स्त्रियाँ परमात्मा के सम्बन्ध में कहा करती हैं।'

स्टार ने सशीघ्र कहा—

'वह कुछ समझकर ही तो ऐसी बातें कहती हैं। किसी को अपना ईश्वर समझना कितनी सुन्दर बात है !'

सामर मुस्करा दिया। उसने सस्नेह स्टार की एक लट खेंच ली और कहा—

'तुम्हारी इस बुद्धि को धन्य हैं !'

किन्तु उसने मन-ही-मन कहा—

'इसके अभ्यंतर में आत्मभाव का जन्म हुआ है। यह एक नई बात है। इसी कारण इसके उरोज भी दो बसन्तऋतुओं के समान गोल गोल और उन्नत प्रतीत हो रहे हैं।'

उसने हँसकर अपने प्रश्न को बिना पूछे ही छोड़ दिया। तदनंतर वह उठे और पीछे की ओर चलने लगे। आज भी वैसी ही सुखद प्रभात बेला थी जैसी कि उस दिन मैंज़ावारीज़में स्नान करते समय थी। सहसा उषादेवी गा उठी—

सरिता-सुरभित विमल व्योम में,
बसन्त-सेवित समीरण में,
आकाश मार्ग से वह हँसता हुआ आया,

और उसी मार्ग से गाता हुआ अन्तर्धान हो गया।

उस मधुर प्रेम को हम किस नाम से पुकारें ?

इस समय स्टार की दशा अनिर्वचनीय थी। सामर की उपस्थिति को भुलाकर वह अत्यन्त मन्द कण्ठस्वर में उस प्रेम पत्र की इन पंक्तियों को दुहरा रही : 'जिस जीवन को तुम जानती तक नहीं, मैं तुम्हें वही जीवन प्रदान करना चाहता हूँ और मैं उसको प्रकाश और शान्ति से भर देना चाहता हूँ।' वह पहले इस बात का अर्थ नहीं समझती थी। तत्पश्चात् उसे एक और वाक्य स्मरण हो आया—'हमारे सदृश कुछ मनुष्य ऐसे भी होते हैं जिनके अन्तस्तल में थोड़ा बहुत सूर्यांश अवशेष रहता है।' नगर के निकट पहुँचने पर शहर का शोर ज़्यादा ज़ोर से सुनाई देने लगा। काम की खोज में कारखानों के चारों ओर मज़दूरों का ताँता लगा हुआ था। जीवन उत्पादन के मौलिक तथा उर्वर भूमितल पर चढ़ रहा था। पृथक् होने के पूर्व स्टार ने प्रश्न किया—

'क्या यह सच है कि हमारा हृदयस्थ सूर्य कभी विषाक्त भी हो जाता है ?'

'तुम इस बात को समझती हो ?' सामर ने पूछा।

तदनन्तर उसके मुख पर नयन गड़ाकर सामर ने ऐसी निर्निमेष दृष्टि से देखा कि वह बेचारी सकपकाकर हँस पड़ी और उसके कपोलों पर वही सुपरिचित गड्ढे दिखाई पड़ने लगे।

सातवाँ रविवार

केवल भविष्य में

क्रान्ति अमर है

मैं फिर उसी दुकान पर काम करने लगा हूँ। मेरे सुपुर्द दो काम हैं—प्रतिदिन हर जगह वस्तुओं की एक निर्दिष्ट संख्या भेज देना और बूर्ज्वा घरानों की माँगें पूरी करना। हमारे जितने भी समाचार-पत्र प्रान्तों में निकल सके हैं मैंने उन सबकी प्रतियाँ इकट्ठी की हैं। मुझे ज्ञात होता है कि हमारी संस्था का नाड़ी-स्पन्दन इस समय मन्द पड़ गया है; किन्तु वह कुछ ही समय पश्चात् पहले से अधिक उग्र हो उठेगा। स्टार अब मेरी हो चुकी है और कुछ ही दिनों बाद हम एक साथ रहने लग जाएँगे। हम लोगों ने यह बात चची आइज़ाबेला से भी कह दी है। स्टार ने आज लम्बे मोज़े पहने हैं। वह अपनी फैक्टरी की प्रतिनिधि मनोनीत की जानेवाली है; किन्तु यह तो विषय ही दूसरा है। मैं समझता था कि वह सामर के अतिरिक्त किसी को

नहीं हो सकती। किन्तु उसने स्वयं मुझसे कहा है कि सामर इस विप्लव में मर चुका है, यद्यपि वह अब भी अपने पैरों पर खड़ा होकर इधर-उधर आता-जाता प्रतीत होता है। गत रात को जब हम दोनों सामर से बिदा हुए तो स्टार ने मुझे यह बात हृदयङ्गम करा दी। आज प्रातःकाल हम देहात की ओर निकल गये और मैनजानारीज़ बन की सुखद छाया में विश्राम करने बैठ गये। उस समय वहाँ आस-पास कोई आदमी न था। वह एक पूरी नवयौवना स्त्री की तरह सुन्दर और गंभीर हो गई। उसको यह जानकर कि मैं—वह पुरुष जो उसका जीवन-सहचर बननेवाला है—ग्रूपकमेटी का सदस्य चुना जानेवाला हूँ, बहुत हर्ष हुआ। सिंडीकेटों के फिर से खुल जाने पर जब मेरा नाम स्थानीय परिषद्—या शायद माण्डलिक परिषद् की भी सदस्यता के लिए रक्खा जायगा तो उसे और भी अधिक आश्चर्य होगा। इसके अतिरिक्त एक और हर्ष की बात है। मेरे मालिक ने मुझे तरक्की देने का विचार प्रकट किया है। उसका वैलेकाज़ में—उसी मुहल्ले में जहाँ कि स्टार रहती है—एक शाखा खोलने का इरादा है। मेरे खयाल में वह मुझे इस शाखा का मैनेजर बनाना चाहता है। पैसे अधिक मिलेंगे तो परिश्रम भी अधिक करना होगा। स्वभावतः इस बात ने हमारी समस्याओं को भी सरल बना दिया है। आज जब हम देहात में यह बातें कर रहे थे तो इनका हम दोनों पर काफ़ी अच्छा प्रभाव हुआ। स्टार ने कहा कि उसे 'दादी' से फिर बातचीत करनी पड़ेगी। तदनंतर हम दोनो ने उससे वार्तालाप किया। वह शुरू से ही मेरे साथ बड़ी अच्छी तरह पेश आई।

'यह तो सब कुछ मुझे ठीक मालूम होता है, किन्तु मैं यहाँ बच्चों का बखेड़ा नहीं चाहती।'

मुझ जैसे आदमी को जो कि अत्यन्त विचारपूर्वक सन्तानोत्पत्ति का पक्षपाती हो और बूर्ज्वा लोगों के लिए अधिक संख्या में दास पैदा करने

का विरोधी हो, यह नसीहत देना कैसा हास्यास्पद था! बाद में स्टार ने मुझे बताया कि दादी पर-पोते, पर-पोतियों के जन्म के विरुद्ध थी। वह दादी बनने से ही सन्तुष्ट हो चुकी थी, परदादी बनना नहीं चाहती थी। मेरा विचार है कि सामर अब भी स्टार की फ़िक्र में है, यद्यपि स्टार इसका निषेध करती है। बन में सामर की मृत्यु का गीत गाकर उसने मेरे हृदय को पीड़ा पहुँचाई थी। यद्यपि मैं इस बात को पूर्णतः समझ नहीं पाया हूँ, फिर भी मैं इससे ऊब उठा हूँ। वह कहती है कि सामर अब किसी स्त्री को यथार्थ रूप से प्रेम करने में असमर्थ है। वह अब प्रेम, हर्ष अथवा विषाद के भाव को अनुभव ही नहीं कर सकता। सारांश यह कि वह अब एक यंत्रमात्र है। कदाचित् स्त्रियाँ उसके पीछे दौड़ेंगी, उसको अपना लेने के लिए प्रयत्न करेंगी, किन्तु वह स्वयं किसी भी स्त्री को प्राप्त करने की इच्छा न करेगा।

तत्पश्चात् मैंने स्टार से कहाः—

'तुम्हें यह सब बातें किस प्रकार ज्ञात हो गईं?'

लम्बे मोज़े पहने और अपनी फैक्टरी की प्रतिनिधि मनोनीत हो जाने से अब स्टार बड़ी जानपाण्डे-सी मालूम होती है। उसने पूर्ण विश्वास के स्वर में उत्तर दिया—

'क्या तुम्हें मेरे कहने का विश्वास नहीं है?'

वह सहसा अतिगंभीर हो उठी। उसके नेत्रों में रहस्य की छटा दिखाई दी, वह एकाकी भाव से मौन होकर अलग-अलग-सी बैठी रही मानो मेरी उपस्थिति उसके मार्ग में कोई बाधा हो! इस बड़प्पन के व्यवहार को मैं कब बरदाश्त कर सकता था? अतः मैंने उत्तेजित स्वर में कहा—

'तुम्हारा विचार है कि तुम बहुत कुछ जानती हो!'

वह एक गहरी निश्श्वास छोड़कर एक पेड़ के समीपवाले पानी से भरे हुए छोटे-से गड्ढे पर नेत्र गड़ाकर देखने लगी। सूखे हुए पत्तों

के मध्य में एक टिड्ढा डूबा जा रहा था। वह दौड़कर उसे जल से निकाल लाई। फिर उसने सप्रेम उसकी टाँगों पर खड़ा कर दिया और भयभीत करके चलने को विवश करने के अभिप्राय से उसने ताली बजाई। किन्तु जब इतने पर भी वह मूढ़वत् तैरने की चेष्टा करता रहा तो उसने उसे हलके से आगे ढकेल दिया। जब वह आगे चल पड़ा तो वह लौटकर मेरे समीप फिर आ बैठी। मैं बराबर उसकी ओर देखता रहा। अब चूँकि हमें साथ रहना है, उसके स्वभाव को समझने की चेष्टा करना मेरा कर्तव्य है।

'सामर की बूर्ज्वा प्रेमिका ने तुम्हारे रिवालवर से आत्मघात किया—यह बात किस प्रकार सम्भव हुई?'

उसका मुख आज पहली बार आरक्त हो उठा। फिर वह किंचित् कठोर भाव से हँसने लगी।

'इस सम्बन्ध में तुम्हारा विचार क्या है?' उसने पूछा।

'मेरा विचार? कुछ भी नहीं। मैं तो घटना का यथार्थ रूप जानना चाहता हूँ।'

तदनन्तर स्टार एक मिनट के लिए दूसरी ओर देखती रही।

'सच्ची बात तो यह है,' उसने कहा—'मैं अपना रिवालवर उसके यहाँ भूल आई और उसने उसके द्वारा आत्मघात कर लिया।'

'परन्तु क्या तुम नहीं जानती कि सामर के साथ उसका सम्बन्ध टूट चुका था?'

'हाँ, जानती क्यों नहीं थी।'

'तब फिर तुम उसके यहाँ क्यों गईं?'

उसने कन्धे उचका दिये। उसका मुख फिर लाल हो गया।

'जब मुझे यह बात मालूम हो गई तो मेरे मन में यह इच्छा उत्पन्न हुई कि चलकर उसका मुख देख आऊँ।'

'तुम तो अपने रिवालवर को सदैव रिक्त रखा करती थीं और

तुम्हारे पास तो कारतूस भी न थे।'

'मेरे पास एक कारतूस था। वही एक जो तुमने उस दिन भोजन करते समय दिया था।'

'फिर तुमने उसी दिन क्यों उसे रिवालवर में भर दिया?'

इस पर वह अवाक् रह गई। उसने आँखें फाड़कर सशीघ्र कहा—

'यह एक दैवयोग मात्र था!'

दैवयोग की ऐसी-तैसी। वह झूठ बोल रही थी। मैं बराबर उसकी ओर घूरता रहा।

तब वह कहने लगी—

'तो तुम्हारे विचार में मैंने ही उसकी हत्या की है?'

'नहीं तो। भला तुम उसे क्यों मारतीं?'

'ठीक है—मैं भला उसे क्यों मारती?'

उसने एक गहरी श्वास ली। फिर जिस प्रकार कि नाटक में पर्दा बदलनेवाला पर्दा बदलकर रंगभूमि से पूर्वदृश्य का निशान तक मिटा देता है, वह हठात् मुझे ज़ोर से चुंबन करके हँसती हुई दूर भाग गई। मैं उसके पीछे दौड़ा। एक वृक्ष के पीछे पकड़कर मैंने उसके अगणित चुंबन लिये। फिर ऐसा प्रतीत होने लगा मानो हम दोनों बारह वर्षों से एक ही कमरे में रहते रहे हैं। मैंने मुँह से कुछ नहीं कहा किन्तु जिस उत्सुकता के भाव से मैंने उसे अपने बाहुपाश में जकड़ा था उससे उसे सुस्पष्ट ज्ञात हो गया था कि मैं उसे कितना प्यार करता हूँ। अब हम साथ रहने के लिए अति व्यग्र हैं। मेरा विचार है कि हम सचमुच कल ही से इस नये जीवन का आरम्भ कर देंगे। विप्लव के पश्चात् मनुष्य की सुख-लालसा उग्र हो जाया करती है। कमेटियों और सिंडीकेटों में कितने ही स्थान रिक्त हो गये हैं। यद्यपि हम उन्हें भूले हुए-से प्रतीत हो रहे हैं फिर भी उनका कुछ न कुछ प्रभाव होता ही है। स्टार के साथ रहने की बात या किसी और जीवन-सहचरी को

खोजने का विचार पूर्वस्थिति में मेरे मन में कभी आता ही नहीं। निस्सन्देह स्टार का भी यही हाल होगा। मैं सामर से भेंट करना चाहता हूँ। वह एक सहृदय कामरेड है। उसे यह जानकर कि अब स्टार सुरक्षित है, हर्ष होगा। मेरा यह भ्रम कि सामर और स्टार एक दूसरे को चाहते हैं अब दूर हो गया है। स्टार ने अपने मुख से इसका निषेध कर दिया है। अतएव इस सम्बन्ध में और कुछ कहना व्यर्थ है।

मृत कामरेडों की जगह नये सदस्य वस्तुतः कल ही चुने जायँगे। कैटेलोनियावाले अपने रिक्त स्थानों की पूर्ति का प्रबन्ध स्वयं कर लेंगे। हमारे आदमी एण्डालूशिया तथा एक्सट्रीयाड्यूरा जाकर अपना प्रभाव डालेंगे। इस समय सरकार ने हमें परास्त कर दिया है, किन्तु दो-चार महीनों के भीतर ही शहीदों का खून रंग लायगा। हमारी केन्द्रीय परिषद् की शक्ति दुगनी हो जायगी। जो इलाक़े अभी तक नरम नीति के हामी थे, वह भी प्रभावित हो उठेंगे। हमारी संस्था की सबसे बड़ी खूबी यही है कि वह कभी जीती नहीं जा सकती। जितना अधिक हमारा रक्त बहाया जाता है उतनी ही अधिक हमारी शक्ति बढ़ती जाती है। उनका काम है हम पर अत्याचार करना और हमारा काम है नया सैन्यदल तैयार करना। यही हमारी शक्ति का रहस्य है। सरकार के लिए एक बार परास्त होकर फिर सिर उठाना असंभव है और हम जितनी बार पराभूत होते हैं, मज़दूरों के उतने ही अधिक समूह हमारे पक्ष में आ मिलते हैं। उनके हृदयों में भी निषेध की आग धधक उठती है और वे इस बात को भलीभाँति जानते हैं कि हममें मिले बिना निषेध कर सकना असम्भव है। स्थानीय समिति अपनी सभाएँ जेल में किया करेगी। हमारी गुप्त समितियों पर आँच नहीं आने पाई है। एक पक्ष में सरकार को लाचार होकर हमारी सिंडीकेटों को फिर से खोल देना पड़ेगा और हमारे बन्दी भ्राताओं को उन्मुक्त कर देना होगा,

अन्यथा फिर विप्लव उठ खड़ा होगा। इस विप्लव को रोकने का सरकार के पास और कोई दूसरा उपाय है ही नहीं। मेरी राय में तो हम लोगों को आज ही रात को गृह-मन्त्री से मिलना चाहिये। वह एक निर्बल व्यक्ति है। वह जितना सरकार से डरता है उतना ही हम लोगों से भय खाता है। फिर भी विप्लव के उपरांत इतने शीघ्र इन लोगों से भेंट करना खतरनाक ज़रूर है। मैं एक बार इस बात का अनुभव कर चुका हूँ। एक वर्ष से कुछ कम समय हुआ होगा कि हम सार्वजनिक-रक्षा-विभाग के अध्यक्ष से मिलने गये थे। उसने हमें बात तक नहीं करने दी, उलटा हमारे मुँह पर थूका, किन्तु मैं भी मेज़ पर इतने ज़ोर से मुक्के मारता रहा कि दवातें तक परस्पर टकराने लगीं। तत्पश्चात् मैंने उससे कहा—

'आपकी बातें सुनने के लिए नहीं वरन् अपनी बातें सुनाने के लिए हम लोग यहाँ आये हैं!'

इस पर वह झल्लाकर कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और कहने लगा—

'मैं आप लोगों को यहाँ से सही-सलामती के साथ चले जाने के लिए एक घण्टे का समय देता हूँ। इसके बाद मैं आप लोगों को गिरफ़्तार करा लूँगा। अपने आपको पकड़ा देने का जो यह सुअवसर आप लोगों ने मुझे प्रदान किया है, मेरी सज्जनता उससे अनुचित लाभ उठाने के मार्ग में बाधक है। अब आप जो चाहें सो करें।'

हम सब बाहर निकल आये और हममें से हर एक ने अपनी-अपनी राह ली। जिस काम को करने के लिए दस मिनट बहुत अधिक थे उसी काम के लिए उस मूर्ख ने हमें एक घण्टे का समय दिया था! परिणाम यह हुआ कि हम में से एक भी पकड़ाई में न आया। फिर भी हमारा कर्त्तव्य है कि हम उनके अत्याचारों का निषेध करें और अपने प्रार्थनापत्र उनके सम्मुख रखें। यह बड़ी लज्जा की बात

है कि हमारे केन्द्र अभी तक बन्द हैं, हमारे समाचारपत्रों पर प्रतिबंध हैं और हमारे भाई जेल में पड़े सड़ रहे हैं। ऐसा सभ्य देश कौन-सा है जहाँ समाज-सुधार की इच्छामात्र के अपराध में मज़दूरों के साथ इतना कठोर व्यवहार किया जाता है ? और यह पलायन का नियम ? यह क्या बला है ? किन्तु गृह-मन्त्री से ये बातें कहना व्यर्थ होगा। वह स्वभावतः हमारे कहने पर अधिक ध्यान न देगा। इस विषय की चर्चा कामरेड मण्डली में छेड़ी जाएगी। यद्यपि लोग कहा करते हैं कि वह एक सदय मनुष्य है फिर भी वह बेचारा बूर्ज्वों का नौकर है। उनकी इच्छा के विरुद्ध कोई काम वह किस प्रकार कर सकता है। कदाचित् हृदय से वह भी अराजकवादी हो। देखने में वह बड़ा दुबला-पतला मालूम होता है मानो उसे पेटभर खाना भी न मिलता हो। सम्भवतः उसने बड़ी मुसीबत से दिन काटे हैं और अब रुपये के लोभ से उसने सरकार के हाथ अपनी आत्मा बेच डाली है।

मैं अपने मकान में बैठा हुआ असबाब बाँध रहा हूँ। कैलेंडर मेज़ पर रक्खा हुआ है। यद्यपि वह श्वेत उपकेशवाला चित्र मुझे बुरा मालूम होता है तो भी मैं इस कैलेंडर को स्टार के घर ले जाने का विचार कर रहा हूँ। जब मैं अपने सब कपड़े इकट्ठे कर चुका तो सामर ने प्रवेश किया। सिर हिलाकर अभिनन्दन करने के उपरान्त वह खाट पर बैठ गया। ट्रंक में रखने के लिए मैंने घोषणा-पत्रों का एक बण्डल बना लिया था। वह उसी को उलट-पुलटकर देखने लगा। इस समय वह कैलेंडर मेरे हाथ में था। मैं दुविधा में पड़ा हुआ था। उस चित्र के प्रति अपना भाव जब मैंने उस पर प्रकट किया तो वह तत्क्षण बोल उठा :—

'यह दो स्त्रियाँ थोड़े ही हैं। इनमें एक पुरुष है और एक स्त्री!'

'तो यह लम्बी शिखावाला मर्द है ?'

'जी हाँ।'

मैं इतने ज़ोर से हँसा कि पेट में बल पड़ गये। मैंने दोनों हाथों से पेट पकड़ लिया।

'इस प्रकार के वस्त्र किस समय पहने जाते थे?'

'दो सौ वर्ष पूर्व।'

नीच दम्भी! सच्ची बात तो यह है कि मेरे हृदय के ऊपर से एक बोझ-सा हट गया। जभी मैं कैलेंडर को ट्रंक में रखने लगा तो उसने पूछा—

'आज कौन-सा रविवार है?'

मैं उसे यह बात पहले ही बता चुका था, किन्तु स्पष्टतः वह उसे भूल गया था।

'छठा।' मैंने उत्तर दिया।

एक ठण्डी साँस भरकर वह बिस्तर पर पड़ रहा। आधे घण्टे तो वह यूंही चुप पड़ा रहा। उसके नेत्र बन्द थे। तदनन्तर वह कुछ बड़बड़ाने लगा। मैंने पूछा—

'क्या कह रहे हो?'

'कुछ नहीं।'

'बिलकुल झूठ। तुम कुछ कह अवश्य रहे थे।'

'कुछ भी नहीं। मैं इसी स्थान में इसी प्रकार सातवें रविवार, विश्रान्ति के रविवार की प्रतीक्षा करना चाहता हूँ।'

'क्रान्ति के विजय-दिवस की?'

'हाँ।'

फिर हम दोनों मौन हो गये। मैं ट्रंक बन्द कर चुका था। सामर ने कहा—

'शीघ्र से शीघ्र हमें एक जातीय घोषणा-पत्र निकालना चाहिये। हमें अपनी इस असफलता से अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिये। हमें इस प्रकार ऊपर उठ जाना चाहिये मानो वह कोई कमानीदार

तख्ता है।'

इतने में बाहर घण्टी बजी। सामर ने चौंककर पूछा--

'क्या यह द्वार पर की घण्टी बजी?'

मेरे 'हाँ' कहते ही वह उठ खड़ा हुआ।

'ट्रंक को छिपा दो।' उसने शासन के स्वर में कहा।

हम दोनों ने मिलकर ट्रंक को बिस्तर के नीचे छिपा दिया। वह कहने लगा--

'पकड़े जाने के भय से मैं गत रात को घर नहीं गया। जब मैं यहाँ आ रहा था तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो कोई मेरा पीछा कर रहा है।'

उसकी बात ठीक थी। द्वार खटखटाये बिना ही मेरे मकान में दो एजेन्ट घुस आये। उन्होंने बड़ी शीघ्रता के साथ चारों ओर दृष्टिपात किया। वह यह समझ गये कि कोई व्यक्ति यहाँ से विदा होनेवाला है। उन्होंने कहा--

'ल्यूकस सामर कौन है?'

मेरा मित्र आगे बढ़ गया। उन्होंने उसे पकड़ लिया। उसकी जेबों से काग़ज़ निकालने के पश्चात् उन्होंने उसे हथकड़ियाँ पहना दीं। सामर ने कन्धे उचकाकर मेरी ओर देखते हुए कहा--

'ख़ैर। मैं अब उसकी जेल में प्रतीक्षा करूँगा।'

उसका अभिप्राय सातवें रविवार से था। एक एजेन्ट ने रुककर मेरी ओर देखा।

'क्या तुम मैड्रिड से बाहर जा रहे हो?' उसने पूछा

'नहीं।'

'तो फिर कहाँ जा रहे हो?'

मैंने उसे स्टार के घर का पता बता दिया। मित्रवर सामर ने बड़े आश्चर्य से मेरी ओर देखा किन्तु फ़ौरन सम्भलकर कहा--

'कामरेड, इस सौभाग्य पर मैं तुम्हें बधाई देता हूँ! तुम दोनों सुखी रहो, यही मेरी हार्दिक अभिलाषा है!'

तदनन्तर वह उसे अपने साथ लेकर चले गये।

वह मुझे क्यों छोड़ गये? मुझे भी उसके साथ क्यों नहीं पकड़ लिया? उनके इस प्रमाद से मेरे हृदय में कुछ ठेस-सी लगी। लेकिन मैं इसकी कोई परवा नहीं करता। स्टार के लिए यह अच्छा हुआ। मैं यह पहले ही कह चुका हूँ कि आज से हम दोनों साथ रहा करेंगे। उसी के खयाल से मैं इस बात से प्रसन्न हूँ। एजेन्टों के जाने के कुछ देर पश्चात् मैं खिड़की से बाहर झाँकता हूँ। आज की सन्ध्या ऐसी प्रतीत होती है मानो अभी वृषभ-युद्ध समाप्त हुआ हो या कम-से-कम आग-बुझानेवाली सेना गलियों में घूमती रही हो। अब मैं दुकान जा रहा हूँ। सिंडीकेटें तो आजकल बन्द हैं, अतः वहाँ से सात बजे छुट्टी पाकर मुझे कहाँ चलना चाहिये। मुझे मजबूरन स्टार के पास ही ठहरना होगा। अच्छा यही सही। मैं ऐसा ही करूँगा।

अच्छा, सलाम! अब मैं विदा होता हूँ। यद्यपि विप्लव असफल रहा है, तो भी मेरे अंतस्तल की गहराइयों में यह विलक्षण भाव रह-रह कर क्यों उठ रहा है कि हमारी विजय हुई है। आज कई बार मुझे ऐसा प्रतीत हुआ है कि क्रांति परिपूर्ण हो चुकी है।

सामर जेल में

उपसंहार

मृत्यु ही एक मात्र स्वतंत्रता है

सामर ने जेल में एक विचित्र स्वप्न देखा। जब वह प्रातःकाल सोकर उठा तो उसके हृदय में उसे लिख डालने की इच्छा उत्पन्न हुई। उसके आधार पर एक काव्य या एक घोर यथार्थवादी फ़िल्म का चित्र-लेख लिखा जा सकता था। स्वप्न में एक नगर का दृश्य था। वह नगर मधुकोष के समान कलरवपूर्ण था। सारे शहर में कारखाने ही कारखाने थे। वहाँ का वायुमंडल ऐसा विशुद्ध और निर्मल था जैसा कि हमारे यहाँ तूफान के पश्चात् हुआ करता है। मकानों की ऊपर-वाली खिड़कियों पर लाल ध्वजाएँ फहरा रही थीं। सामर यह नहीं जान सका कि आया वह कोई राजनीतिक महत्त्व रखती थीं या वह वस्त्र मात्र थीं जिनसे कि मिस्तरी गीले प्लास्टर को ढँक दिया करते हैं। यह एक निर्विवाद सत्य है कि किसी मकान का पूरा हो जाना राज-

नैतिक शक्ति तथा महत्त्व रखता है—सामर तो इससे अधिक राजनैतिक महत्त्व से भरी हुई कोई वस्तु सोच ही नहीं सकता था—यह एक प्रकार की अव्यक्तिगत सिद्धि है जिसकी प्रेरणा-शक्ति सामूहिक उत्साह है। किंतु इस संबंध में उत्साह का उद्गम स्थान न तो भाव-विकार होता है और न आत्मा ही—सजीव उद्योगशीलता में जो आनंद है वही उसका एक मात्र कारण होता है। वास्तविक बात यह थी कि सामर ने उस स्वप्न नगर में जो लाल वस्त्र देखे थे वह 'लाल' ध्वजाएँ ही थीं जिनमें से कुछ आँधी में फट गई थीं और सूर्यताप से कुछ का रंग फीका पड़ गया था। वहाँ दिन में भी पूर्णचंद्र चमक रहा था और विलाकम्पा के कैलेंडर के समान उस पर लाल अंक पड़े हुए थे। नगर के मध्य में एक विशाल मार्ग था जिस पर पत्थर की जगह काँच लगा हुआ था। लम्बाई में वह अन्तरहित प्रतीत होता था। उसके मध्य भाग में राजधानीय रेलगाड़ियाँ इधर से उधर जाती हुई दृष्टिगोचर हो रही थीं। उनमें बड़ी तड़क-भड़क के साथ छछूँदरें और बगुले बैठे हुए थे। सड़क की एक ओर नग्न-स्त्रियों का जुलूस चल रहा था और दूसरी ओर नग्न-पुरुषों का। इनमें प्रत्येक वर्ण और अवस्था के स्त्री-पुरुष थे। यद्यपि वह सब नग्न थे तो भी उनके सुन्दर हाथों तथा अच्छी तरह कढ़े हुए बालों से यह स्पष्ट ज्ञात हो रहा था कि यह लोग बूर्ज्वा हैं। सड़क का कहीं अन्त नहीं मालूम होता था। आगे जाकर यह दोनों पंक्तियाँ मिलती हुई-सी प्रतीत होती थीं। पुरुष समुदाय प्रेम के गीत गा रहा था और स्त्रियाँ स्वाधीनता के गीत गा रही थीं। कारखानों में मज़दूर अपना पसीना और खून एक कर रहे थे।

रिकार्ट ने उनके समीप जाकर पुकारा :

'अराजकवादी मित्रगण !'

किन्तु वह लोग बराबर गाते रहे। तदनन्तर रिकार्ट ने खाने में से जिलेट उस्तरे का एक फल बाहर निकाला और उसे हथेली पर तेज़

किया। फिर वह दाहिने हाथ की ओर सबसे पास की स्त्री के पास गया और उस फल से उसके एक स्तन का गुलाबी अग्रभाग काट लिया। वह स्त्री हाथ उठाकर चीख उठी:—

'हाय, मैं मरी!'

रिकार्ट फिर दूसरी ओर गया और सबसे समीपवर्ती पुरुष के पीछे जाकर उसके नितम्बों के मध्य में ज़ोर से ठोकर मारी। वह पुरुष चिल्ला उठा :—

'कैसे बदतमीज़ हो! मैं शहीद हो गया।'

तदनन्तर सभी स्त्री-पुरुषों का रिकार्ट ने यही हाल किया। अन्त में जहाँ कि वह दोनों पंक्तियाँ मिलती हुई प्रतीत होती थीं, वहाँ पहुँचकर रिकार्ट अदृश्य हो गया। इसके बाद वहाँ एक बकरा दिखाई दिया। वह सड़क पर इधर से उधर जाता था। प्रत्येक पुरुष के सामने रुककर वह कराहता था और प्रत्येक स्त्री के सामने खड़ा होकर ज़ोर से डकराता जाता था। रिकार्ट ने लौटकर इन लोगों की ओर देखते हुए कहा—

'देखो, यह वैधानिक सुधारवादी हैं!'

इस बात पर उन स्त्री-पुरुषों ने यह घोषणा की :—

'हम लोग प्रेम और स्वतंत्रता के सच्चे पुजारी हैं। हममें से हर एक को एक बिल्ला और पैंशन मिलनी चाहिये।'

कारखानों में मज़दूर अब भी काम कर रहे थे। वहाँ से अब भी मधुकोष जैसा शोर सुनाई आ रहा था। फिर वह बकरा ईसाइयों के खुदा मसीह के रूप में खड़ा हो गया। वह क्रोध में भरा हुआ हर एक को एक शासनपत्र दिखाता जाता था और दिव्य पिता की क़सम खाकर कह रहा था कि वह भूमिकर कदापि नहीं देगा।

यहाँ तक सामर का स्वप्न था। किन्तु वह इसके आगे भी लिखता चला गया क्योंकि प्रातःकालीन बिगुल बजने तक उसे कोई काम ही न था। वह लिखने के आनन्द में मस्त होकर पृष्ठ के बाद पृष्ठ लिखे

चला जाता था। उसके इस लेख में न कोई विचार था न संसक्ति, उसमें उसके कामरेडों के वाक्य थे और ऊल-जलूल भावनाओं की भरमार थी। किन्तु कुछ देर पश्चात् वह एक सम्वाद-सा लिखने लगा।

अनुभूति एक ऐसी विलासिता है जो अन्त में मनुष्य को बड़ी महँगी पड़ती है। समाजों का भी यही हाल हुआ करता है।

उसका आधार समाज है। पशुओं और वृक्षों की रक्षा करना दूसरी ही बात है। मैं यहाँ उन समाजों की बात कह रहा हूँ जिनको कि सभ्यता ने संगठित किया है। वहाँ स्वत्व भी होते हैं और कर्तव्य भी। यान्त्रिक प्रगति भी। रोगों की रोक-थाम और जाति-सम्बर्धन विद्या भी। उदारवाद और मोटरकारें, चक्रगति क्लब और प्रजातन्त्रवादी लाट पादरी भी।

संसार में एक देश विलासी है।

वह देश कौन-सा है?

स्पेन।

उसकी विलासिता क्या है?

'उदारवाद।'

इसके उपरान्त थोड़ा अंश उस विवाद का आता है जो जेल के सहन में उसके और एक साम्यवादी के बीच में हुआ था।

'स्पेन ने अभी अनुभूति का त्याग नहीं किया है। शून्यवाद की तह में भी भावना विद्यमान है। मैं यह नहीं कहता कि यह बात बुरी है या अच्छी। मैं तो केवल यह कहता हूँ कि वहाँ भी भाव मौजूद है।'

'मनोवृत्ति से मनुष्य का सामाजिक अधःपतन हो जाता है।'

'बहुत अच्छा, किन्तु इसका क्या परिणाम होता है।'

'सभ्य समाजों का भी इससे अधः पतन हो जाता है। शून्यवादियों

ने, इच्छा न करते हुए भी क्योंकि उसमें उनके भाव का कोई स्थान नहीं था, डिक्टेटरी स्थापित करा दी। फिर उन्होंने डिक्टेटरी और बादशाही का विनाश किया। प्रत्येक वस्तु के बन्धन से मुक्त हो जाने की भाव विलासिता ही ने न केवल रिपब्लिक को जन्म दिया वरन् अब वह उसका विनाश करना चाहती है और कर भी रही है। रिपब्लिक के विचार में भाव विलासिता ऐसे देश के लिए जहाँ कि परम्परागत ज्ञान बलवान् तथा निर्बल है एक अत्यन्त हानिकारक विलासिता है।'

'किन्तु इससे होता क्या है?'

'वह भी सुन लो। तुम अभी और कुछ सुनना चाहते हो? भाव-विकार व्यक्तियों का नाश कर देता है और जिन जनसमूहों का संगठन भावना के आधार पर होता है उनका भी नाश कर देता है। एक खूनी शाहंशाही तुम्हारा नाश इसलिए नहीं कर सकती क्योंकि वह अपने अत्याचार द्वारा तुम्हारी भावाग्नि पर प्रतिदिन ईंधन डालती रहती है। किन्तु एक प्रशान्त और अक्षुब्ध रिपब्लिक प्रतिदिन तुम्हारी आलस्यपूर्ण और विलासासक्त भावुकता की पोल खोलकर तुम्हारा नाश कर देगी।'

'किन्तु इन सब बातों को मान लेने पर भी क्रांति की कोई हानि नहीं होती। जनसमुदाय अंत में अपना मार्ग पा ही लेगा।'

'निस्सन्देह।'

इस बात पर उस साम्यवादी ने सामर से हाथ मिलाया और वहाँ से चला गया। तत्पश्चात् सामर फिर लिखने लगा। उसका वह लेख संबद्ध कम है किन्तु संभवतः जो कुछ उसके हृदय में और उसके चारों ओर घटित हो रहा था, उसका सच्चा चित्र है।

मुझसे मिलने के लिए न तो स्टार आई और न विलाकम्पा ही आया। विलाकम्पा अज्ञानतः एक काल्पनिक क्रांति के विजयोल्लास से

उन्मत्त हो रहा है। स्टार सरल प्रकृति और स्फटिक समान पारदर्शक है किन्तु कभी-कभी जब स्फटिक पर प्रकाश पड़ता है तो उससे अग्नि निकलने लगती है और कभी वह प्रकाश किरणों को परावर्तित कर देता है, उन्हें एक विंदु पर एकत्र करके आग लगा दिया करता है। मैं अम्पारो की मृत्यु की बात पर अधिक सूक्ष्म दृष्टि इसलिए नहीं डालना चाहता क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि मेरे समस्त संदेहों के पीछे मुझे स्टार की सरल मुखाकृति देख पड़ेगी। अब फिर सर्वत्र काम आरंभ हो गया है। उद्योग में आनंद है। मेरी इच्छा होती है कि मैं इस कर्मरूपी निद्रा में अपने अस्तित्व को सर्वथा निमग्न कर दूँ। जेल में स्वप्न देखे जाते हैं। आत्मा शवालय के लिए है। गलियों में जीवन दृष्टि-गोचर होता है। वह यंत्रवत् और भौतिक है। यदि हम एक यांत्रिक तथा प्राकृतिक धर्म की उपलब्धि कर सकें तो हमारी सारी समस्यायें हल हो सकती हैं क्योंकि प्रस्तुत परिस्थिति में आत्मा मृत्यु का निषेध करने में समर्थ प्रतीत होती है! इस दशा में अधिक से अधिक हम उसे संशयरहित विश्वास दिला सकते हैं और उसे अपने वशीभूत कर सकते हैं। आगे चल कर उसे उस यांत्रिक तथा प्राकृतिक धर्म में प्रवृत्त किया जा सकेगा। उस समय हम उसकी शक्ति का उपयोग कर सकते हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे कि चक्की चलाने में वायु का उपयोग किया जाता है।

अब मैं स्वप्नों का प्रसंग फिर उठाता हूँ क्योंकि जेल स्वप्नों का घर है। मुझे याद पड़ रहा है कि उन नग्न स्त्री-पुरुषों की सेना का एक निरीक्षक मंडल भी था जिसमें लिबर्टो, एलिनियो, हेलियॉस और फ्राउज़ेल थे। आकाश में प्राग्रेसो, जर्मिनल और एस्पार्टको के शिर नक्षत्रों जैसे नहीं प्रतीत होते थे किन्तु वह उल्का जैसे प्रतीत होते थे। उनमें लाल और चमकती हुईं लम्बी पूँछें देख पड़ती थीं। फ्राऊ की छाया ने संक्षोभगर्भित मेघों का सहसा प्रहार किया। कभी वह नीचे

उतरकर सड़क पर खड़ी हुई नग्न मनुष्यों की पंक्तियों के मध्य में चिल्ला उठती थी :

'वह मेला कब होगा ?'

मेरे मन में फिर सब वस्तुओं को अस्त-व्यस्त कर डालने की उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई। मेरे मन में यह बात आई कि पुरुषों को स्त्रियों के सदृश प्रतीत होना चाहिये। उन्हें चेहरे पहनने चाहियें और इस कपट-वेश में घूमते घूमते अपने समस्त नित्यकर्मों को भुला देना चाहिये। फ्राऊ ने रिकार्ट से कहा—

'मेरे पास एक झाड़ू है। मेले के समय तक मैं उसका उपयोग कर सकता हूँ।'

अब सामर ने अपने आपको एक नाली के मुहाने पर पृथ्वी पर बैठा हुआ देखा। उसके पैर मुहाने पर लटके हुए थे। वह सोच रहा था :

'मैं मनुष्यों से घृणा करता हूँ और फिर भी यह सोचता हूँ कि मैं उन्हें सुखी बना सकता हूँ।'

उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके विचार सड़क के इस सिरे से उस सिरे तक लिखे हुए हैं। समस्त नग्न जनसमुदाय चिल्ला उठा :

'बदमाश! तेरी महत्त्वाकांक्षा शैतान के समान है।'

सामर ने देखा कि उसने स्वयं खड़े होकर उन लोगों को ललकार कर कहा:

'मैं तुम सभी को गर्हित समझता हूँ! तुम लोगों में चाहे कोई सुखी हो या सुखहीन—मैं तुम सभी से घृणा करता हूँ। तुम्हारे दृष्टिकोण की निर्बलता के कारण, तुम्हारे मनोविकारों की क्षीणता के कारण, तुम्हारे संदेहों और विश्वासों के कारण मैं तुम सबको नीच तथा कुत्सित समझता हूँ! किन्तु, ओ मूर्खो, मैं तुम सबको सुखी बना सकता था। इतना सुखी जैसा कि कोई और नहीं बना सकता। चौंको मत, मुझे

गालियाँ मत दो। यह स्मरण रक्खो कि ईसा मसीह मेरे ही समान विचार किया करता था। किन्तु उसमें उन्हें स्पष्ट कर देने का साहस नहीं था।'

'उसमें साहस क्यों नहीं था?'

'यह बात बिलकुल सरल है। उसके गुर्दों के अत्यन्त सूक्ष्म मांस-पिंड कर्मशील नहीं थे। इस बात को मुझसे भी ज़्यादा अच्छी तरह एक और व्यक्ति जानता है।' एक धुरन्धर विद्वान् लाटपादरी जिसका नाम उदाहरणार्थ पूज्य पिता ज़फारियस मार्टिनेज़ है।'

इस उदाहरण से नग्न-समुदाय प्रसन्न हो उठा। कारखाने में अब भी काम हो रहा था। इस विषय पर स्त्रियों और पुरुषों ने जो बातें की वह दो सौ भौंपुओं के तुमुल-नाद में कोई सुन नहीं सका। जब भौंपुओं का शोर बन्द हो गया तो ये लोग अन्य विषयों की चर्चा कर रहे थे। जहाँ-तहाँ 'सिंडीकेट' शब्द सुन पड़ रहा था। सिंडीकेटवादी मज़दूर अब कारखानों से बाहर आ रहे थे। वह फिर काम पर लौट जायँगे।

'यह इतनी व्यवस्था के साथ क्या कर रहे हैं।'

'हमारे स्नान के लिए प्रकाश बना रहे हैं।'

'और तुम, तुम काम क्यों नहीं करते?'

'हम लोग प्रेम और स्वतंत्रता के गीत गा रहे हैं।'

इन नग्न स्त्री-पुरुषों को देखते ही मज़दूर फिर कारखानों में जा पहुँचे। इनकी नग्नता इतनी मूर्खता से भरी हुई और घृणास्पद थी कि कुछ मज़दूरों को क़ै हो गई। अब यह मज़दूर ऐसी संलग्नता से काम में जुट पड़े कि उनके काम करने के शोर ने अन्य सब शब्दों को दबा दिया। नग्न स्त्री-पुरुष अब भी कतर-कतर किये जा रहे थे। किन्तु कान में पड़ी आवाज़ सुनाई न देती थी। यद्यपि एक दूसरे के शब्द सुनने के अभिप्राय से इन लोगों ने हाथों को तुरही के समान बनाकर अपने कानों पर रख लिया तो भी शोर के मारे उन्हें कोई शब्द न सुन पड़ा। परिश्रम के तुमुलनाद ने प्रकाश, आकृतियों और शब्दों को अस्पष्ट

बना डाला। आकाश में एक अस्पष्ट धूमिलता-सी छाई हुई प्रतीत होती थी जिसके गर्भ में लाखों कारखाने स्थित थे। समस्त पदार्थ मूक और अदृश्य हो गये। परिश्रम की एक अमूर्त भावना के अतिरिक्त कुछ भी अवशेष नहीं रहा। संक्षोभ ने सकल पदार्थों को नष्ट कर दिया था—यही प्रशांत अमूर्त भावना शेष रह गई थी। सिंडीकेटें इससे पहले भी थीं और अब भी मौजूद हैं।

सामर की कोठरी का द्वार खोला गया था और कुण्डी लगाकर उसे अधखुला छोड़ दिया गया था। इसमें सामर को एक बंडल लिए हुए हाथ दिखाई दिया। सामर ने लेखनी नीचे रखकर कहा—'क्या चाहते हो?' इस पर हाथ व्यग्रता के साथ हिला मानो वह कह रहा हो—जल्दी से आकर यह बंडल ले लीजिये। ऐसा न हो कि कहीं कोई शत्रु देख पाये। सामर ने इस आज्ञा का पालन किया।

'यह किसने भेजा है?'

सामर के इस प्रश्न का उसे कोई उत्तर न मिला। हाथ अदृश्य हो गया और बरामदे में किसी के जाने की आवाज़ सुनाई दी। सामर एक क्षण तक चिन्तामग्न रहा। यह किसी वार्डर के कोट की आस्तीन तो थी नहीं। यह किसी बन्दी ही का काम है। फिर उसने वह बंडल खोल डाला। उसके अन्दर एक रिवालवर और एक पत्र निकला। पत्र के अन्त में हस्ताक्षर के स्थान पर पांच किरणोंवाला भद्दा-सा तारा बना हुआ था। 'यह स्टार की करतूत है।' सामर ने पत्र और रिवालवर दोनों को लक्षित करते हुए कहा। स्टार ने पत्र में लिखा था—तुम्हें तीन अपराधों के लिए दंडित किया गया है। सब मिलाकर तुम्हें पन्द्रह वर्ष तीन दिन का कारावास दंड दिया गया है। इसलिए तुम्हारे लिए जेल से भाग जाना ही सबसे उत्तम उपाय है। अतः मैं तुम्हारी यह सहायता कर रही हूँ।' रिवालवर में केवल एक कारतूस भरा हुआ था। एक और कारतूस काग़ज़ में लिपटा हुआ था। उसने काग़ज़

खोलकर कारतूस निकाला तो उसे उसके ऊपर 'S. G.' स्टार ग्रेशिया के दोनों प्रथमाक्षर खुदे हुए दिखाई दिये। फिर उसने रिवालवर के भीतरवाला कारतूस निकालकर देखा तो उस पर भी वही अक्षर खुदे हुए मिले। वह मुसकराकर उठ खड़ा हुआ। उसने अँगड़ाई लेकर मुसकराते हुए स्वतः कहा—

'छोटी लड़की, तुम मूर्खा नहीं हो। तुमने सोचा था कि अम्पारो की मृत्यु द्वारा तुम मुझे सुखी बना सकोगी। निस्सन्देह तुमने मुझे सुखी बना दिया है।'

तदनन्तर वह ज़ोर से हँस पड़ा।

'इसके बाद तुमने शवालय की घटना का पता लगाया, मेरे नेत्रों में नेत्र डालकर देखा, मेरी बातचीत सुनी—और अब तुम यह चाहती हो कि मैं भी आत्मघात कर डालूँ। इससे तुम्हें सुख मिलेगा। यदि मैं आत्मघात कर लूँ तो कदाचित् तुम भी शवालय में जाकर वैसा ही दृश्य उपस्थित करोगी, है न यही बात ? तत्पश्चात् तुम्हारा फिर से जन्म होगा। फिर तुम आत्मा के बन्धन से मुक्त हो जाओगी। तुम्हारी आत्मा को मैंने मार डाला है और तुमने उसको मेरे अन्दर प्रविष्ट कर दिया है। प्रिय, अब तुम उसी के साथ, इसी दशा में, जीवन-यापन करो। यदि वह रोग के कीट फैला दे तो तुम उसी के साथ मर जाना।'

जेल की कोठरी में जहाँ सीलन की दुर्गंधि आ रही थी और अन्धकार से जी घबराया-सा जाता था, स्टार के इन पैंसिल से लिखे हुए अशुद्ध शब्दों ने सामर को सुगन्धित सरितातट पर ले जाकर खड़ा कर दिया, रेलवे लाइन की उस सुहावनी प्रभात वेला को इस कोठरी में ला उपस्थित किया। यह सब स्मृतियाँ जाग्रत हो उठीं। इन सब में अस्पष्ट प्रेरणाएँ भरी हुई थीं। इन सभी प्रेरणाओं की छाया स्टार में विद्यमान थी। किन्तु अन्य मनुष्यों की छाया के विपरीत यह छाया

श्वेत थी। किन्तु सफेदी भी रहस्यात्मक होती है। लाल मणियों में ही राग भरा हुआ नहीं होता और न केवल कृष्णता में ही विनाश शक्ति हुआ करती है। स्टार के रहस्य खुले हुए थे और स्फटिक की नाईं चमकीले थे। इस छोटी-सी लड़की ने अपने आन्तरिक भाव से प्रेरित होकर यह सब कुछ किया था। उसकी बुद्धि की प्रखरता की यह घटनाएँ एक सजीव प्रमाण थीं। एक संकुल प्रकृति रमणी की प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा एक बच्ची की इच्छा शक्ति के अगाध रहस्य निस्सन्देह अधिक प्रिय प्रतीत होते हैं। सामर ने स्टार के इस अन्तिम संकल्प का हेतु खोजना आरम्भ किया। उसने उन सब घटनाओं पर विचार किया जिनसे उसका और स्टार का सम्बन्ध था। उसकी एक-एक चितवन, एक-एक बात पर ग़ौर किया। उसके मनमें बहुत विचार-चित्र आये—उन सबमें स्टार का मुर्ग़ा भी बारम्बार दृष्टिगोचर होता था।

सामर के सम्पर्क में आकर स्टार को ऐसा प्रतीत हुआ मानो उसकी आत्मा जाग्रत हो रही है। इसी के साथ उसकी कल्पना शक्ति भी बढ़ी और अनन्त को प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा भी उत्पन्न हो गई। सामर ने सोचा : 'मैंने तुम्हारे आभ्यन्तरिक सूर्य को विषाक्त कर दिया है। तुम सोचती हो कि मेरे लिए पृथ्वी अपना आकार बदल देगी और मैं नित्यनिरन्तर घूमता हुआ सदैव नवीन देश देखता रहूँगा। तुम्हारा विश्वास इससे भी अधिक है। तुम यह विश्वास करती हो कि मैं अपनी इच्छा मात्र से यह चमत्कार दिखा सकता हूँ। यह सब तो अकेला परमात्मा ही कर सकता है। ईश्वर की भावना कितनी उपयोगी है--बताओ न। मनोवृत्तियों को आकाशदुर्ग बनाये जाने देना, स्वप्न-साम्राज्य में भावों को बेलगाम छोड़ देना, उसी में अपनी सब अभिलाषाओं को सफल बना लेना, प्रेमोन्मत्त होकर स्वच्छन्द विचरना, यूँही अभीष्ट की प्राप्ति कर लेना--यह सब कैसा सुन्दर है।

इस कल्पित साम्राज्य में परमात्मा को लाकर बिठा देना और उसकी कृपा से समस्त असम्भव बातों को उप्लब्ध करना, कैसा प्रिय मालूम होता है ! तुम भी तो एक ईश्वर चाहती हो ? मुझे छोड़कर, उसकी कहीं और खोज करो। मैं तो किसी बड़े यन्त्र का एक दाँतोंदार पहिया या संयोजक दण्ड ही हो सकता हूँ। मैं इससे अधिक होने की इच्छा भी नहीं करता। क्या यह काफ़ी बड़ी आकांक्षा नहीं है ?'

सामर ने स्टार की आत्मा को दिव्य स्वप्नों से ओतप्रोत कर दिया था। उनके बिना अब स्टार के लिए जीवित रहना असंभव था। सामर ने आत्मा का निषेध कर दिया था, वह उससे सदा के लिए रिक्त हो चुका था, फिर वह उससे यह आशा किस प्रकार रख सकती थी कि वह इस दिशा में उसका उत्साह बढ़ायेगा। अम्पारो के बिना जो दशा सामर की थी स्टार की दशा भी प्रायः वैसी ही थी। स्टार के रहस्य सामर के लिए बिलकुल सरल थे। कारतूस पर स्टार के प्रथमाक्षर देखकर सामर ज़ोर से हँसकर कहने लगा—'तुमने मुर्ग़े का चित्र भी क्यों नहीं बना दिया ?' रिवालवर की चमकदार नाल वसन्तकालीन विद्युत् की तरह बार-बार चमक उठती थी। सामर मन-ही-मन कहने लगा—'छोटी-सी तारिका, तुम चाहती हो कि तुम्हारी आत्मा मेरे साथ मर जाय ! तत्पश्चात् तुम्हारा पुनर्जन्म होगा। १८ वर्ष की आयु में पुनर्जन्म की इच्छा करना कितना शोकावह है ! मेरी नन्ही कामरेड, तुम अपनी दूषित तथा रोगी आत्मा के साथ जीवित रहो और अपनी इस नवीन प्रज्ञा का रसास्वादन करो !'

वह फिर हँसने लगा। खिड़की के पास जाकर उसने सलाखों के मध्य में रिवालवर को उसकी देहली में छिपा दिया। यदि उसकी तलाशी ली गई तो संभवतः इस जगह किसी की दृष्टि न पड़ेगी और न यहाँ कोई चीज़ छिपी होने का किसी को गुमान ही होगा। अपने मस्तिष्क में उसे अब भी उस स्वप्न नगर के दो सौ भौंपुओं का नाद

सुनाई दे रहा था। वह अपने आपको स्वाधीन अनुभव करता हुआ हँस पड़ा। जेल में होते हुए भी स्वतंत्र ! यह कैसी अद्भुत अनुभूति थी। किन्तु इसी समय जेल की गैलरियों में से वास्तविक गुल-गपाड़े की ध्वनि आती हुई प्रतीत हुई। फिर इस कराल ध्वनि से जेल हिल-सी गई। यह शोर-गुल उसके स्वप्न-नगर के कारखानों का नहीं था वरन् जेल की नब्बे बंदी-कोठरियों में से आ रहा था। विद्रोह ! विद्रोह !

सामर हर्ष से मुसकरा उठा। जीवन में फिर ज्वार आया था। उसने मुड़कर रिवालवर उठाया और द्वार को तोड़ने का भरसक प्रयत्न करते हुए वह चीख उठा—

'आओ अब जी तोड़कर स्वतन्त्रता के लिए संग्राम कर डालें !'

किवाड़ों पर वज्र-प्रहार हो रहा था। यह कराल शब्द स्वप्निल भौंपुओं की तुमुलध्वनि के साथ मिल गया। वह उस धूसर धूमिलता में जा मिला जो व्यापारिक सिंडीकेटों के उत्पादक श्रम को चारों ओर से घेरे हुई थी। यही उत्पादक श्रम स्वप्नों का प्रेरक था, यही भविष्य की ओर इंगित करता था। अराजकवादी सिंडीकेटवालों के इस तूफ़ान से दिन का विमल वायुमंडल लाल और नीली कायाओं से व्याप्त हो उठा।

'स्वतंत्रता या मृत्यु !'

जेल की गारद ने उस स्थान पर खड़े होकर जहाँ कि पाँचों गैलरियाँ मिलती थीं अपनी माउज़र राईफ़लें उठाईं। उनकी चटखनियों के खुलने और बंद होने की खड़खड़ाहट सुन पड़ी।

'स्वतंत्रता या मृत्यु !'

इन क्रांतिकारी नादों को सुनकर सामर का हृदय हर्ष से निकला पड़ रहा था।

'स्वतंत्रता या मृत्यु !'

और अध्यात्म दर्शन के अनुसार तथा प्रत्यक्ष रूप से भी, मृत्यु ही एक मात्र संभाव्य मुक्ति है।